आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2012 ★ श्रावण, 2069

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

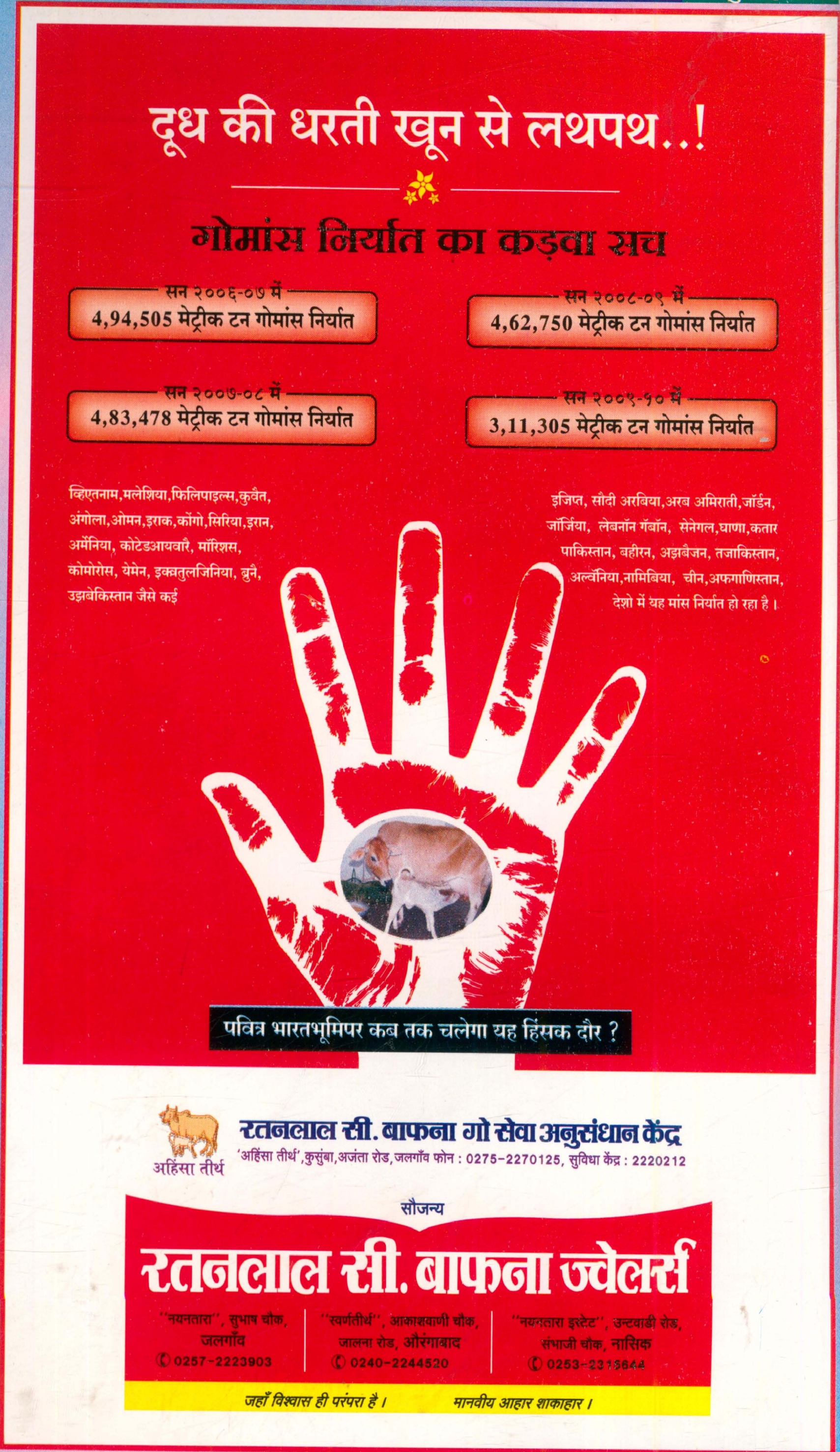
दूध की धरती खून से लथपथ..!
गोमांस निर्यात का कड़वा सच
सन २००६-०७ में
4,94,505 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात
सन २००८-०९ में
4,62,750 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात
सन २००७-०८ में
4,83,478 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात
सन २००९-१० में
3,11,305 मेट्रीक टन गोमांस निर्यात
व्हिएतनाम, मलेशिया, फिलिपाइल्स, कुवैत, अंगोला, ओमन, इराक, कोंगो, सिरिया, इरान, अर्मेनिया, कोटेडआयवारै, मॉरिशस, कोमोरोस, येमेन, इक्वतुलजिनिया, ब्रुनै, उझबेकिस्तान जैसे कई
इजिप्त, सौदी अरबिया, अरब अमिराती, जॉर्डन, जॉर्जिया, लेबनॉन गॅबॉन, सेनेगल, घाणा, कतार पाकिस्तान, बहीरन, अझबैजन, तजाकिस्तान, अल्वेनिया, नामिबिया, चीन, अफगाणिस्तान, देशो में यह मांस निर्यात हो रहा है।
पवित्र भारतभूमिपर कब तक चलेगा यह हिंसक दौर ?
अहिंसा तीर्थ
रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र
'अहिंसा तीर्थ', कुसुंबा, अजंता रोड, जलगाँव फोन : 0275-2270125, सुविधा केंद्र : 2220212
सौजन्य
रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
''नयनतारा'', सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903
''स्वर्णतीर्थ'', आकाशवाणी चौक, जालना रोड, औरंगाबाद 0240-2244520
''नयनतारा इस्टेट'', उन्टवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644
जहाँ विश्वास ही परंपरा है।
मानवीय आहार शाकाहार।

जिनवाणी *हिन्दी-मासिक*

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

माया पिया ण्हुसा भाया,
भज्जा पुत्ता य ओरसा।
नालं ते मम ताणाय,
लुप्पन्तस्स सकम्मुणा।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.3

माता-पिता, स्नुषा, भाई,
पत्नी और पुत्र नहीं अपना।
निज कर्मोदय से पीड़ित जन के,
ये त्राण न, साथी है सपना।।

जुलाई, 2012
वीर निर्वाण संवत्, 2538
श्रावण, 2069

वर्ष 69 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 500 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	प्रयोगधर्मिता	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
	वाग्वैभव(5)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
प्रवचन-	संसार की समझें असारता	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	12
दीक्षा-अर्द्धशती-	सरलता, साधना एवं संयम की त्रिवेणी (3)	-श्री सम्पतराज चौधरी	16
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Non-Absolutism : The Philosophical Basis of Tolerance	*-Prof. Sagarmal Jain*	22
शोधालेख-	स्थानांग में वर्णित दस धर्म और कर्त्तव्यपालन	-डॉ. दिलीप धींग	28
अध्यात्म-	मोह त्यागें : प्रेम करें	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	33
	आत्मानुसधान	-श्री जितेन्द्र कुमार चोरडिया	46
प्रासङ्गिक-	मैत्री एवं क्षमा का पर्व : संवत्सरी	-श्री दुलीचन्द जैन	36
तत्त्वबोध-	जिज्ञासा-समाधान	-संकलित	41
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(16)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	48
युवा-स्तम्भ-	श्रावकाचार में विद्यमान विकृतियाँ	-श्री पारसमल चण्डालिया	53
नारी-स्तम्भ-	ढोंगी एवं पाखंडी बाबाओं से रहें सजग	-श्री राजेन्द्र पितलीया	64
बाल-स्तम्भ -	धार्मिक शिविर का महत्त्व	-श्री मनन डांगी	67
प्रेरक-प्रसंग-	युवामन को सीख	-श्री जसराज देवड़ा	27
	नसीहत गिलहरी से	-श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया	62
विचार-	सत्संगति का महत्त्व	-सौ. कमला सिंघवी	47
	भारतीय जैन संघटना : समाज-हित के प्रयास	-श्री निर्मल सिंघवी	74
	धर्म और प्रेम	-श्री अरविन्द लोढ़ा	80
कविता/गीत-	क्रोध को तज दे रे मनवा	-श्री मगनचन्द जैन	63
	रे मन!	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	65
	ओ वीतराग भगवंत!	-श्री जशकरण डागा	66
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (28)	-संकलित	71
युवक-परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक प्रतियोगिता (28) का परिणाम	-श्री नमन मेहता	75
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	78
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		81
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		115

सम्पादकीय

प्रयोगधर्मिता

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

जीवन के विविध क्षेत्रों में विकास का एक उपाय है- प्रयोगधर्मिता। विज्ञान का समस्त विकास प्रयोगों के आधार पर सम्पन्न हुआ है। यह प्रयोगधर्मिता आज भी विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर जारी है। साहित्य के क्षेत्र में भी नई-नई विधाओं का आविष्कार प्रयोगधर्मिता के कारण सम्भव हुआ है। प्राचीन साहित्य जहाँ गद्य कथा और पद्य काव्य में सिमटा हुआ था, वहाँ प्रयोगधर्मिता के आधार पर इसका विकास उपन्यास, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी, रास, फागु, रिपोर्ताज, मुक्तक, छंदोमुक्त कविता, हाइकू आदि विधाओं में हुआ है। प्रयोग के आधार पर एक नई विधा की सम्भावना सदैव बनी रहती है। रसोईघर में गृहिणी प्रयोगधर्मिता के द्वारा नये-नये व्यंजनों का निर्माण करती है। महात्मा गांधी, विनोबा भावे आदि ने जीवन में सत्य के प्रयोग करके अपने जीवन को उन्नत बनाया।

भौतिक क्षेत्र में जिस प्रकार प्रयोगों के आधार पर विकास परिलक्षित होता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक जीवन में भी प्रयोगों के आधार पर विकास सम्भव है। जिस व्यक्ति को जो सद्ज्ञान प्राप्त है उसका पुरुषार्थ के द्वारा जीवन में उपयोग ही आध्यात्मिक प्रयोग का स्वरूप ग्रहण करता है। मनुष्य आत्म-विकास के मार्ग पर तभी आगे बढ़ सकता है जब वह प्रयोगधर्मी बने। भगवान् महावीर हो या अन्य कोई महापुरुष सबने सत्य के मार्ग का अन्वेषण कर उस पर स्वयं कदम बढ़ाये हैं। प्रयोगधर्मिता का एक लक्ष्य होना चाहिए। प्रयोग रचनात्मक, सकारात्मक, जीवन-निर्माणकारी दृष्टि से युक्त होना चाहिए। विध्वंसात्मक दृष्टि वाला व्यक्ति भी प्रयोग करता है तथा रचनाधर्मिता वाला व्यक्ति भी प्रयोग करता है, किन्तु दोनों की दृष्टि में भेद होने से परिणाम भिन्न-भिन्न आते हैं। इसलिए दृष्टि का प्रयोग में बड़ा महत्व है।

महात्मा गांधी ने अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अचौर्य आदि का अपने जीवन में प्रयोग करके देखा, उनके प्रभाव को जाना, अपनी कमियों को पहचाना, पुनः अपनी कमियों को दूरकर इन व्रतों को प्रामाणिकता के साथ अपनाया। उनकी पुस्तक "My Experiments With The Truth" इसकी साक्षी है। भगवान् महावीर ने अनार्य क्षेत्र में जाकर अपनी क्षमता और अपने अहिंसक स्वभाव का परीक्षण किया। राजप्रासाद की सुविधा का त्याग कर अपरिग्रही जीवन में शांति एवं सत्य की प्राप्ति के लिए प्रयोग किए।

जो व्यक्ति ढर्रे पर चलता रहता है वह कुछ नया नहीं कर पाता। नया करने के लिए सदैव सजग होकर प्रयोग करने होते हैं। साधक भी अपने जीवन में निरन्तर विभिन्न प्रयोग करता है। कभी विगय रहित आहार कर, कभी नमक रहित आहार कर, कभी मीठे का त्याग कर,

कभी उपभोग योग्य द्रव्यों की मर्यादा कर, कभी संवर की आराधना कर, कभी उपवास एवं पौषध व्रत की आराधना कर तथा कभी मौन व्रत धारण कर जीवन में साधक के द्वारा प्रयोग किए जाते हैं। प्रयोग के साथ लक्ष्य की प्राप्ति जुड़ी होती है। इन विविध प्रयोगों का कोई जीवन में सुफल होता है या नहीं, साधक को इसे सावधान होकर देखते रहना चाहिए। यदि इनका फल अनुभव में नहीं आता है तो अपने में रही हुई कमियों को ढूंढना चाहिए और फिर उन कमियों के निवारण के लिए सन्नद्ध होना चाहिए। जीवन में संयम का प्रयोग, सहिष्णुता का प्रयोग, उदारता का प्रयोग, क्षमा का प्रयोग कितना रंग लाता है एवं शांति का अनुभव कराता है, यह प्रयोग करने पर ही विदित हो सकता है।

प्रयोगधर्मिता रूढ़िवाद की विरोधी है। रूढ़िवाद जड़ता का सूचक होता है। रूढ़ि का पालन क्यों किया जा रहा है, उसकी कारणता का रूढ़िवादी को बोध नहीं होता। कोई प्रयोग रूढ़ि न बने, इसकी सजगता आवश्यक है। अध्यात्म में प्रगति रूढ़िवाद के आधार पर सम्भव नहीं। हाँ, यह अवश्य है कि रूढ़िवाद के कारण मनुष्य कुपथ पर जाने से बचा रहता है, लेकिन उससे प्रगति का पथ प्रशस्त नहीं होता। अध्यात्म का क्षेत्र निराला क्षेत्र है। इसमें अपना पुरुषार्थ स्वयं को करना पड़ता है। अतीत काल में हुए तीर्थंकरों अथवा ज्ञानियों के वचन मार्गदर्शन अवश्य करते हैं, किन्तु उनको यथावत् समझने के लिए वैसी भूमिका बनाना आवश्यक है। प्रायः जो जितना जानता है वह शब्दों का उतना ही अर्थ ग्रहण कर पाता है। उन शब्दों की गहराई का अनुभव अपनी भूमिका के अनुरूप होता है। उदाहरण के लिए किसी को कहा जाए कि सत्य का आचरण करो तो कोई व्यक्ति यह सुनकर इतना ही अर्थ ग्रहण करेगा कि उसे सत्य बोलना चाहिए। किन्तु जो अनुभवी साधक है वह सत्य के आचरण का अर्थ समझेगा कि जीवन की जो सच्चाई है उसे स्वीकार कर उसका जीवन में प्रयोग करना चाहिए। यह सत्य है कि जो पुद्गल का संयोग है वह विनाशी है, यह सत्य है कि जो इन्द्रिय-जनित सुख है वह अत्यन्त स्थूल एवं नश्वर है, यह सत्य है कि अहंकार मनुष्य के सद्गुणों के विकास में बाधक है, यह सत्य है कि दूसरों के दोषों को देखकर आनन्दित होने से अपने दोष दूर नहीं होते, यह भी सच है कि अधिकार-लालसा स्व-पर का हित नहीं कर सकती- इस प्रकार सत्य के विविध रूप हैं। इन विविध रूपों का जीवन में आचरण करना सत्य का आचरण है। सत्य बोलना भी इसी आचरण का एक पक्ष है, किन्तु सत्य बोलते समय अनवद्य एवं हितकारी सत्य ही बोलना चाहिए।

विभाव से स्वभाव में आना भी एक प्रयोग है। यह प्रयोग करके देखने पर ही उसकी लाभ-हानि का परिचय हो सकता है। क्रोध के क्षणों में क्रोध को छोड़ना, मान के क्षणों में विनय का व्यवहार करना, लोभ के क्षणों में संतोष को अपनाना, छल-कपट के क्षणों में सरलता का

महत्त्व जानना- यह सब प्रयोगधर्मी साधक के लिए सम्भव होता है। हम व्यापार में, उद्योग में निरन्तर प्रयोग करते रहते हैं। पुराने तरीकों को छोड़कर नई विधियाँ अपनाते हैं। पुरानी मशीनों को हटाकर नई मशीनें लगवाते हैं। उसमें जो खतरा होता है, उससे भी हम परिचित होते हैं, किन्तु व्यापार या उद्योग में प्रगति का आधार नया प्रयोग होता है। प्रबंधन का क्षेत्र हो या तकनीकी का, चिकित्सा-विज्ञान का क्षेत्र हो या अंतरिक्ष-विज्ञान का, अध्ययन का क्षेत्र हो या अध्यापन का, रोजमर्रा का कार्य हो या प्रासंगिक कार्यक्रमों का, सर्वत्र नये प्रयोग किए जा रहे हैं। उनसे मानव को सुविधा का, समय-बचत का लाभ तो होता ही है, अन्य भी अनेक प्रकार के लाभ होते हैं।

इसी प्रकार कोई व्यक्ति प्रतिदिन दो घंटे मौन साधना का प्रयोग करता है तो निश्चित रूप से उसे उसका लाभ होता ही है। इससे शारीरिक ऊर्जा का संरक्षण तो होता ही है, मानसिक शक्ति का भी विकास होता है तथा कलह, क्रोध आदि के प्रसंग टल जाते हैं। नये रचनात्मक विचारों का सर्जन होता है, शांति का अनुभव होता है। बिना विघ्न के स्वाध्याय, ध्यान आदि की साधना सम्भव बनती है। मौन को भी कितनी व्यापकता से ग्रहण किया जाता है, उसका परिणाम उतना ही व्यापक आता है। कुछ मौन-साधक मौन में यदि व्यर्थ की बातें सुनते रहते हैं, संकेतों से अपनी इच्छाओं को व्यक्त करते रहते हैं तो उनका मौन उतना फलदायी नहीं होता। किन्तु जो साधक मौनव्रत के साथ समस्त इन्द्रियों पर संयम रखते हुए मन का भी मौन साधता है, अर्थात् मन को अशुद्ध संकल्प-विकल्प से रहित बनाता है उसे अधिक लाभ होता है।

जिन मनुष्यों को सम्यग्दृष्टि प्राप्त है, जो विवेक के धनी हैं, वे व्यक्ति प्रयोगधर्मी होते हैं। रूढ़ि में ही धर्म समझने वाले लोग रूढ़ि को छोड़ने में भय एवं आशंका का अनुभव करते हैं। अतः वे रूढ़ि का पालन करते हुए धार्मिक तो कहलाते हैं, किन्तु अपने जीवन में विशेष परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाते हैं। जीवन में परिवर्तन प्रयोगधर्मिता के आधार पर सम्भव है। प्रयोगधर्मिता एक प्रकार से पुरुषार्थ का ही दूसरा शब्द है। किन्तु प्रयोगधर्मिता में एक विशेषता होती है, वह यह कि यह परिणामाभिमुखी होती है। जो प्रयोग करके देखा उसका क्या परिणाम आता है, उसे जानकर अन्य प्रयोगों को अपनाया जाता है। अपने विकारों को तोड़ने के लिये भी भांति-भांति के प्रयोग कारगर सिद्ध हो सकते हैं। जब-जब भी विकार उठें तो उनका बोध मनुष्य को होना चाहिए। तभी उनके निराकरण का उपाय अपनाया जा सकता है।

कई लोग धार्मिक क्रियाओं से घबराते हैं, उन्हें उनका कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता। ऐसे लोग या तो बुद्धिवादी होते हैं या फिर सुखभोगवादी। आस्थावादी लोग धर्मक्रिया तो करते हैं, किन्तु वे परिणामदायी प्रगति के प्रति उतने सावधान नहीं होते। जो सावधान होते हैं

उनकी धर्मक्रिया साधना कही जाती है, क्रियाकाण्ड नहीं। किन्तु जो प्रदर्शन या दिखावे के लिए धर्मक्रिया करते हैं, वह कर्मकाण्ड तो हो सकता है, किन्तु साधना नहीं। साधना वह है जो साध्य की सिद्धि में सहायक हो। आध्यात्मिक क्षेत्र में सत्य का अन्वेषण कर सत्य का आचरण करते हुए विकारों पर विजय पायी जाती है। सत्य का अन्वेषण व्यक्ति को स्वयं करना होता है। इसलिए आचारांग सूत्र में कहा गया है-'अप्पणा सच्चमेसेज्जा', 'सच्चम्मि धितिं कुव्वहा' 'परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा'। सत्य में बुद्धि लगाने की आवश्यकता है और सत्य को समझने की आवश्यकता है। अपने स्वरूप को समझना ही सत्य को समझना है। इसमें भी प्रयोग का उपयोग होता है तथा सत्य के आचरण में भी प्रयोग अपेक्षित होता है।

मूल्यपरक संस्कारों का निर्माण बाल्यकाल में उपदेश या आदेश के द्वारा होता है, किन्तु बाद में समझाइश और प्रयोगधर्मिता के द्वारा संस्कारों को दृढ़ बनाया जा सकता है। भावी पीढ़ी उसी बात को स्वीकार करने वाली है जो बुद्धि, तर्क एवं प्रयोग के आधार पर खरी उतर सकती हो। इसलिए जीवन-निर्माणकारी शिक्षाओं को अनुभूत प्रयोगों के आधार पर समझाया जाए। कहानियाँ भी इसमें सहायक होती हैं, किन्तु जीवन में जब स्वयं उन शिक्षाओं का प्रयोग करने का उपक्रम करेंगे तो जीवन को जो दिशा मिलेगी उससे व्यक्ति की दशा स्वयं सुधर जाएगी। सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी निरन्तर प्रयोगों की आवश्यकता रहती है। समाज में जो परिवर्तन होता है उसमें वैज्ञानिक प्रयोग, सरकारी आदेश, संतों के उपदेश, व्यक्ति की दृष्टि आदि अनेक कारण हैं, प्रयोगधर्मिता भी एक कारण है।

सत्प्रवृत्ति प्रयोगधर्मिता की सूचक है। प्रयोगधर्मिता में चेतना का संचरण रहता है। कोई सत्प्रवृत्ति तब रूढ़ि बन जाती है जब उसमें रही हुई चेतना विलुप्त हो जाती है। जैन धर्म प्रयोगवादी धर्म है। इसमें धार्मिक सिद्धान्तों का जीवन में प्रयोग करके देखा जाता है। साधु-संत हमें इनके आचरण का नियम भी इसीलिए दिलाते हैं कि हम प्रयोग करके उनकी महत्ता को जानें एवं अपने जीवन को संवारें। किन्तु नियमों में बंधकर कम ही व्यक्ति चलने को तत्पर होते हैं। वे धर्म-सिद्धान्तों का ईमानदारी से प्रयोग करने के लिए मन से तैयार नहीं होते, पहले जो इन्द्रिय-जनित सुख के संस्कार रहते हैं वे प्यारे लगते हैं। इसलिए व्यक्ति उनमें बाधक प्रयोगों को करने से कतराता है एवं उन लोगों को नहीं देख पाता जो सच में धर्मतत्त्वों को जीवन में अपनाकर शांति, सहिष्णुता, मैत्री, मुदिता आदि के मार्ग पर बढ़ते रहते हैं। उसकी दृष्टि उन व्यक्तियों पर जाती है जो धार्मिक क्रियाओं को आत्मिक फलदायी दृष्टि से नहीं करते। उन्हें देखकर वे धर्म की एवं धार्मिकों की निन्दा करते हैं, किन्तु वास्तव में तो उन्हें अपनी दृष्टि को सुधारने की आवश्यकता है। दृष्टि सुधरेगी तो फिर वह दोषों की ओर नहीं, गुणों की ओर जाएगी। इस प्रकार प्रयोगधर्मिता जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की भांति आत्म-विकास में भी सहायक है।

★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

साधुवेशधारी असाधु

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं, सम्मं नो फासयइ पमाया।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिंदइ बंधणं से।।
आउत्तया जस्स न अत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाण-निक्खेव-दुगुंछणाए, न वीर-जायं अणुजाइ मग्गं।।
चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनियमेहिं भट्ठे।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होइ हु संपराए।।
पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे, अयंतिए कूडकहावणे वा।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु।।
कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय-वूहइत्ता।
असंजए संजय-लप्पमाणे, विणिग्घायमागच्छइ से चिरं पि।।

अर्थ-

जो प्रव्रजित होकर प्रमादवश महाव्रतों का सम्यक् पालन नहीं करता तथा जो इन्द्रियनिग्रह से रहित है, और रसों में आसक्त है, वह (रागद्वेषजन्य कर्म) बन्धन का मूल से छेदन नहीं कर पाता।

ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेप और उत्सर्ग में जिसकी किंचित् मात्र भी आयुक्तता (सजगता) नहीं है, वह उस मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकता, जिस पर वीर-पुरुष चले हैं।

जो साधक व्रतों में अस्थिर है, तप और नियमों में भ्रष्ट है, वह चिरकालपर्यन्त मुण्डरुचि रहकर और दीर्घकाल तक आत्मा को क्लेश देकर भी संसार (जन्ममरण) से पार नहीं हो सकता।

जैसे पोली मुट्ठी असार होती है, अथवा खोटा सिक्का अनियंत्रित अप्रमाणित होता है, कांच की मणि वैडूर्यमणि की तरह चमकती है, किन्तु विज्ञपुरुषों की दृष्टि में इनका कुछ भी मूल्य नहीं है, (वैसे ही बाह्यलिंग में मुनियों की भांति प्रतीत होने पर भी विज्ञपुरुषों के समक्ष उस द्रव्यलिंगी का कुछ भी मूल्य नहीं है।)

आचार भ्रष्टों की तरह वेष धारण करके, ऋषिध्वज (रजोहरणादि मुनिचिह्न) से अपनी जीविकावृद्धि करके और असंयमी होते हुए भी स्वयं को जो संयमी कहता है, वह चिरकाल तक (जन्म-मरण रूप) विनाश को प्राप्त करता है।

-उत्तराध्ययन सूत्र, बीसवाँ अध्ययन, महानिर्ग्रन्थीय, गाथा-39-43

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

धन और धर्म

- लोग गरीबी, बीमारी या संकटकाल में धर्म और भगवान का जितना आदर करते हैं, सुख-समृद्धि के दिनों में वैसा नहीं करते।
- लोग कहते हैं- धन होगा तो धर्म आराम से (सोरा) करेंगे, किन्तु ऐसा नियत नहीं है। एक भक्त के हाथ में बाबाजी ने 1 अंक लिख दिया। भक्त अनायास रुपया कमाने लगा। बाबाजी ने एक बार एक के बाद बिन्दी लगा दी तो 10 रुपये की और 2 बिन्दी लगाने पर प्रतिदिन 100 रुपये की आय होने लगी। भक्त की त्रिकाल साधना ढीली हो गई। बाबाजी ने तीन बिन्दी और बढ़ाकर एक पर पाँच बिन्दी कर दी। दैनिक आय एक लाख की हो गई। भक्त जी का आना बन्द हो गया। खाना एवं सोना भी मुश्किल हो गया। एक दिन बाबाजी पहुँचे और बोले-"भक्त! मेरे पास आओ तो मैं तुम्हारी सारी परेशानी दूर कर दूँगा।" उन्होंने पीछे का एक का अंक मिटा दिया। भक्त जहाँ थे, वहीं आ गए।
- आप लोग धन की पूजा करते हैं, परन्तु धन सदा मानव के मन में एक प्रकार की चंचलता पैदा करता है। प्रायः धन से प्रभावित मानव त्याग, तप और वैराग्य की ओर नहीं बढ़ता। इसके विपरीत इनकी ओर से मन को खींचता है। जब तक आपके पास अल्प परिमाण में द्रव्य हैं, तब तक आप समझते होंगे कि अभी और धन का संग्रह करना चाहिए, क्योंकि धन के बिना धर्म नहीं होता, पर आप अन्ततोगत्वा अनुभव करके देखेंगे कि परिग्रह में वस्तुतः दूसरी ही दशा होती है। मुश्किल से ही कोई ऐसा परिवार मिलेगा, जिसमें धन के प्रति आसक्ति नहीं हो। क्या भरत चक्रवर्ती जैसा अनासक्त परिवार आज कहीं एक भी मिल सकता है?
- लक्ष्मी के लिए लोग लालायित रहते हैं। उसे प्राप्त करने के लिए उसकी पूजा करते हैं, किन्तु सन्तों ने कहा कि लक्ष्मी की, धन की पूजा करते हुए भी लक्ष्मी आपको छोड़ सकती है। ऐसे सेठ और जमींदार बहुत से हैं, जिन्होंने प्रतिवर्ष ब्राह्मणों को बुलाकर घंटों तक लक्ष्मी की पूजा करवाई, फिर भी उन सेठों की सेठाई (सम्पत्ति) और जमींदारों की जमींदारी चली गई। दूसरी ओर अमेरिका, रूस और पश्चिमी देशों के निवासी तथा हिन्दुस्तान के भी हजारों-लाखों लोग ऐसे हैं, जो लक्ष्मी को पूजते नहीं, फिर भी उन लोगों के पास पैसा है-और लक्ष्मी पूजन करने वाले लक्ष्मी की पूजा करते-करते भी लक्ष्मी से वंचित हैं। ये दोनों प्रकार के प्रत्यक्ष दृष्टान्त बताते हैं कि वास्तव में आदमी की समझ की यह भ्रान्ति है कि इस प्रकार लक्ष्मी की पूजा करेंगे, तभी लक्ष्मी रहेगी।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (5)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

रात्रि-भोजन निषेध

- आहार करने का काल रात में नहीं, दिन में होता है।
- खाने व सोने के बीच तीन-चार घण्टे का अन्तराल स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।
- रात में भोजन करने से व्रतों का पालन ठीक तरह से नहीं हो सकता।
- रात को भोजन न करने वाले का मनोबल एवं आत्मबल बढ़ता है। साथ ही पैसे की बचत और आरोग्य लाभ होता है।
- महाभारत के शान्तिपर्व में रात्रिभोजन को नरक का द्वार बताया है।
- पूज्य रत्नप्रभसूरि ने ओसवालों को तीन प्रतिज्ञाएँ करवाई- मद्य-मांस का त्याग, नवकार मंत्र पर श्रद्धा और रात्रिभोजन निषेध।
- रात में नहीं खाना जैनों की विशेष पहचान है।
- आचार्य रत्नचन्द्रजी ने कहा था कि रात्रि के अंधकार में भोजन करने का काम अधर्मी जीव करते हैं।
- आचार्य माधवमुनि ने रात में खाने वाले को निशाचर बतलाया।
- जो रात में नहीं खाते उनके जीवन का आधा भाग एक प्रकार से तप में गुजरता है।
- एक वर्ष रात्रि-भोजन त्याग यानी छह मास की तपस्या।
- नवकारसी से लगाकर मासखमण आदि तक जितने भी प्रत्याख्यान हैं, उनका शुभारंभ रात्रि-भोजन त्याग से होता है।
- नवकारसी तप उसी का है, जो रात्रि-भोजन त्यागी है।
- शास्त्रों में नवकारसी तप को भी नरक के बंधन तोड़ने वाला बताया है।
- रात्रि-भोजन से अनन्त जीवों की विराधना होती है।
- दिन में सूर्य की धूप से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों के कारण सूक्ष्म जीव उत्पन्न होकर संचरण नहीं कर पाते हैं।
- दिन में पाचन-क्रिया जितनी आसान होती है, उतनी अंधकार में नहीं।

-हीरा प्रवचन-पीयूष भाग-1 से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

संसार की समझें असारता

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा द्वारा नागौर चातुर्मास में फरमाए गए प्रवचन का संकलन एवं सम्पादन श्री सम्पतराज जी चौधरी, दिल्ली ने किया है। **-सम्पादक**

धर्मानुरागी बन्धुओं!

इस संसार में व्यक्ति जब भी कोई कार्य करता है तो पहले नफा-नुकसान की बात सोचता है। जिसमें उसे नफा दिखता है, वह उसी काम को करता है। व्यापार उन्हीं वस्तुओं का करता है जिसमें उसे नफा दिखता है, क्योंकि यह उसकी जीविका का प्रश्न है। किसी स्कूल में अपने बच्चे को प्रवेश दिलाना हो तो पहले उस स्कूल की प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता के बारे में पता लगायेगा, क्योंकि यह बच्चे के भविष्य के कैरियर का प्रश्न है। कोई वस्तु खरीदनी होगी तो पाँच-सात दुकानें घूम कर उसकी कीमत और क्वालिटी के बारे में मालूम करेगा, क्योंकि यह उसकी गाढी कमाई के पैसे के खर्च का प्रश्न है। बीमार होने पर किसी वैद्य या डॉक्टर के बारे में पूरी तसल्ली करके उससे उपचार करायेगा, क्योंकि यह उसके स्वास्थ्य का प्रश्न है। आप देखेंगे कि जीवन के हर व्यवहार में व्यक्ति की यही दृष्टि रहती है। परन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात है कि जिस संसार में वह अपने अरमानों के सपने संजोता है, सुख प्राप्ति के लिये निरन्तर भागदौड़ करता है, क्या उसने उस संसार का सही परिचय प्राप्त किया है? क्या उसके स्वरूप को समझने का प्रयास किया है?

संसार में जन्म के साथ मरण, यौवन के साथ बुढ़ापा और लक्ष्मी के साथ विनाश निरन्तर लगा हुआ है। इस तरह संसार में प्रत्येक वस्तु नश्वर है, फिर भी व्यक्ति उसी में सुख को ढूंढ रहा है। ऐसे संसार को सही रूप में जाने बिना उसमें सुख ढूंढना मानो अंधेरे में ऐसी वस्तु को ढूंढना है जो वहाँ है ही नहीं। व्यक्ति संसार में अपनी यात्रा तो सुख प्राप्त करने के लिए करता है, परन्तु सुख उसे मिलते नहीं और शीघ्र ही दुःखों की शाम उसे आकर घेर लेती है। जिस तरह मरुस्थल में भटके हुए को धूप से बचने के लिए तरुवर नहीं मिलता, प्यास बुझाने के लिये कोई निर्झर नहीं मिलता, उसी तरह से व्यक्ति सुख पाने के लिये भटकता रहता है, पर सुख उसे मिलता नहीं है। वह संसार के भोग भोगकर सुख पाना चाहता है, पर उसे नहीं मालूम कि वे भोग ही उसे भोग रहे हैं। संसार में तप कर वह सुख पाना चाहता है, पर उसे नहीं मालूम कि वह स्वयं ही तप्त हो रहा है। संसार में सुख से समय

व्यतीत करने के प्रयास में वह नहीं जानता कि वह स्वयं ही व्यतीत हो रहा है। रात-दिन अपनी इच्छाओं की पूर्ति में रत वह नहीं जानता कि उसकी तृष्णा जीर्ण नहीं हो रही है वरन् वह स्वयं ही जीर्ण हो रहा है। वह अमरत्व का सुख पाना चाहता है, परन्तु भार मरण का ही ढो रहा है। सुख प्राप्त करने के चक्कर में किसी की नाव संसार सागर के भंवर में नाच रही है, तो किसी की तट से ही बंधी हुई है, तो अधिकतर लोग छिद्रों वाली नाव से ही संसार सागर पार करने में लगे हुए हैं। जैसे सोकर नींद को जीतने का प्रयास व्यर्थ है, ईंधन से आग बुझाने का प्रयत्न व्यर्थ है और मद्य पीकर मद्य के दुर्व्यसन से छुटकारा पाना व्यर्थ है, उसी प्रकार संसार को भोग कर सुख पाने की आशा भी व्यर्थ है।

इसी तरह बन्धुओं! संसार का सही स्वरूप नहीं जानने के कारण वह सुख तो ढूंढता है, पर वह उसे मिलता नहीं। वह जैसे रोते हुए जन्म लेता है वैसे ही रोते हुए जिन्दगी बिताता है और रोते हुए ही मर जाता है। उसके जीवन में प्रसन्नता नहीं टिकती है। चेहरे पर मुस्कान भी होती है तो अधिकतर वह भी दिखावटी, सजावटी, बनावटी या मिलावटी होती है। लगता है कि मुस्कराना भी उसकी मजबूरी है। आंतरिक प्रसन्नता तो होती नहीं, अतः उसे अपने अहं के पोषण में प्रसन्न दिखना होता है। इसलिए ज्ञानी कहते हैं कि यह संसार असार है। पर क्या संसार में दुःख है, इसलिए असार है? नहीं, संसार का सुख भी असार है। क्या संसार में वियोग है, इसलिए असार है? नहीं, संसार का संयोग भी असार है। क्या संसार में मरण है, इसलिए असार है? नहीं संसार में जन्म भी असार है।

उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान् महावीर ने कहा है-

अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपउराए
किं णाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाहं दुग्गइं न गच्छेज्जा?

अर्थात् यह संसार अध्रुव है, अशाश्वत है और दुःखों से परिपूर्ण है। एक संत ने संसार का स्वरूप बताते हुए कहा कि जिसके पीछे दौड़ते रहो और वह हाथ नहीं आये, वही संसार है। हम अपने अन्तर में झाँकेंगे तो पायेंगे कि हमारे जीवन की भी यही विडम्बना है। जरा देखें तो सही कि हमने इस असार संसार में आज तक क्या पाया है? भले ही बाह्य उपलब्धियों पर खुश होकर नाचें, अहंकार में फूले न समाएँ, पर ये सभी उपलब्धियाँ निष्ठुरता, निर्दयता, निराशा आदि विकारों को आँचल में छिपाकर साथ लाती है। इन्हीं विकारों में फंसकर अपने दुःखों को भूलने के लिए व्यक्ति कई तरह के व्यसनों का शिकार हो जाता है। मानसिक रूप से विक्षिप्त होकर मनोचिकित्सक से इलाज करवाता है तो कभी-कभी पागलखाने की सैर भी कर लेता है। अधिक क्या कहूँ, कभी-कभी गहन निराशा में डूबकर आत्महत्या भी कर लेता है। आप ये सब प्रत्यक्ष देखते ही हैं। इसलिए तो

ज्ञानी बार-बार चेताते हैं कि यदि-"असार संसार में लगता है सार, तो चौरासी फिर एक बार।" आप भी इसी संदेश को सुनकर बोलें। (सभा में सभी ने समवेत स्वर में कहा- "असार संसार में लगता है सार, तो चौरासी फिर एक बार।")

बन्धुओं! यदि इस संसार में सार होता तो भगवान् महावीर ने जिनके हम अनुयायी हैं और जिनको हमने अपने मन-मंदिर में बड़ी श्रद्धा से प्रतिष्ठित किया है, समस्त राजसी वैभव को छोड़कर संन्यास क्यों ले लिया? क्योंकि उन्होंने संसार को जान लिया था और इसमें आने वाले दुःखों के कारणों को भी जान लिया था। आगम वचन है कि **"समुप्पायमजाणंता, कहं नायंति संवरं?"** अर्थात् जो दुःखोत्पत्ति के कारणों को ही नहीं जानेंगे, वे उनके निरोध के कारण कैसे जान पायेंगे? जीव-अजीव को सम्यक् रूपेण जानकर, जीव के दुःखों के कारणों को जानना ही संसार को जानना है। दुःख के कारणों को जानेंगे तो हम पायेंगे कि सुख पाने की इच्छा कभी फलीभूत नहीं हो सकती, जब तक कि हम संसार में सुख ढूंढने की इच्छाओं को शान्त नहीं कर लेंगे। असल में तो संसार में सुख ढूंढने की इच्छा का अर्थ ही है- दुःखों को आमन्त्रण देना।

क्षणिक सुख के लिये हम संसार के विषयों का सेवन करते हैं, उनके राग-द्वेष में बंधते हैं और संसार में ही बंधकर रह जाते हैं। हो सकता है पूर्वजन्मों के सुकृत्यों से इस भव में कुछ अनुकूलताएँ मिलें, पर ये अनुकूलताएँ पापकर्मों का सेवन करने के लिये नहीं होती हैं। अनुकूलताओं में पापों का सेवन करेंगे तो पुण्य क्षीण हो जायेंगे। जमा पूंजी समाप्त हो गई और नई पूंजी का अर्जन नहीं किया तो क्या होगा? दिवालिये हो जायेंगे। अतः प्राप्त सुखों को ऐसे भोगो कि वे भावी सुखों को हानि नहीं पहुँचाएं। भगवान् की वाणी का सार है- जो तुम्हारा नहीं है उसे पाने में जीवन नष्ट मत करो और जो तुम्हारा है उसे खोने का दुस्साहस मत करो। संसार और संसार के सुख तुम्हारे नहीं हैं। आत्मा ही तुम्हारी है, परन्तु संसार के संसर्ग से वह कर्मों के आवरण में बन्धी हुई बहिरात्मा हो गई है। उस कर्म रहित आत्मा को पाने का प्रयास करो। उसे यदि प्राप्त कर लिया तो फिर संसार से परे हो गये और संसार के दुःखों से भी परे हो गये। जैसे अंधेरे का मिटना ही उजाले का होना होता है, वैसे ही दुःखों का अभाव ही सुखों का उजाला है, ऐसा उजाला जो कभी मिटने वाला नहीं।

भगवान् ने कहा है-**"जावंतऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा"** अर्थात् बोधहीन व्यक्ति सभी दुःख के पात्र है। जो अज्ञानी हैं वह पाप और पुण्य कैसे जानेगा? यदि पाप और पुण्य को नहीं जाना, तो अपने हित-अहित कैसे जानेगा। जानेगा ही नहीं तो हित के लिये आचरण कैसे करेगा? सर्वज्ञ की वाणी हमें बोध प्रदान करती है और जीवन को सफल बनाने की कला सिखाती है।

बन्धुओं! कहीं ऐसा न हो कि संसार के सत्य स्वरूप को समझे बिना ही हम इस दुनिया से विदा होकर अपना भविष्य दुःखद बना लें। अतः इसे समझने के लिये हमें समय निकालना ही होगा, क्योंकि संसार के काम तो न कभी पूरे हुए हैं, न होते हैं और न ही होंगे। आप तो गणित के अच्छे जानकार हैं। मैं आपसे पूछूँ कि सौ में से निन्यानवे गये तो बाकी कितने बचे? आप तुरन्त कहेंगे कि-एक। पर मैं कहता हूँ कि सौ में से निन्यानवे गये तो बाकी बचे-सौ। मेरी बात पर आपको आश्चर्य होगा कि ये कैसी गणित है? पर मेरी बात पर आप गम्भीरता से सोचें। व्यक्ति अपनी दिनचर्या में सौ कामों की सूची बनाकर चलता है। उसमें से उसने दिनभर में निन्यानवे काम कर लिये। पीछे कितने काम रहे, तो आप कहेंगे- एक। मैं कहता हूँ कि बाकी एक काम नहीं बचता, फिर से उसके सामने सौ काम तैयार हो जायेंगे, क्योंकि संसार के काम कभी पूरे नहीं हुए हैं। संसार की खटपट और झंझट तो चलती ही रहेगी। उन उलझनों में भी दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ समय निकालकर इस संसार के स्वरूप को समझ लें तो हमारे कल्याण का रास्ता प्रशस्त हो जाएगा। जीवन के उपवन में आँधी और तूफान तो आते ही रहेंगे अतः फूल झड़ने और मुरझाने के पहले ही उनकी माला गूँथ लो, कंठ अवरुद्ध होने के पहले ही प्रार्थना के स्वर गुँजा लो। अज्ञान के अंधकार को छोड़कर ज्ञान के उजाले की ओर कदम रखो। किसी ने कहा है-

एक पल जिओ मगर बोध का प्रातः बनकर, रात बन कर नहीं।
एक पल जिओ मगर प्रेम की सुरभि बनकर, धूल बनकर नहीं।।
एक पल जिओ ज्ञान के दीप बनकर, धुँआ बनकर नहीं।
जीना ही है तो जिओ श्रद्धा के फूल बनकर, शूल बनकर नहीं।।

अब मैं फिर आपसे एक प्रश्न करता हूँ कि सौ में से एक गया तो बाकी कितने रहे? आप अपनी गणित के अनुसार कहेंगे- निन्यानवे। लेकिन जीवन की गणित की गणना ऐसे नहीं होती है। मानव भव को एक सुअवसर जानकर आपको जीवन सफल बनाने के लिये अगर सौ कार्य करने हैं, परन्तु उन कार्यों के करने के पीछे प्रभुवाणी के प्रति श्रद्धा नहीं है तो सारे कार्य व्यर्थ होंगे। आध्यात्मिक प्रगति के लिये जो श्रद्धा नहीं है तो वह साधना इच्छित फल प्रदान नहीं कर सकेगी। श्रद्धा का अर्थ है संशयहीनता। आगम कहते हैं कि शंकाशील व्यक्ति को कभी समाधि नहीं मिलती। अतः आध्यात्मिक क्षेत्र में साधना के समस्त कार्यों में से श्रद्धा को हटा दें तो पीछे शून्य ही रहेगा। बिना श्रद्धा के समस्त क्रियाएँ मात्र कर्म-काण्ड ही होंगी। भगवान की वाणी के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखकर उससे जीवन की जड़े सींचोगे तो जिन्दगी के वृक्ष पर मधुर फल लगेंगे ही। संसार में केवल आना, उसे भोगना और अन्त में मर जाना ही इस जीवन का उद्देश्य नहीं है।

दीक्षा-अर्द्धशती

उपाध्यायप्रवर मानचन्द्रजी : सरलता, साधना एवं संयम की त्रिवेणी (3)*

श्री सम्पतराज चौधरी, सी.ए.

एक बार पाली के उपनगर में आपश्री का सार्वजनिक प्रवचन कार्यक्रम निश्चित हुआ। कुछ उत्साही लोगों ने आपसे निवेदन किया कि कल प्रवचन सभा में अजैनी लोगों की उपस्थिति ही अधिक रहेगी, अतः यदि आप प्रवचन में कल राम-कृष्ण के जीवन की चर्चा करें तो अच्छा रहेगा। उपाध्याय भगवन्त ने उन लोगों से कहा कि "भाई, हमारे प्रवचन में जैनेतर लोग कभी-कभी ही आते हैं, ऐसे अवसरों पर भी हम उनको महावीर के सिद्धान्त नहीं बताएंगे तो उन्हें उनके बारे में कौन बतायेगा? जैनेतर लोगों को भी जैन दर्शन से परिचित कराना हमारा ही दायित्व है। यह है आपकी जिनवाणी को जन-जन तक पहुँचाने की निष्ठा। आप कभी लोक-लुभावनी बातों में नहीं आते, वरन् स्व-विवेक से जो कहना होता है, वही कहते हैं।

जब आप आचार्य हस्ती के सामायिक संदेश की प्रवचनों में चर्चा करते हैं तो यह कहने में हिचकिचाते नहीं हैं कि इतने वर्ष बीत गये सामायिक करते-करते, पर अभी तक जीवन में परिवर्तन नहीं दिख रहा है। सामायिक करने से नहीं, सामायिक जीवन में उतारने से ही परिवर्तन आता है, इसी को कहते है- सामायिक का होना। जब सुख-विपाक सूत्र के आधार पर सुबाहु कुमार के जीवन-चरित्र का वर्णन करते हुए श्रावक के बारह व्रतों का स्वरूप समझाते हैं, तो आपकी विवेचना सुनकर लोगों में व्रतधारी बनने की उत्सुकता जागृत हो जाती है। आपकी धारणा शक्ति बड़ी गहरी है, इस कारण आप प्रवचनों में अक्सर अतीत के महान् संतों के सुने हुए प्रवचनों को उद्धृत करते हैं। इस प्रतिभावान, प्रज्ञाशील साधक को प्रवचन के पूर्व कभी प्रवचन की तैयारी करते नहीं देखा। सहज रूप में वे किसी विषय पर अपनी बात समीचीन रूप से रखकर मर्यादित समय में उसका उपसंहार कर देते हैं।

अब वृद्धावस्था में आप लम्बा प्रवचन नहीं करते हैं, फिर भी यथासम्भव प्रतिदिन प्रवचन सभा में पधारते हैं। प्रवचन कर रहे अन्य मुनिवरों का जिस विषय पर प्रवचन होता है, आप भी अंत में उसी विषय पर एक नई दृष्टि प्रदान कर उस विषय का संक्षिप्त में

* वैशाख शुक्ला 13, दिनाँक 4 मई, 2012 को दीक्षा-अर्द्धशती प्रारम्भ होने के उपलक्ष्य में।

उपसंहार कर देते हैं। आपश्री का यह क्रम अभी भी नियमित रूप से चलता है।

आपकी पावन वाणी के प्रत्येक शब्द सीप बनकर श्रद्धालुजनों को मुक्तागण प्रदान कर रहे हैं, दीप बनकर ज्योति दे रहे हैं और पुष्प बनकर सुगन्ध बिखेर रहे हैं। आपकी पावन प्रवचन धारा एक गहरी शान्त सरिता की तरह तट पर बैठे साधकों को संतृप्त करती हुई उन्हें मन की निर्मलता का सूत्र देती है। उनके प्रवचनों की जादूभरी शैली में अनुभव का अमृत होता है, समझाने की युक्तियां होती हैं और दृष्टि को बदलने के दृष्टान्त होते हैं।

प्रदर्शन में नहीं, दर्शन में विश्वास

आपका जीवन पूर्णतया आडम्बर रहित है। आपने जहाँ-जहाँ विहार अथवा चातुर्मास किये, वहीं-वहीं हर व्यक्ति के मन पर आपकी सादगी की अमिट छवि अंकित हो गई है। जब आपका दिल्ली में चातुर्मास हुआ तो वहाँ आपकी सादगी, सरलता, गम्भीरता एवं साध्वाचार के प्रति सजगता को देखकर लोगों ने कहा कि ये संत अगर इतने महान् हैं तो इनके गुरु कितने महान् होंगे? इसी उत्सुकतावश वहाँ के कई श्रावक जन गुरु हस्ती के दर्शन करने सवाईमाधोपुर गये। वहाँ से लौटकर जब आये तो सबके मुँह पर एक ही बात थी कि हम तो साक्षात् भगवान् के दर्शन करके आये हैं। यह है गुरु और शिष्य दोनों का अतिशय और महिमा।

एक बार दिल्ली चातुर्मास के पूर्व वहाँ के संघ-पदाधिकारी उपाध्याय श्री की सेवा में आये और निवेदन किया-"भगवन्! चातुर्मास में कौन से फंक्शन और कार्यक्रम रखने हैं?" प्रत्युत्तर में आपने बड़े ही सहज भाव से फरमाया-"भाई, चातुर्मास में धमचक नहीं, धर्मचक्र के साधनामय कार्यक्रम हों तो ही हमें चातुर्मास करने ओर आपको चातुर्मास करवाने का आनन्द आयेगा, क्योंकि मैं तो दर्शन में विश्वास करता हूँ, प्रदर्शन में नहीं।" एक बार एक शहर में जहाँ उपाध्यायश्री का चातुर्मास निश्चित हुआ, उसी शहर में दूसरी परम्परा के संतों का चातुर्मास भी घोषित हो गया। यद्यपि दोनों ही परम्पराओं में सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रहे थे, परन्तु कुछ भ्रान्तिवश आपस में श्रावकों में पेपरबाजी शुरु हो गई। उपाध्यायश्री ने अपने प्रथम प्रवचन में ही स्पष्ट घोषणा कर दी- "किसी तरह की 'बाजी' उचित नहीं है, चाहे वह पेपरबाजी हो, पतंगबाजी हो, सट्टेबाजी हो या जुएबाजी हो। धर्म का मार्ग उलझने का नहीं, सुलझने का है। दोष दृष्टि को स्वदोष दर्शन में लगाओ, आराधना-साधना में अपनी शक्ति का उपयोग करो और पेपरबाजी बंद करो।" उपाध्यायश्री की इस उद्घोषणा से वातावरण फिर से सौहार्दपूर्ण हो गया। उपाध्यायप्रवर सम्प्रदाय के नाम पर किसी तरह का टकराव या झूठा प्रदर्शन पसन्द नहीं करते। जहाँ कहीं भी उन्होंने चातुर्मास किये हैं- राजस्थान में या राजस्थान के बाहर, वे सभी आडम्बर रहित

थे और वहाँ के जन-जन में उपाध्याय श्री की कीर्ति अंकित हो गई। सवाईमाधोपुर में तो आपके मार्मिक प्रवचनों से प्रभावित होकर श्रावकजनों ने पर्युषण पर्व के आठ दिनों तक अपने प्रतिष्ठान बंद रखकर अपना पूरा समय साधना-आराधना में लगाया।

प्रभावकता

अनेकानेक व्यक्ति उपाध्यायप्रवर के व्यक्तिगत गुणों एवं व्यवहार से इतने प्रभावित हैं कि वे इन्हें इस पंचम आरे में भी चौथे आरे के संत समझते हैं। लघुवय के संतमुनि लोकचन्द्र जी ने एक बार बताया कि जब वे छोटे थे तो उनके सांसारिक पिताश्री उन्हें उपाध्याय भगवन्त के सान्निध्य में ले गये। उन्होंने उपाध्याय भगवन्त की ओर इंगित करते कहा- "ये अपने भगवान् हैं।" यह सुनते ही लोकचन्द्र जी का बालमन रोमांचित हो उठा और वे उपाध्यायश्री की मुखमुद्रा को निहारते ही रहे। उपाध्यायश्री ने उनके सिर पर वात्सल्य भाव के साथ हाथ फेरा। उन्हें लगा कि उपाध्यायश्री उनको बड़े प्रेम से जागृति का आमंत्रण दे रहे हैं। उनको ऐसा लगा मानो मिट्टी को कुम्हार मिल गया, पाषाण को शिल्पी मिल गया, बीज को माटी मिल गई और बूंद को सीपी मिल गई। मुनि लोकचन्द्र जी को याद आता है कि उसके बाद श्रावकरत्न श्री सोहनराज जी बाघमार ने उनसे कहा कि "ऐसे महापुरुष की सेवा सन्निधि मत छोड़ना। उपाध्याय भगवन्त के बारे में सभी सम्प्रदाय वालों के मन में श्रद्धा और आदर के भाव हैं। इसी संदर्भ में उन्होंने महात्मा जी महाराज श्रद्धेय मुनि श्री जयंतीलाल जी का भी नाम लिया और कहा कि उनके जैसे और उपाध्यायश्री जैसे संत इस आरे में मिलने दुर्लभ हैं। वस्तुतः ऐसे संत जीवन्त आचारांग होते हैं।

प्रत्युत्पन्नमति-प्रमुदित प्रकृति

उपाध्यायश्री प्रमुदित प्रकृति के प्रत्युत्पन्नमति संत हैं। कई बार उनकी त्वरित टिप्पणियों से वातावरण में आह्लादकारी परिवर्तन हो जाता है। एक बार भक्तजन जब चातुर्मास का विनतिपत्र लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुए तो आप तुरन्त ही प्रमोद भाव से बोले- "क्या किसी की दीक्षा का आज्ञा पत्र लेकर आये हो?" एक भाई को उन्होंने सामायिक की प्रेरणा दी तो उसने आपसे कहा- "महाराज साहब! सामायिक में मन तो लगता नहीं, फिर सामायिक करने से क्या मतलब?" आपने तत्काल कहा- "भाई, सामायिक में मन लग जाता तो सामायिक करने की जरूरत ही नहीं पड़ती। मन को स्थिर करने के लिए ही तो सामायिक की जरूरत है।" इस तरह, बात-ही-बात में उस भाई को सामायिक का रहस्य भी बता दिया। किसी ने श्रद्धावश उपाध्यायश्री से निवेदन किया कि- "गुरुदेव! मेरे घर पधारो।" गुरुदेव ने विनोद भरे स्वर में कहा- "मैं तो घर छोड़ने की बात

करता हूँ और तुम कहते हो घर पधारो।" कोसाना चातुर्मास में नासिक के एक व्यक्ति ने अपने डायरी ओर पेन देते हुए उपाध्याय श्री से कहा कि वे अपना ऑटोग्राफ दिरावें। प्रत्युत्तर में आपने कहा कि संत आपकी डायरी में इस तरह के हस्ताक्षर नहीं करते हैं, लेकिन आपको हमारी स्मृति रखनी है तो कुछ ऐसे नियम ले लो ताकि हम आपकी स्मृति में रहें। डायरी तो गुम भी हो सकती है पर हमारे से लिये गये नियम आपको लाभ भी पहुँचायेंगे और हम आपकी स्मृति में भी रहेंगे।

एक बार एक प्रसंग पर कुछ लोगों ने आपसे कहा कि- "भगवन्! रविवार की छुट्टी का दिन है।" आपने तुरन्त उनसे प्रश्न किया- "पाप से कब छुट्टी ले रहे हो?" एक श्रद्धालु ने उपाध्याय भगवन्त से पूछा- "भगवन्! डाक्टर साहब ने मुझे हृदय का ऑपरेशन करवाने की सलाह दी है। आप फरमाएँ तो कराऊँ" उपाध्याय श्री ने 'हाँ' या 'ना' कहने की बजाय भाषा समिति का विवेक रखते हुए फरमाया- "रोग बढ़ाने में सार नहीं।"

ऐसी अनेक बातें हैं, जिनका वर्णन इस आलेख में सम्भव नहीं। इसी तरह की प्रमोद वृत्ति गुरु हस्ती में भी थी। एक बार गुरुदेव पाट के किनारे पर विराज रहे थे। उस समय उनकी वृद्धावस्था थी, अतः पास में विराज रहे मुनि मान ने उन्हें सुरक्षा की दृष्टि से कहा- "भगवन् जरा पीछे सरकिये।" गुरु हस्ती ने प्रमोद भरी वाणी में जवाब दिया- "भाई, मैं तो आगे जाना चाहता हूँ और तुम मुझे पीछे जाने के लिए कहते हो।"

कृतज्ञता

शिष्यत्व, यानी जिज्ञासा। बोध की उत्कट इच्छा। स्वरूप खोज की छटपटाहट, आकुलता। जिज्ञासा और अनुभूति का जहाँ मिलन होता है, वहीं गुरु और शिष्य का मिलन है। मुनि मानचन्द्र जी में बोध पाने की उत्कट जिज्ञासा थी। उन्होंने जान लिया था कि जैसे जहाज के बिना समुद्र को पार नहीं किया जा सकता, वैसे ही गुरु के मार्गदर्शन के बिना संसार सागर को भी पार पाना कठिन है। संत कबीर ने कहा है-

गुरु बिन ज्ञान न उपजै, गुरु बिन मिलै न मोक्ष।
गुरु बिन लखै न सत्य को, गुरु बिन मिटै न दोष।।

उपाध्याय श्री को तीन गुरु मिले। पहले दीक्षा गुरु आचार्य हस्ती, दूसरे शुद्ध साध्वाचार की शिक्षा देने वाले गुरु छोटे लक्ष्मीचन्द जी म.सा. और तीसरे जिनवाणी का ज्ञान देने वाले बड़े लक्ष्मीचन्द जी म.सा.। इन तीनों महापुरुषों का मुनि मानचन्द्र जी के जीवन पर गहरा प्रभाव रहा है। इसलिए उपाध्यायप्रवर अपने साधनामय जीवन के लिए

तीनों का बहुत उपकार मानते हैं। आज जो कुछ भी वे हैं, यह उन्हीं गुरुजनों की कृपा का फल है, ऐसा उनका मानना है।

गुरु का विश्वास

उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान् फरमाते हैं- "विनयादि गुणों से अलंकृत शिष्य पर गुरु प्रसन्न रहते हुए उसे अर्थ गम्भीर विपुल श्रुतज्ञान का लाभ देते हैं, जिससे वह संशय से दूर हो जाता है, समाधि से संवृत्त हो जाता है, तेजस्वी हो जाता है और जन-जन द्वारा पूजित हो जाता है।" मुनि मानचन्द्रजी भी एक ऐसे ही शिष्य थे जिनपर गुरु हस्ती का अपार विश्वास था। अपने अन्तिम चातुर्मास में आचार्य हस्ती ने अपने दोनों ओर विराजे मुनि हीरा और मुनि मान की ओर इशारा करते हुए कहा- "अब तक तो मैं अकेला ही इस धर्मरथ को हांक रहा था, अब ये दोनों मेरी सशक्त भुजाएँ हैं।" आचार्य हस्ती को पूर्ण विश्वास था कि दोनों ही मुनिगण इस धर्मरथ को हाँकने में पूर्णतया सक्षम हैं।

पुण्यातिशय

उपाध्यायश्री का प्रबल पुण्य है कि उनके कर-कमलों से तीन आचार्यों का पदाभिषेक हुआ है- रत्नसंघ के आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., नानक परम्परा के आचार्य श्री सोहनलाल जी म.सा. और आचार्य सुदर्शनलाल जी म.सा.। आपकी मांगलिक और दर्शन के अनेक प्रभावकारी नजारे लोगों से सुने हैं। जिनका चित्त निर्मल होता है, उनके मुख से निकली वाणी मंगलकारी होती है, इसमें कोई संशय नहीं।

निर्मल वाणी संत की, सुखदायी ही होय।
जागे मंगल प्रेरणा, तन-मन पुलकित होय।।

उपसंहार

उपाध्यायप्रवर को जान लेना संत जीवन के आदर्शों का साक्षात्कार कर लेना है। वे अपनी प्रभा से निरन्तर धर्मसंघ को प्रभा मंडित कर रहे हैं। जब हम उनके सान्निध्य में जाते हैं तो वे एक साथ गुरु, ईश्वर, बन्धु, ज्ञानी, समता के पोषक और अहिंसा के पुजारी लगते हैं। शान्त-दान्त, गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी उपाध्याय भगवन्त रत्नसंघ के एक शलाका पुरुष हैं। महापुरुषों का जीवन हमारी दिशा तय करने के लिये है। सूरज को याद करेंगे तो प्रकाश की अनुभूति होती है। फूलों को याद करेंगे तो सुगन्ध की अनुभूति होती है। इसी तरह से मुनि मान को याद करते हैं तो शांति की अनुभूति होती है। एक संन्यासी के रूप में वे शान्त रस के नायक हैं और इस रस से व्याप्त उनके जीवन से लोग मुग्ध हैं। सारे प्राणी जिनके मित्र हैं, उसे किसी से भय नहीं होता और वह किसी के लिए भय उत्पन्न नहीं करता। इस कारण

मुनि मान निर्भय हैं। कोई व्यक्ति महान् तभी होता है जब वह राग-द्वेष से परे रहकर भी आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना से परिपूर्ण उदारचेत्ता हो। इसलिए मुनि गौतम ने अपने गीत में कहा- "मुनिवर मान महान् हैं।" वे सरलता की मूर्ति हैं, विनम्रता के पुंज हैं, साधना के सुमेरु हैं, ज्ञान के सागर हैं, दर्शन से तेजस्वी हैं और वाणी से मधुर हैं। उनका बल विद्वत्ता पर नहीं, विनय पर है। पांडित्य पर नहीं पुरुषार्थ पर है। उन्होंने अपनी साधना को कभी प्रदर्शन का विषय नहीं बनाया। उनका कहना है- मंगल तो साधना करने में है, मात्र उसकी चर्चा करने में नहीं। वैराग्य की बाती जलाकर, समता के तेल से अनुप्राणित दया का यह दीपक चिन्मय ज्योति बिखेर रहा है। ऐसे संत अमृत तरु के सुन्दरतम फूल हैं, जो महकते रहते हैं। कोई उनके पास जाकर गंध ले तो अच्छा, नहीं ले तो उसकी उन्हें चिन्ता नहीं। वे भीतर के आनन्द से महकते हैं। उसकी महक बिखेरना उनका स्वभाव है और उसी में जीवन की सार्थकता है। ऐसे महापुरुषों के सान्निध्य में आने वाला भी धन्य हो जाता है।

इनकी साधना निर्मल गंगा की तरह निरन्तर आगे बढ़ रही है और आत्मानन्द रूपी सागर में मिलने को उत्सुक है। यहाँ न कोई अपना है, न कोई पराया है। इसमें जो नहाए सो निहाल। कबीर ने कहा है कि बहता हुआ पानी निर्मल रहता है, पर साथ ही यह भी कहा है कि-

बंधा पानी निरमला, जो टुक गहरा होय।
साधु जन बैठा भला, जो कुछ साधन होय।।

अगर साधना की गहराई हो तो संतों का बैठना भी अच्छा होता है। उपाध्याय भगवन्त जैसे संत चलते हुए भी अच्छे और स्थिर होते हुए भी अच्छे, गम्भीर भी अच्छे और उन्मुक्त भी अच्छे, शिष्य भी अच्छे और गुरु भी अच्छे, आराधक भी अच्छे और आराध्य भी अच्छे, पूजक भी अच्छे और पूज्य भी अच्छे, पुष्प भी अच्छे और माली भी अच्छे।

मेरे जीवन की यह साध है कि वे सदा आनन्द में रहें और उनके आनन्द का महासंगीत मेरी जीवन-वीणा में भी सदा गूंजता रहे। इस जगत में अहोभाव के आंसुओं से सुन्दर और कोई फूल नहीं होते। जिसकी पूजा की थाली में ये फूल हैं, उसकी अर्चना अपने आराध्य तक पहुँच ही जाती है।

प्यास ही मत नीर भी दो, चेतना के गीत भी दो।
त्रस्त न होऊँ डगर में,आस्था के दीप भी दो।।

-कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,
14, वरदान अपार्टमेण्ट्स, 64, इन्द्रप्रस्थ-एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

English-Section

NON-ABSOLUTISM : THE PHILOSOPHICAL BASIS OF TOLERANCE

Prof. Sagarmal Jain

Fanaticism or Intolerance is one of the prime curse of our age. Jainism, since its inception, believes in non-absolutism or Anekāntavāda and preaches for tolerant outlook and harmonious living. On the basis of its theories of non-absolutism and non-violence it has remained tolerant and respectful towards other religions, faiths and philosophical ideologies. Jaina scholars, while opposing the different one sided or absolute view-points of other ideologies and faiths, paid full regard to them and accepted that opponent's convictions may also be valid from a certain standpoint. Jaina men of learning appose only their absolute truth-value, but accept their partial truth-value on the basis of their fundamental concept of non-absolutism or Anekantavada.

Jaina hold that dogmatism and fanaticism are the born children of absolutism i.e. one-sided outlook or ekāntavāda. An extremist or absolutist holds that what so ever he propounds is correct and what other say is false, while a non-absolutist or relativist is of the view that he and his opponent both may be correct if viewed from two different angles and thus a relativist i.e. Anekāntavādi adopts a tolerant outlook towards other faiths and ideologies. It is the Jaina doctrine of Anekāntavāda or non-absolutism on which the concept of religious tolerance and fellowship of faiths is based. For the Jainas non-violence is the essence or religion, from which the Jaina concept of non-absolutism emanates. Absolutism represents"Violence of thought", for it negates the truth-value of its opponent's view and thus hurts the feelings of others. Anekāntavāda i.e. non-absolutism is nothing, but a non-violent approach towards other's ideologies and faiths. A non-violent search for truth finds non-absolutism. Jaina thinkers are of the view that the reality is a complex one, it can be looked and understand from different angles and thus various judgments may be made about it, for it has many facets,

various attributes and various modes. Even two contradictory statements about an object may hold true, if they were made from two different angles or view points. Since we are finite beings, we can know or experience only a few facets of reality at one time from a certain angle. The reality in its completeness cannot be grasped by us. Only a universal observer i.e. an omniscient (Sarvajña) can comprehend it completely, yet even for an omniscient it is impossible to comprehend it and explain it without a stand point or a view point. He can comprehend it and explain it only through different angles or view points. This premise can be understood from the following example, take it for granted that every one of us has a camera to click a snap of a tree, we can have hundreds of photographs, but still we find that most portion of the tree photographically remains uncovered. The photographs differ from each other if they are taken form different angles. They can not be similar, unless they are taken from the same angle. So is also the case with diversified human understanding and knowledge. We only can have a partial and relative view of reality. It is impossible for us to know and describe reality without an angle or a view point. While every angle or view point have a right to claim that it gives a true picture of reality, but at the same time we must be aware of the fact that each one only gives a partial and relative picture of reality. On the basis of a partial and relative knowledge of reality, one can claim no right to discard or reject the views of his opponents as totally false. Thus according to Jaina thinkers one should remain tolerant towards the views of his opponents. The truth value of the opponents must be accepted and respected.

Thus non-absolutism or Anekāntavāda of Jainism forbids allowing the individual to be dogmatic and one sided in approach. It pleads for a broader outlook and open-mindedness, which can resolve the conflicts that emerge from differences in ideologies and faiths. Satkari Mookerjee rightly observes that Jainas do not believe in extremist a priori logic of absolutists. Pragmatically considered, this logical attitude breeds dogmatism and it carried a step further, engenders fanaticism, worst and violent passion of human heart. It is only the theories of non-violence and non-absolutism can generate a broader and tolerant outlook and thus can resolve the conflicts of ideologies and faiths.

If we want to save the humanity from the curses of fanaticism and dogmatism, we should accept the jaina theory of non-absolutism or Anekāntavāda. It is the Anekāntavāda, which forbids to be dogmatic and fanatic in our approach. Prof. T.G. Kalghatgi rightly mentions "the spirit of Anekānta is a very much necessary in society; specially in the present days when conflicting ideologies are trying to assert supremacy aggressively, Anekānta brings the spirit of intellectual and social tolerance".

For the present day society what is awfully needed is the virtue of tolerance. This virtue of tolerance i.e. the regard for other ideologies and faiths has been maintained in Jainism from the very beginning. Mahavira mentions in the sūtrakṛtāṅga "Those who praise their own faiths and ideologies and blame those of their opponents and thus distort the truth, will remain confined to the cycle of birth and death "(1/1/2/23).

According to Jaina thinkers equal regard to different faith and religions should be the base of religious harmony and fellowship of faiths. Jaina saint Siddhasena Divakara remarks "Just as emerald and other jewels of rare quality and of excellent kind do not acquire the designation of necklace of jewels and find their position on the chest of human beings, so is the case with different religions and faiths. What ever excellent qualities and virtues they possess, unless they are catenated in the common thread of fellowship and equal regard for other, they can not have their due place in human hearts and can be changed for spreading hostility and hatred in mankind. Therefore one thing we must bear in our mind that if we consider other ideologies and faith as totally false, real harmony in human society and between different religions would not be possible. Every religion or faith has its origination in a particular social and cultural background and has its utility and truth value accordingly. As the different parts of the body have their own position and utility in their organic whole and works for its common good so is the case with different religions in human society. They should work for the common goal of human society and try to resolve the conflicts of ideologies and faiths and make life on earth peaceful. If every faith is working for human good, it has equal right to exist and work for that.

According to Siddhasena Divakara (5th century A.D.) the divergent view points or faiths may be charged false only when they negate the truth value of others and claim themselves exclusively true. But if they accept the truth value of other ideologies and faiths on the basis of Anekāntavāda, they attain righteousness. He further propounds that every view point or faith in its own sphere is right, but if every one of them considers it self as a whole truth and disregards the views of their rivals, they do not attain righteousness, for all the viewpoints are partially true, their truth value remains in their own respective spheres or angles. If they encroach upon the province of other view points and consider them as a false, they are wrong. For a non-absolutist rightness of a particular faith or ideology depends on the acceptance of partial rightness of others. In other words he believes in a harmonious co-existence and works for a common good of mankind. Acceptance of non-absolutism is the only way to remove the religious conflicts and violence from the earth and establish harmony among various ideologies and faith. It is only the concepts of non-absolutism which can develop a tolerant outlook and establish the peace on the earth.

Today when fundamentalism is posing a serious threat to communal co-existence and harmony, non-absolutism is not only essential, but the only way-out to protect the human race. According to Siddasena Divakar a non-absolutist, who advocates the synoptic view of truth never discriminates the different faiths as right or wrong, he pays all of them proper regard; for he accepts their partial or relative truth value. Siddhasena Divakar (5^{th} century A.D.) in his work sanmatitarka rightly observes all the schools of thought are valid, when they are understood from their own stand point or angle and so far as they do not discard the truth value of others. It is this non-absolutistic broader outlook can develop the harmony among conflicting ideologies and faiths.

Non-absolutism gives a broader perspective. On the basis of this broader outlook Jainism holds that the followers of other sects can also attain emancipation or Moksa, if they are able to destroy attachment and aversion. They do not believe in the narrow outlook that the follower of Jainism only can achieve emancipation. In Uttarādhyayana there is a

reference about "anyalinga siddha" i.e. the emancipated souls of i.e who have destroyed attachment and aversion which are the seedd of birth and death, may get emancipation whether he belongs to any other sect (36/69). Haribhadra, an advocate of religious tolerance remarks one who maintains equanimity of mind will certainly get emancipation, whether he may be Śvetāmbara or Digambara or Bauddha or the follower of any other sect. This broader outlook of Jainas is only possible on the basis of Anekāntavāda. Haribhadra further says that neither one who remains without clothes nor who is white-clad, neither a logician nor a philosopher, nor a devotee of personal cult, will get liberation unless he overcomes his passions. A non-absolutist accepts that the differences or the diversity of the modes of worship depends on the time, place and the levels of aspirants.

While expounding the tolerant outlook of a non-absolutist, Upādhyāya Yashovijaya (17th century A.D.) remarks that a true non-absolutist does not disdain any faith, but treats all the faiths equally as a father does to his sons, for a non-absolutist does not have any prejudiced and biased outlook. A true believer of Syādavāda (non-absolutism) is one who pays equal regard to all the faiths to remain impartial to the various faiths is the essence of being religious. A little knowledge, which induces a person to be impartial, is of more worth than the unilateral vast knowledge of the scriptures, (Adhyatmopaniṣad-69-73).

In " Lokatattvanirnaya" Haribhadra says that I venerate all those who are free from all vices and filled with all virtues, be they Brahmā, Vishnu, Śiva or Jina. This saying is further supported by Hemachandra in his Svayambhūstotra. He says I bow those who have destroyed attachment and aversion, the seeds of birth and death, be they Brahmā, Vishnu, Śiva or Jina.

Among the causes that generate fanaticism and intolerance blind faith is the principal, it results from passionate mind based on attachment and hence uncritical. According to the Jainas, attachment causes perverse attitude. It leads one's attitude towards a strong bias for one's own faith or religion. A Perverse and hence defiled attitude

renders it impossible to view things rightly just a person wearing colored glasses or suffering jaundice is unable to see the things as they are. Attachment and aversion are the causes for fundamentalism or fanaticism. These two are the enemies of a true philosophical thinking. Jainism holds that the truth can reveal itself to a impartial thinker. This impartial and unbiased attitude can only be generated through non-absolutism i.e. the doctrine of Anekāntavāda. Thus we can say that Jainism through it's doctrine of Anekāntavāda has a sound philosophical foundation for religious tolerance.

Anandaghana a mystic Jaina saint of 17th Century remarks that just as ocean included all the rivers so does non-absolutism of Jainas to all other faiths. Jainas accept all other view-points and school of thought conjoins to each other, they form a broader outlook. He further remarks that all the six schools of thought are the organs on Jina and one who worships Jina also worships them. It is through this broader and unbiased outlook we can ensure peace and harmony on this planet.

-Director, Prachya Vidyapeetha, Shajapur (M.P.)

प्रेरक-प्रसंग

युवामन को सीख

बात सन् 1937 की है। साधारण सा दिखने वाला, चेहरे पर घनी मूछों वाला, शाल ओढ़े एक व्यक्ति पटना जंक्शन पर ट्रेन के सामान्य डिब्बे में बैठा। कॉलेज के पाँच-छह छात्र भी उसमें बैठे थे। सभी उसको देखकर हँसी उड़ाने लगे। इसी बीच टिकट चैकर आ गया। उन कॉलेज के छात्रों में से किसी के पास टिकट नहीं था, अतः टिकट चैकर ने उनसे सख्ती से भला-बुरा कहा। 50 वर्ष के उस सज्जन ने टिकट चैकर से कहा कि आपको ऐसी भाषा नहीं बोलनी चाहिये, आप टिकट का जो चार्ज होता है ले लेवें। इतना कह कर उसको पैसे दे दिये। छात्रों को यह महसूस हुआ कि हम जिसकी खिल्ली हँसी कर रहे थे, वो व्यक्ति कितना भला निकला। इसी बीच गाड़ी मुगलसराय स्टेशन पर रुकी। पता चला कि यह उदारमना डॉ. राजेन्द्रप्रसाद थे जो बाद में भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने। छात्रों के उतरे चेहरों को देख कर उन्होंने कहा कि यह भूल आपकी उम्र का तकाजा है, भविष्य में अपनी शक्ति देश के हित में लगाइये। हमको उनके जीवन का यह प्रसंग महत्त्वपूर्ण शिक्षा देता है।

-संकलन :- श्री जसराज देवड़ा धोका

शोधालेख

स्थानाङ्ग में वर्णित दस धर्म और कर्तव्यपालन

डॉ. दिलीप धींग

श्रेष्ठ मानव और आदर्श नागरिक बने बगैर कोई भी व्यक्ति अच्छा एवं सच्चा धार्मिक व्यक्ति नहीं हो सकता। धर्म महज परलोक की वस्तु ही नहीं है; अपितु वर्तमान जीवन, समाज, देश व दुनिया को बेहतर बनाने की साधना भी है। सद्गृहस्थ ग्राम/नगर से लगाकर देश तक के प्रति अपने कर्तव्यों को किसी न किसी रूप में निभाता है। उसका यह कर्तव्य-निर्वहन उन सब तत्त्वों को सुव्यवस्थित करता है, जिनमें मुख्यत: समाज-व्यवस्था सम्मिलित है। कर्त्तव्य-परायणता व्यक्ति, समाज और देश की उन्नति का मुख्य आधार है। जिस देश, समुदाय या क्षेत्र में कर्तव्य-परायण नागरिक निवास करते हों; वह देश, समुदाय या क्षेत्र निरन्तर विकास करता है। जैन आगम-ग्रन्थों में जगह-जगह कर्तव्यनिष्ठा के उद्धरण और उदाहरण मिलते हैं।[1] वहाँ कहा गया है कि जो अनर्थ-रूप और अकर्तव्य है, उसका आचरण नहीं करना चाहिये।[2] उपासकदशांग में वर्णित दस श्रावकों के जीवन कर्मठता के जीवन्त प्रतीक हैं। जो व्यक्ति कर्तव्यनिष्ठ होता है, वह सामाजिक, लौकिक, राष्ट्रीय आदि सभी धर्मों की आराधना करता है। स्थानांग सूत्र में इस प्रकार के दस धर्म बताये गये हैं।[3]

ठाणांग के दस धर्म

1.ग्राम-धर्म : गाँव के प्रति अपने फर्ज को निभाना ग्राम धर्म है। भगवान महावीर उनके प्रथम नयसार के भव में 'ग्राम-चिन्तक' थे। जैनाचार्यो ने ग्राम-धर्म के समुचित परिपालन के लिए ग्राम के मुखिया 'ग्राम-स्थविर' की व्यवस्था के निर्देश भी दिये हैं। इन व्यवस्थाओं के तहत समस्त ग्रामवासी अपना और अपने गाँव का विकास सुनिश्चित करें। ग्राम-स्थविर की तुलना वर्तमान में 'ग्राम-सेवक' तथा सरपंच से की जा सकती है। गाँवों की उन्नति पर देश की उन्नति निर्भर है। बीसवीं सदी के महानायक महात्मा गांधी ने ग्रामोन्नति पर बहुत जोर दिया। उन्होंने ग्राम-स्वराज का सपना देखा। पंचायती राज के माध्यम से उसे साकार करने की राह सुझाई। सदियों पूर्व आगम ग्रन्थों में इन व्यवस्थाओं के उपयोगी सूत्र हमें मिलते हैं। गाँव अर्थ-व्यवस्था की आधारभूत इकाई है। ग्राम स्वच्छ पर्यावरण, संस्कृति-संरक्षण और प्राथमिक उद्योगों के केन्द्र होते हैं। कथित विकास की आंधी में भारत के आत्म-निर्भर और सक्षम गाँव आज कमजोर पड़ते जा रहे हैं। भगवान महावीर द्वारा सुझाये

गये गृहस्थाचार के नियम ग्राम्य अर्थव्यवस्था को उत्कर्ष प्रदान करते हैं।

2.नगर-धर्म : जिस प्रकार गाँव के प्रति अपने फर्ज को निभाना ग्राम-धर्म है, उसी प्रकार नगर के प्रति अपने दायित्व निभाना नगर-धर्म है। जैन सूत्रों में ग्राम-स्थविर की भाँति नगर-स्थविर की व्यवस्था के उल्लेख मिलते हैं, जिनकी तुलना वर्तमान के नगर निगम तथा उसके सभापति से की जा सकती है। नगरवासियों का दायित्व अपने नगर के प्रति इसलिए भी अधिक बनता है कि वे ग्रामवासियों से अधिक विकसित अवस्था में जीवन यापन करते हैं। इसके अतिरिक्त नगरों का विकास वनों, गाँवों व ग्रामवासियों पर निर्भर है। नगरवासियों तथा नगर-निगम को चाहिये कि वे पर्यावरण-संरक्षण, मूक प्राणियों की रक्षा व गाँवों के विकास के लिए अपने दायित्व को तय करें। निगम द्वारा कोई ऐसा नियम नहीं बने जिससे ग्रामवासियों, वनवासियों और पशु-पक्षियों के जीवन-विकास पर प्रतिकूल प्रभाव हो। दूसरों के विकास की कीमत पर अपना विकास किसी भी दृष्टि से उचित नहीं होता है।

3.राष्ट्र-धर्म : राष्ट्र-धर्म के अनेक रूप होते हैं। जिस देश के नागरिक राष्ट्रीयता को अपने भावों के साथ संजोते हैं, वह देश अजेय होता है। उस पर किसी भी प्रकार के राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आक्रमण की आशंका व संभावना नहीं रहती है। राष्ट्रीय-नियमों, प्रतीकों आदि को लेकर जो राष्ट्रीय-चेतना नागरिकों में होनी चाहिये, उस चेतना का विकास आगमों में वर्णित गृहस्थाचार से सहज रूप से होता है। एक अहिंसा व्रतधारी गृहस्थ भी अवसर आने पर देश की रक्षार्थ शस्त्र उठाने से नहीं हिचकता है। अहिंसा अणुव्रत के अन्तर्गत महाराजा चेटक का उदाहरण दिया जाता है कि श्रावक के लिए विरोधिनी हिंसा का त्याग शक्य नहीं है।[4] भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में राजस्थान से पहली शहादत देने वाला वीर भगवान महावीर का उपासक अमरचन्द बाँठिया था।[5] बीकानेर निवासी अमरचन्द बाँठिया ने अन्तिम इच्छा के रूप में सामायिक-व्रत की आराधना की और पूरे समभावों के साथ अपने प्राणों की बाजी लगा दी परन्तु राष्ट्र-धर्म से विचलित होना उचित नहीं समझा। दानवीर श्रावक भामाशाह ने अकबर के वैभवशाली जीवन के अनेक प्रलोभनों को ठुकराकर अपने देश के प्रति उत्कृष्ट वफादारी का परिचय दिया। देशभक्त राज्याधिकारियों, कर्मचारियों और नागरिकों की सेवाओं से राष्ट्र में सर्वांगीण विकास की राह प्रशस्त होती है।

4.पाखण्ड-धर्म (नीति-धर्म) : यहाँ पाखण्ड का अर्थ ढोंग या कर्म-काण्ड से नहीं, अपितु अनुशासित, संयमित, सदाचारिक व नीतिपूर्ण जीवन जीने से है। जिससे समाज व देश में शान्ति एवं व्यवस्था बनी रहे और भ्रष्टाचार पर अंकुश रहे। गृहस्थाचार (5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत व 4 शिक्षाव्रत) के सारे नियम-उपनियम व्यक्ति को उत्तम नागरिक बनाते हैं।

शिक्षा में नैतिकता का सुस्पष्ट समावेश करके नीति धर्म के पालन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। सम्राट् अशोक ने तो सदाचार और चरित्र-विकास के लिए एक स्वतन्त्र मन्त्रालय स्थापित किया था।[6]

5.कुल-धर्म : कौटुम्बिक श्रेष्ठ परम्पराओं का अनुपालन कुल-धर्म के अन्तर्गत परिगणित है। कुल-धर्म का एक अर्थ यह है कि सभी कुटुम्बीजन प्यार और सहकार पूर्वक रहें। कुल के जो ज्येष्ठ व श्रेष्ठ जन हैं, उनकी भावनाओं व आज्ञाओं का सम्मान करें तथा जो वृद्ध व बीमारजन हैं, उनकी निष्ठापूर्वक सार-संभाल करें। बड़े छोटों का ध्यान रखें और छोटे बड़ों का। जिस समाज में कर्तव्यपरायण कुल व कुटुम्ब होते हैं, वह समाज निरन्तर प्रगति करता है।

6.गण-धर्म : गण का अर्थ समान आचार-विचार के व्यक्तियों के समूह से है।[7] इस अर्थ में किसी क्षेत्र-विशेष की बिरादरी को गण कहा जा सकता है। जो व्यक्ति जिस समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है, उसे उसके नियमों का पालन करते हुए सामुदायिक उत्कर्ष के लिए यत्नशील रहना चाहिये, यह गण-धर्म है। जहाँ गणतन्त्र की बात है, वहाँ गण का अन्य अर्थ समान आचार-विचार के व्यक्तियों के समूह से नहीं हो सकता। वहाँ तो सभी प्रकार के आचार-विचार वाले व्यक्तियों की मौजूदगी अवश्यम्भावी है। वर्धमान महावीर की जन्म-स्थली कुण्डलपुर ज्ञातृ-क्षत्रियों का गणराज्य था। उनके पिता राजा सिद्धार्थ उसके गण-प्रमुख थे तथा मामा महाराजा चेटक वैशाली गणराज्य के राष्ट्राध्यक्ष थे। कहा जा सकता है कि वर्धमान गणतान्त्रिक माहौल में पले-बढ़े थे। वर्तमान में प्रचलित लोकतान्त्रिक-प्रणाली के सूत्र गणतन्त्र की व्यवस्थाओं में मिलते हैं। इस अर्थ में गण-धर्म के अन्तर्गत समता, स्वतन्त्रता, स्वायत्तता, सह-अस्तित्व आदि मूल्यों के अनुपालन व अनुरक्षण का दायित्व आता है।

7.संघ-धर्म : धार्मिक व्यवस्थाओं के रूप में श्रमण, श्रमणी, श्रावक और श्राविका मिलाकर चतुर्विध संघ होता है। नन्दी-सूत्र में ऐसे परमोपकारी संघ की बड़ी महिमा बताई गई है। श्रमण-वर्ग का कर्तव्य है कि वह संघीय मर्यादा व अनुशासन में संघ-विकास के लिए अपना योगदान करे। गृहस्थ-वर्ग का कर्तव्य है कि वह संघ-विकास के लिए अपने संसाधनों का विवेकसम्मत नियोजन करे। संघ का दूसरा रूप गणों का समूह होता है। भगवान महावीर के समय में लिच्छवी, ज्ञातृ, विदेह आदि आठ गणराज्यों का एक वज्जिसंघ था, वैशाली जिसकी राजधानी थी। सदस्य अथवा नागरिक के रूप में ऐसे संघों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना संघ-धर्म है।

8.श्रुत-धर्म : श्रुत का पारम्परिक अर्थ है भगवान से सुनी गई वाणी। अब लिपिबद्ध

आप्त-वचन ही श्रुत है। इन वचनों का, आगमों व आगम-तुल्य ग्रंथों का स्वाध्याय करना तथा इनके प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करना श्रुत-धर्म है। व्यक्ति को ऐसे महान श्रुत में से उत्तम अर्थ की खोज करनी चाहिये।[8] ज्ञान का अध्ययन-अन्वेषण, प्रचार-प्रसार और विस्तार करना, समाज से अंधविश्वासों और जड़ताओं को मिटाने के प्रयास करना श्रुत-धर्म के सोपान हैं। आज व्यक्ति से लेकर समष्टि तक सारा विकास ज्ञानाधारित हो गया है। भगवान महावीर में उसी ज्ञान को श्रेष्ठ व सम्यक् कहा है जो व्यक्ति को अहिंसा के मंगल पथ से विचलित नहीं करें।[9]

9.चारित्र-धर्म : इस धर्म के अन्तर्गत मुख्यत: आध्यात्मिक साधना को लिया जाता है। इसके दो वर्ग हैं - आगार (गृहस्थ) धर्म तथा अनगार (मुनि) धर्म। गृहस्थ धर्म में अणुव्रतों के पालन से जीवन को अर्थपूर्ण बनाने की साधना की जाती है तो अनगार जीवन में महाव्रतों के पालन से आत्म-साधना की जाती है। चारित्र धर्म के अन्तर्गत जिन नियमों का पालन करना होता है, वे नियम व्यक्ति को संयमित तथा समाज को अनुशासित बनाते हैं। साथ ही सुव्यवस्थित समाज व सुरक्षित राष्ट्र में ही श्रुत-रक्षा व चारित्र-धर्म की श्रेष्ठ आराधना संभव होती है।

10.अस्तिकाय-धर्म : तत्त्व-ज्ञान और द्रव्य-विज्ञान को समझना समझाना अस्तिकाय-धर्म है। जैन दर्शन में वर्णित छह द्रव्यों में-से काल द्रव्य को छोड़कर शेष पाँच (धर्म, अधर्म, जीव, पुद्गल और आकाश) द्रव्यों को अस्तिकाय माना गया है। द्रव्य का विशेष ज्ञान हमारे दृष्टिकोण को वैज्ञानिक, शोधात्मक तथा तर्कसंगत बनाता है। हमारे मन-मस्तिष्क के द्वार नित नये ज्ञान-विज्ञान को जानने के लिए खुले होने चाहिये। विराट् दृष्टिकोण सम्भावनाओं के द्वार खुले रखता है। ज्ञान के उपयोग व प्रयोग में विवेक का विस्मरण नहीं होना चाहिये।

धर्म के अनेक अर्थ, प्रकार और आयाम होते हैं। स्थानांग-सूत्र में वर्णित ये दस धर्म व्यक्ति को समग्रता और पारस्परिकता का बोध प्रदान करते हैं। इन धर्मों के माध्यम से यह सन्देश दिया गया है कि व्यक्ति को सिद्धान्त और व्यवहार में सन्तुलन तथा प्रवृत्ति और निवृत्ति में विवेक रखना चाहिये। समय, क्षेत्र और व्यक्ति के अनुसार सामान्य और विशेष तथा मुख्य और गौण का निर्धारण करने में धर्म का यह वर्गीकरण सहायक बनता है। ऐसा लगता है इस वर्गीकरण में जीवन के अनेकान्त को साकार किया गया है। इन दस धर्मों के अन्तर्गत धर्म शब्द मुख्यत: कर्तव्य का बोधक है। हर व्यक्ति समाज का सदस्य और देश का नागरिक होता है। उसे अपनी क्षमता, सामर्थ्य, योग्यता, जवाबदेही, समय आदि को ध्यान में रखते हुए अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिये।

सन्दर्भ :

1. 'उट्ठिए नो पमायए' - आचारांग 1/5/2, 'सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं'- उत्तराध्ययन 13/10, 'किरियं च रोयए धीरो' - वही 18/33
2. 'अणट्ठाणे य सव्वत्था परिवज्जेज्ज' - उत्तराध्ययन 18/30, 'अकिरियं परिवज्जए' - वही 18/33
3. ठाणांग 10/760; द्रष्टव्य - आचार्य जवाहर का प्रवचन संकलन 'धर्म और धर्मनायक'
4. द्रष्टव्य, आचार्य हस्ती प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास, भाग प्रथम, पृ. 742-743
5. भण्डारी, विजय, राजस्थान पत्रिका 6 जून, 2002 के अंक में प्रकाशित लेख। देखें मांगीलाल भूतोड़िया की पुस्तक 'इतिहास की अमर बेल ओसवाल वंश' में शहीद अमर चंद बांठिया का जीवन।
6. जैन, प्रेम सुमन, प्राकृत भारती, 'अशोक के अभिलेख' अध्याय।
7. जैन प्रो. सागरमल, जैन, बौद्ध तथा गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन, भाग 2, पृ.-244
8. सुयमहिट्ठिज्जा उत्तमट्ठगवेसए। जेणऽप्पाणं परं चेवं, सिद्धिं संपाउणेज्जासि। - उत्तराध्ययन सूत्र 11/32
9. 'एवं खु नाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंचण' - सूत्रकृतांग सूत्र 1/10

-53, डोरेनगर, उदयपुर-313002 (राज.)

अर्द्धमूल्य में जिनवाणी सदस्यता का सुनहरा अवसर

संघनिष्ठ श्रावकरत्न श्री प्रसन्नचन्द जी, श्री पुनवानचन्द जी, श्री हस्तीमल जी , श्री लिलमचन्द जी, श्री शांतिलाल जी ओस्तवाल भोपालगढ़ वालों (हाल मुकाम चेन्नई, जोधपुर, मुम्बई) के अर्थ सहयोग से जिनवाणी की आजीवन सदस्यता 23 जून 2012 से अर्द्धमूल्य में प्रारम्भ की गई है। जो भी महानुभाव इस योजना का लाभ लेना चाहें वे 250 रुपये का 'जिनवाणी' के नाम' से ड्राफ्ट, नकद राशि, मनीऑर्डर भेजकर जिनवाणी के आजीवन सदस्य बन सकते हैं। ड्राफ्ट अथवा मनीऑर्डर भेजते समय अपना पूरा नाम, पता एवं फोन नं. अनिवार्य रूप से भिजवाएं। यह योजना अभी एक वर्ष 23 जून 2013 तक प्रवृत्त रहेगी। आवेदन-पत्र का प्रारूप इस अंक में प्रकाशित है।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,

बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-2575997

अध्यात्म

मोह त्यागें : प्रेम करें

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

सामान्यतः बोलचाल की भाषा एवं व्यवहार में प्रेम और मोह- ये दोनों शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, परन्तु स्वरूपतः दोनों उसी प्रकार एक दूसरे के विरोधी हैं जैसे प्रकाश और अन्धकार या रात और दिन। दोनों को समान समझने का भ्रम होने का कारण यह है कि उद्देश्य, प्रवृत्ति या फल रूप में दोनों एक ही समान प्रतीत होते हैं। उद्देश्य है- दूसरों को सुख देना एवं फल है मानव को सुख की उपलब्धि होना तथा प्रवृत्ति है सुख देने का प्रयत्न करना। दोनों ही में- जो प्रेम करने वाला है या मोह करने वाला है, उसे स्वयं को भी सुखानुभूति होती है और जिससे प्रेम या मोह किया जाता है उस व्यक्ति में भी सुख देने की भावना विद्यमान रहती है।

मोह और प्रेम उद्देश्य, प्रवृत्ति व फल रूप में बाहर से समान प्रतीत होने पर भी वास्तविकता में उनमें उतना ही अन्तर है जितना दर्द से बेहोश होने से मिटी पीड़ा में और दर्द मिट जाने से मिटी पीड़ा में। यद्यपि बाहर दृष्टि से पीड़ा अनुभव न होने का सुख दोनों में समान है, किन्तु वास्तविकता यह है कि प्रथम- बेहोश होने की अवस्था में पीड़ा अपनी चरम स्थिति पर है और दूसरी- स्वस्थ अवस्था में पीड़ा का पूर्ण नाश हो गया है। इसी प्रकार मोहजनित सुख स्वयं के भान भूलने से, बेहोशी से या जड़ता से पैदा होता है। मोह का अर्थ ही बेहोशी (मूर्च्छा) या जड़ता है। प्रेमजनित सुख स्वानुभूति से, आत्मीयता व चिन्मयता के बोध से होता है। यह चिन्मय रूप बोध ही है। मोह में राग या आसक्ति विद्यमान रहती है और प्रेम में विराग या विरक्ति। मोह में स्वार्थभाव होता है और प्रेम में सेवा-भाव। मोह में, जिससे मोह किया जाता है उससे स्वयं के सुख का भोग या भोग की आशा शामिल रहती है। प्रेम में भोग के सुख को कोई स्थान नहीं है। मोह भाव सीमित होता है और प्रेम भाव विभु होता है। मोह राग बढ़ाता है और प्रेम राग को गलाता है।

मोहजनित सुख लौकिक है अर्थात् वह क्षति, पूर्ति, तृप्ति, अतृप्ति, निवृत्ति, नीरसता, अभाव, शक्तिहीनता आदि दोषों से युक्त होता है। परन्तु प्रेमजनित सुख अलौकिक है, अर्थात् वह क्षति, पूर्ति, तृप्ति, अतृप्ति, निवृत्ति, नीरसता, अभाव या शक्तिहीनता आदि दोषों से रहित होता है। यह शाश्वत, सदा सरस बना रहने वाला, नित-नव-रस वाला होता है। यह प्रेमजनित सुख, इन्द्रिय-जनित-सुख और मनोजनित सुख से

निराला होता है। इन्द्रिय-जनित सुख इन्द्रियों के उत्तेजित या सक्रिय होने से होता है। यह सुख जड़ता उत्पन्न करता है, प्रतिक्षण क्षीण होता है और एक समय जब उसकी पूर्ति हो जाती है तो उससे तृप्ति हो जाती है। वही तृप्ति नीरसता व अतृप्ति में बदल जाती है। फलतः रस या सुख पाने के लिए फिर से नई कामना-वासना की उत्पत्ति होती है और कामना-उत्पत्ति-पूर्ति का एक चक्र सतत चलता रहता है। केवल भ्रम से सुख प्रतीत होता है, परन्तु वास्तव में उसका अस्तित्व कहीं होता ही नहीं है। यह सुख का आभास मात्र है, अस्तित्वरूप नहीं होता। अस्तित्व रूप होता तो कुछ काल तो टिकता। कुछ काल टिकता तो यों शाश्वत भी हो जाता। परन्तु प्रेम के सुख में उपर्युक्त कोई बात नहीं होती है। उदाहरणार्थ हम किसी को दुःखी देखकर करुणित हुए और सेवा से उसके दुःख को दूर किया, इससे जो प्रसन्नता या सुख मिला, वह सुख हमारी किसी इन्द्रिय या मन को उत्तेजित नहीं करता। इस सुख से न हम थकते ही हैं, न ऊबते ही हैं और न यही चाहते हैं कि यह प्राणी या अन्य कोई प्राणी अधिक से अधिक दुःखी हो ताकि हमें अधिक से अधिक सेवा का अवसर मिले, जिससे हमारी प्रसन्नता अधिक बढ़े। न यह प्रसन्नता क्षीण ही होती है, न नष्ट होती है, न नीरसता में ही बदलती है, न इससे अतृप्ति होती है, न तृप्ति। न इस प्रसन्नता में यह नई कामना ही जन्म लेती है कि अन्य प्राणी और दुःखी हों ताकि हमें अपनी प्रसन्नता बढ़ाने का अवसर मिले। प्रत्युत इस प्राणी के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो यही भावना रहती है। केवल यही सुख-ऐसा सुख है जो राग-द्वेष को खा लेता है कारण कि प्राणी राग या कामना करता ही केवल अपनी नीरसता मिटाने के लिए है। यह बात दूसरी है कि उसकी नीरसता मिटती नहीं।

प्रेम से जीवन में सरसता आ जाती है, अतः उसे राग या कामना उत्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं होती है। कामना या राग की पूर्ति में बाधा डालने वाले व्यक्ति के प्रति ही द्वेष या वैरभाव उत्पन्न होता है और जब राग या कामना नहीं रही तो उसमें बाधा डालने की बात ही उत्पन्न नहीं होती, अतः द्वेष या वैर उत्पन्न होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वास्तविकता तो यह है कि मोह राग-द्वेष-स्वार्थभाव से युक्त उत्पन्न होता है और सेवा या प्रेम स्वार्थभाव को खा लेता है, वह गल जाता है। अतः इसमें वीतरागता का प्रादुर्भाव होता है। वीतरागता और प्रेम का घनिष्ठ तथा निकट का संबंध है। प्रेम परमात्मा का स्वभाव है। सरसता, चिन्मयता, अमरता ही जीवन है। ये तीनों बातें प्रेम का स्वभाव ही हैं, अतः प्रेम ही जीवन है, प्रेम ही सुख है, प्रेम ही सरसता है, प्रेम ही चिन्मयता है, प्रेम ही अमरता है किन्तु प्रेम की इन विशेषताओं को-अलौकिकताओं को वही जान सकता है या अनुभव कर सकता है, जिसने कभी प्रेम का रस चखा है।

मोह और प्रेम में एक अंतर स्पष्ट है कि इन्द्रिय-सुख, विषय-सुख या भौतिक-सुख में जिस वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति, धन या सुख-सामग्री से सुख मिलता है उस सुख-भोक्ता मोहित व्यक्ति की, ऐसी कामना बार-बार उत्पन्न होती रहती है कि उस सुख-सामग्री की अधिकता हो, या वह अवसर बार-बार उत्पन्न हो। परन्तु प्रेमी को जिसकी सेवा करने में सुख मिलता है, उस प्रेमी की यह भावना नहीं रहती है कि सामने वाले व्यक्ति को अधिक या बार बार दुःख की उत्पत्ति हो। वह तो चाहता है कि इसे या किसी को भी दुःख की उत्पत्ति ही न हो। इसी में उसकी सफलता निहित है। सेवा उसका साधन है, माध्यम है, सामने वाले प्राणी की प्रसन्नता उसका लक्ष्य है। सेवा औषध है। प्राणी का दुःख रोग है एवं सुख नीरोगता है। महत्त्व नीरोगता का है, मूल्य औषध का है। मोही व्यक्ति मोह उत्पन्न करने वाली साधन-सामग्री को महत्त्व देता है एवं उसे मूल्यवान मानता है तथा ऐसे अवसरों को बारबार चाहता है। संसार में सेवा के अवसर प्राप्त हों, इसलिए प्राणियों को दुःखों की उत्पत्ति हो, प्रेमी ऐसा कभी नहीं चाहता। वह तो चाहता है कि ऐसी दुःखद स्थिति उत्पन्न ही न हो जिससे सेवा का अवसर मिले। प्रेमी सेवा को औषध व दूसरों के दुःखों को रोग के समान समझता है जबकि मोही व्यक्ति भोग को भोजन मानता है, भोग्य-सामग्री में उसकी जीवन बुद्धि होती है।

जैन-धर्म में प्रेम को मैत्री, वात्सल्य, प्रमोद, अनुराग भाव कहा है और मोह को राग-रति-हास्य (हर्ष) भाव कहा है। प्रीति मानव का सहज भाव या स्वभाव है, मोह का भाव विकार या विभाव है। सेवा, प्रेमभाव का क्रियात्मक रूप है और भोग, मोह का क्रियात्मक रूप है। स्वभाव विभु, असीम, अनंत होता है और उसका क्रियात्मक रूप ससीम होता है। कामना-पूर्ति जन्य सुख अर्थात् विषय-भोग मानसिक रोग है, कारण कि किसी भी इन्द्रिय का भोग मन में रागभाव या मोह का विकार उठे बिना नहीं भोगा जा सकता है। मन में राग या मोह का उठना मानसिक रोग है। मानसिक रोग, शारीरिक रोग से भी अधिक भयंकर एवं हानिकारक होता है, उसको मिटाना सरल नहीं है।

सेवा या प्रेम में प्रतिफल की आशा नहीं होती है। जहाँ प्रतिफल की इच्छा होती है वह भोग है, वह सौदा है- सेवा नहीं है। प्रेम में एकमात्र देने का भाव होता है लेने का नहीं। रोग मिटाने के लिए औषधि होती है, न कि औषध खाने के लिए रोग उत्पन्न करना। लक्ष्य रोग को मिटाना है न कि रोगी पैदा करना। मोह भाव वह है जिसमें अपना सुख शामिल होता है। प्रेम या सेवा वह भाव है जिसमें दूसरों का सुख ही लक्ष्य होता है।

-82/ 127, मानसरोवर, जयपुर-302020(राज.)

प्रासङ्गिक

मैत्री एवं क्षमा का पर्व : संवत्सरी

श्री दुलीचन्द जैन

जैन धर्म में पर्युषण को पर्वाधिराज की संज्ञा दी गई है। यह भाद्रपद मास में प्रायः भाद्र कृष्णा 12-13 से भाद्र शुक्ला चतुर्थी पंचमी तक प्रतिवर्ष 8 दिनों के लिए मनाया जाता है। पर्युषण पर्व आत्मशुद्धि का पर्व है। पर्युषण में पूर्वबद्ध कर्मों को दग्ध किया जाता है, अतः इसे आत्म-जागरण का पर्व भी कह सकते हैं। इस पर्व को 'पर्युपशमन' भी कहते हैं अर्थात् विचारों को कषायरहित करना एवं समभावपूर्ण बनाना। पर्युषण पर्व के आठ दिनों में जैन धर्मावलम्बी व्रत, उपवास, स्वाध्याय, साधना, प्रतिक्रमण आदि विशेष उत्साह से करते हैं। इस पर्व पर पंचाचार के पालन पर जोर दिया जाता है, यथा-

1. **गुरु दर्शन**- साधु-संतों एवं साध्वियों के दर्शन करना, उनके व्याख्यान सुनना।
2. **साधर्मिक वात्सल्य**- धर्मप्रेमी बंधुओं से मिलना एवं उनके साथ सौहार्दवर्द्धक व्यवहार करना।
3. **तपस्या**- आठ दिनों तक एकाशन, उपवास, बेला, तेला, अठाई आदि तपस्याएँ करना।
4. **जीव दया**- निर्दोष मूक प्राणियों की रक्षा एवं उनके प्रति जीवदया का व्यवहार करना।
5. **परस्पर क्षमापना**- चौरासी लाख योनियों के समस्त जीवों के प्रति क्षमा-भाव का आदान-प्रदान करना।

इन दिनों में आत्म-शुद्धि के लिए प्रतिदिन निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देकर विकारों की शुद्धि का प्रयत्न किया जाता है:-

1. **आलोचना**- अपने अंतर के भावों का निरीक्षण।
2. **निन्दना**- आत्मदोषों के लिए आत्मनिन्दा भाव।
3. **गर्हणा**- गुरु या बड़े लोगों के सामने अपनी भूलों को स्वीकार करना।
4. **क्षमापना**- मन, वचन, काय से किये गए व्यवहारगतदोषों के लिए दूसरों से क्षमायाचना करना।
5. **प्रतिक्रमण**- व्रत में लगे अपराधों एवं दोषों के लिए प्रायश्चित्त करना, जिससे पुराने

पाप धुल जायें एवं पाप न करने का संकल्प मजबूत हो जाये।

दिगम्बर समाज पर्युषण को दशलक्षण पर्व के रूप में मनाता है, क्योंकि इन दिनों में प्रत्येक दिन एक धर्मतत्त्व का विवेचन एवं उस पर चर्चा की जाती है। धर्म के ये दस प्रकार हैं- क्षमा, निर्लोभता, सरलता, मृदुता, लघुता, सत्य, संयम, तप, त्याग और ब्रह्मचर्य।[1] इसके साथ प्रतिदिन तत्त्वार्थसूत्र का पाठ और उस पर विवेचन होता है। इस प्रकार पर्युषण पर्व आठ कर्म-शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का सुअवसर है।

इन दिनों में हमें हमारे वर्ष भर का लेखा जोखा करना चाहिये। एक कवि के शब्दों में हम चिन्तन करें:-

> ''कितना छोड़ सका परनिन्दा, कितना अपने आपको देखा।
> कितना रख पाया हूँ अब तक, अपने पाप-पुण्य का लेखा।
> क्रोध, मोह, मद कितना छोड़ा, नाता काम क्रोध से तोड़ा।
> विषय-वासनाओं से हटकर कितना निज को निज में जोड़ा।।''

हम संसार के प्राणी चार कषायों से पीड़ित हैं। चार कषाय हैं:- क्रोध, मान, माया और लोभ। आगम में इनको चार भागों में विभक्त किया गया है:- (1) अनन्तानुबन्धी, (2) अप्रत्याख्यानी, (3) प्रत्याख्यानावरण एवं (4) संज्वलन। भगवान् ने कहा है-

> ''कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
> वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छन्तो हियमप्पणो।।[2]

अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ- ये चारों दुर्गुण पाप की वृद्धि करने वाले हैं। जो अपनी आत्मा की भलाई चाहते हैं, उन्हें इन दोषों का परित्याग कर देना चाहिये। भगवान् ने यह भी कहा-

> ''कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
> माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।''[3]

अर्थात् क्रोध प्रीति को नष्ट करता है, मान विनय को नष्ट करता है, माया मैत्री को नष्ट करती है और लोभ सब कुछ नष्ट कर देता है।

इन कषायों पर हम कैसे विजय प्राप्त करें? तो भगवान् ने बताया:-

> ''उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
> मायं च अज्जवभावेण, लोभं संतोसओ जिणे।।''[4]

अर्थात् क्रोध को उपशम-क्षमाभाव से, मान को मृदुता से, माया को सरलता से और लोभ को संतोष से जीतें।

उत्तराध्ययन सूत्र के 23 वें अध्ययन 'केशी-गौतमीय' में भी इस विषय पर सुंदर

प्रकाश डाला गया है। केशी श्रमण भगवान् पार्श्वनाथ के चतुर्थ पट्टधर थे और तीन ज्ञान के धनी थे। गणधर गौतम भगवान् महावीर के प्रथम गणधर थे और चार ज्ञान के धनी थे। केशी श्रमण गणधर गौतम से पूछते हैं- तुम हजारों शत्रुओं के बीच में खड़े हो, तुम उन पर कैसे विजय प्राप्त करते हो? गणधर गौतम उत्तर देते हैं:-

"एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिआ दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्वसत्तू जिणामहं।।"[5]

अर्थात् मैंने एक को जीत लेने से पाँच को जीत लिया, पाँच को जीत लेने से मैंने दस को जीत लिया और दसों को जीत लेने से मैंने सब शत्रुओं को जीत लिया है। क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाय तथा मन को मिला कर पाँच तथा श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रस और स्पर्शन ये पाँच इन्द्रियाँ मिलकर दस शत्रु हैं। इन्हें भली-भाँति जीतकर, हे महामुने! मैं विचरण करता हूँ।

गणधर गौतम ने यह भी कहा-

"कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुयसीलतवो जलं।
सुयधाराभिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहन्ति मे।।"[6]

अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ- ये चार कषायरूपी अग्नियाँ हैं। श्रुत और तप जल है। श्रुतादि रूप जलधारा से सिंचित होने पर ये अग्नियाँ मुझे नहीं जलातीं।

इस प्रकार इन आठ दिनों में हमें कषायों के उपशमन का प्रयास करना चाहिये। कषायों के उपशमन से हमारे मन में मैत्री और क्षमा की भावना जाग्रत हो जाती है। इसीलिए पर्युषण का आठवां दिवस संवत्सरी क्षमापना दिवस के रूप में मनाया जाता है। भगवान् महावीर ने कहा, "**मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।**"[7] अर्थात् मेरी संसार के सभी प्राणियों से मैत्री है, मेरा किसी से वैर नहीं है। आज के दिन जिस किसी व्यक्ति के प्रति भी हृदय में शल्य हो, किसी प्रकार की शत्रुता हो, द्वेष हो, उससे हमें विशुद्ध अत:करण से क्षमा मांगनी चाहिये।

भगवान् महावीर का जीवन क्षमा का उत्कृष्ट आदर्श उपस्थित करता है। उनके साढ़े बारह वर्ष के साधनाकाल में अनेक उपसर्ग आये, पर उन्होंने अपूर्व कष्ट-सहिष्णुता, तितिक्षा और क्षमा के द्वारा उनको सहन किया। उनके जीवन के अनेक उदाहरण बड़े ही प्रेरक हैं। श्रमण महावीर कनकखल नामक ग्राम के पास से गुजर रहे थे। वहाँ कुछ ग्वालों ने उन्हें आवाज दी, "देव! आप रुक जायें। इस रास्ते में आगे एक भयावह काला नाग रहता है, जिसने अपनी विष-ज्वाला से अगणित राहगीरों को भस्मसात् कर डाला।" लेकिन महावीर आगे ही बढ़ते गए और आगे जाकर ध्यान-मग्न हो गए। उस नाग ने उन्हें देखा और

उसे भयंकर क्रोध आया। उसने पूर्ण शक्ति से उन्हें बार-बार दंश मारा, लेकिन वह निष्फल गया। उलटे वहाँ से दूध की धारा बहने लगी। महावीर का ध्यान पूर्ण होने पर उन्होंने उसे उद्‌बोधन दिया, ''चण्डकौशिक! समझो! समझो! अब शान्त हो जाओ।'' महावीर के वचन सुनकर नागराज का क्रोध शान्त हुआ और उसे जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त हो गया। तीव्र क्रोध के कारण उसने पूर्व जन्मों में कितने-कितने कष्ट उठाये, यह स्मरण हो आया। वह शान्त होकर भगवान् के चरणों में गिर गया।[8]

इसी प्रकार साधना के ग्यारहवें वर्ष में भगवान् श्रावस्ती के पास पेढ़ाल आश्रम में कायोत्सर्ग कर खड़े थे तथा उत्कृष्ट ध्यान-प्रतिमा में लीन थे। उनके तन, मन व प्राण अकम्प एवं स्थिर थे। उसी समय संगम नामक एक देव उनकी अग्नि परीक्षा के लिए आ पहुँचा। एक ही रात्रि में उसने 20 भयंकर उपसर्ग दिये, इतने प्राणघातक कष्ट दिये कि वज्रहृदय भी दहल जावे, पर महावीर का एक रोम भी प्रकम्पित नहीं हुआ। वे अपनी नासाग्र दृष्टि से तिल भर भी नहीं डिगे। आखिर दुष्ट संगम का अहंकार चूर्ण हुआ और उसने महावीर से क्षमा मांगी।

क्षमा आत्मा का स्वभाव है, क्रोध आत्मा का विभाव है। इसीलिए कहा है-

''जो तोकू कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वांको है तिरसूल।।''

क्षमा कौन कर सकता है? वही जिसका जीवन पवित्र हो, निष्कलुष हो, शुद्ध हो-

''सोहि उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठइ।''[9]

अर्थात् सरल आत्मा की ही शुद्धि होती है।

भगवान् महावीर से पूछा गया- क्षमापना से जीव को क्या लाभ प्राप्त होता है? भगवान् ने उत्तर दिया- ''क्षमापना से जीव को चार लाभ मिलते हैं:-

1. चित्त की प्रसन्नता (मानसिक शान्ति)
2. सभी जीवों से मैत्री भाव
3. भावनाओं की विशुद्धि
4. निर्भयता।

क्षमा को सर्वश्रेष्ठ तप कहा गया है:-

''क्षमा तुल्य कोउ तप नहीं, सुख संतोष समान।
नहीं तृष्णा सम व्याधि है, धर्म दया सम आन।।''

वीर पुरुष ही क्षमा कर सकता है। उज्जयिनी के राजा उदायन के पास अनिलवेग नामक विशिष्ट हाथी और गुलिका नाम की अनिन्द्य सुंदरी दासी थी। उन दोनों को

सिन्धुसौवीर के चंडप्रद्योत राजा ने चुरा लिया। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। चंडप्रद्योत गिरफ्तार हो गया। उसको लेकर जब राजा उदायन लौट रहा था तो मंदसौर के निकट पहुँचने पर पर्युषण पर्व प्रारम्भ हो गया, अतः उदायन ने वहाँ आठ दिनों का पड़ाव डाल दिया और धर्माराधना करने लगा। दोनों राजा जैन थे। संवत्सरी के दिन प्रतिक्रमण करके उदायन राजा चंडप्रद्योत के पास गए और उनसे क्षमा याचना कीः-

> "खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
> मित्ती मे सव्वभूएसु, वेर मज्झं न केणइ।।"[10]

चंडप्रद्योत ने कहा-"आप क्षमापना पर्व की मजाक क्यों उड़ाते हो? मुझे बंदी बनाकर क्षमायाचना कैसे कर सकते हो?" इस पर उदायन ने चंडप्रद्योत से क्षमा मांगी और उसे मुक्त कर दिया। चंडप्रद्योत का भी हृदय बदल गया।

अन्तकृद्दशांग सूत्र में गजसुकुमाल मुनि का उत्कृष्ट उदाहरण आता है। वे महायोगी श्रीकृष्ण के छोटे भाई थे। भगवान् अरिष्टनेमी की मात्र एक देशना सुनी और वैराग्य का भाव जागृत हो गया। दीक्षा लेकर उन्होंने भगवान को कहा-"मैं आज ही श्मशान भूमि में जाकर एक रात्रि की भिक्षु प्रतिमा धारण करना चाहता हूँ। प्रभु ने आज्ञा दे दी। वे वहाँ जाकर अंतर्ध्यान में लीन हो गये। उसी समय सोमिल ब्राह्मण वहाँ से गुजरता है। उसकी सुपुत्री की सगाई गजसुकुमाल से हुई थी। उनको मुनि वेष में देखकर वह कुपित हो जाता है तथा उनके सिर पर जाज्वल्यमान अंगारे रख देता है। वे मुनि क्षमा के अथाह सागर में डुबकी लगा रहे हैं, क्षपकश्रेणी पर चढ़ कर शुक्ल ध्यान को प्राप्त कर मोक्ष पहुँच जाते हैं।

क्षमापर्व 'जीओ और जीने दो' का मंत्र सिखाता है। यह मैत्री भावना का मूल स्रोत है। 'मेरी भावना' में कहा है-

> "मैत्रीभाव जगत में मेरा सब जीवों पर नित्य रहे।
> दीनदुःखी जीवों पर मेरे उर से करुणा स्रोत बहे।।"

आइये, हम सब इस मंत्र को अपने हृदय में धारण करेंः-

> बड़े प्रेम से हिल मिल सीखें, मैत्री मंत्र महान रे।
> औरों से लें क्षमा स्वयं, औरों को करें प्रदान रे।।

संदर्भ सूचीः-

1. स्थानांग सूत्र, 10
2. दशवैकालिक सूत्र, 8.37
3. दशवैकालिक सूत्र, 8.38
4. दशवैकालिक सूत्र, 8.39
5. उत्तराध्ययन सूत्र, 23.36
6. उत्तराध्ययन सूत्र, 23.38
7. आवश्यकनिर्युक्ति गाथा 392
8. त्रिषष्ठिशलाकापुरुष 10.3
9. उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय 29.18
10. आवश्यक सूत्र 4.5

-चेयरमेन, करुणा अन्तरराष्ट्रीय, 70, टी.टी.के. रोड़, अल्वारपेट, चेन्नई-600018

सम्वत्सरी

जिज्ञासा-समाधान

जिज्ञासा– जिनवाणी अप्रेल 2012 'सम्वत्सरी अंक' के सम्पादकीय में आपश्री ने जो यह निष्कर्ष ग्रहण किया है कि "सारी समस्या का मूल आगम गणितीय मान्यता के स्थान पर लौकिक गणित को स्वीकार करना रहा है" यह तथ्य निर्विवाद है।

पूज्य प्रमोदमुनि जी ने अत्यधिक परिश्रम करके जो आगम के संदर्भ दिये हैं उन पर भी प्रश्न चिह्न नहीं उठाया जा सकता है। यह भी सभी पक्षों को लगभग स्वीकार्य ही है कि युग का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिप्रदा को ही होता है। इसके उपरान्त भी पूज्य प्रमोदमुनि जी कृष्णा प्रतिपदा की तिथि निर्धारण करने में त्रुटि कर गए। पूज्य श्री यह मानते हैं कि जैन पचांग के अनुसार श्रावण व भादवा मास अधिक मास नहीं होते हैं, उनके स्थान पर पौष व आषाढ़ मास अधिक मास होते हैं। अतः जब व्यवहार पंचाग में भादवा मास अधिक बताया गया है तो आगम गणित के अनुसार आषाढ़ मास अधिक मास होगा। ऐसी स्थिति में श्रावण कृष्णा प्रतिपदा एक माह आगे बढ़ जायेगी। तब पचास दिन दूसरे भादवा में ही आयेंगे। इस प्रकार दोनों पक्षों में फिर विवाद ही कहाँ शेष रहेगा?

मैं इस विवाद में पड़ना नहीं चाहता। मेरा तो आपश्री तथा पूज्य श्री से मात्र यही निवेदन है कि संवत्सरी एकता से समाज एकता होगी, यह भ्रांति दूर करनी चाहिए। वस्तुतः संवत्सरी अपनी-अपनी गुरु-आम्नाय के अनुसार ही मनाई जानी चाहिये यह व्यक्तिगत स्तर पर हो तथा संत-समाज व श्रावक-समाज दोनों भादवा में आने वाले संवत्सरी पर्व का आयोजन करे। जैसाकि पूज्यश्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने समय-समय पर प्रयोग किये थे।

-श्री मनोहरलाल जैन, धार (म.प्र.)

समाधान– आपका जिज्ञासायुक्त 9 मई का पत्र 23 जून को प्राप्त हुआ। आपकी सरलता, उदारता, समन्वयशीलता की भावना प्रशस्त है, अनुमोदनीय है। आप सरीखे सुश्रावक रत्नों की संख्या गिनी-चुनी ही रह गई है। अब भी यदि कोई वीतराग वाणी को आगे रखकर सरलहृदय से माध्यस्थ भावपूर्वक प्रयास करे तो कार्य असंभव नहीं। आपके पत्र में उठाये बिन्दुओं पर जैसा ध्यान में आया तदनुसार यहाँ लिखा जा रहा है-

1. आपने लिखा-" यह भी सभी पक्षों को स्वीकार्य ही है कि युग का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को होता है।"

   हाँ, आगम व ग्रंथों से स्पष्ट है कि प्रत्येक संवत्सर, प्रत्येक युग, प्रत्येक आरे और प्रत्येक कालचक्र का प्रारम्भ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को ही होता है। जैसा कि

जंबूद्वीपपण्णत्ति वक्षस्कार 7 सूत्र 154 में स्पष्ट कहा- **'सावणाइया मासा बहुलाइया पक्खा.....।'**

पर ऋतु संवत्सर से आयुष्य की और आरों की गणना होती है- इस प्रकार की मान्यतावश बहुश्रुत पूज्य समर्थमल जी म.सा. एवं उनकी परम्परा में आरों का परिवर्तन श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को मान्य नहीं रहा। जैसा कि श्रुतधर श्री प्रकाशचन्द जी म.सा. के 1991-1992 के पत्र में भी स्पष्ट ही लिखा गया था।

द्रष्टव्य जिनवाणी, अप्रेल 2012 पृष्ठ 35 का अंतिम अनुच्छेद- "जब आगम से दूसरा आरा श्रावण बदि प्रतिपदा को लगना ही स्पष्ट नहीं है तब पचासवें दिन संवत्सरी की बात कैसे कही जाती है।"

सुधर्म संघ से प्रकाशित अनुयोगद्वार सूत्र में काल-प्रमाण के विवेचन में चारों गतियों की आयु को ऋतुमास से गिनने का उल्लेख किया गया है, जबकि आगमकार सुदीर्घ काल में सभी संवत्सरों का सामंजस्य बिठा ही देते हैं। चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र के बारहवें पाहुड में स्पष्ट कहा है-

"ता कया णं एए आइच्च उडु चंदणक्खत्ता संवच्छरा समाइया समपज्जवसिया आंहितेति वएज्जा।" समान आदि-समान अंत अर्थात् वहाँ इन सबका 60 सूर्य वर्ष में, 61 ऋतु वर्ष, 62 चन्द्र वर्ष और 67 नक्षत्र वर्ष पूरे होने के उल्लेख के साथ सामञ्जस्य बिठा दिया गया। उसके अगले सूत्र में अभिवर्धित वर्ष का सामञ्जस्य बिठाने के लिए 780 सूर्य वर्ष के आधार से पाँचों का कथन किया- पूर्णतया स्पष्ट है कि सारी काल गणना- आयु की गणना में सूर्य संवत्सर को आधार बनाया गया है। स्थूल दृष्टि से 365¼ दिन का व शुद्ध गणित से 365 दिन 5 घंटा 48 मिनिट 45.4975456 सैकण्ड का होता है। इस अंतर की शुद्धि के लिए अंग्रेजों को 1752 में 2 सितम्बर के पश्चात् 14 सितम्बर लाकर 11 दिन की शुद्धि करनी पड़ी तथा उसी वर्ष 25 मार्च से प्रारम्भ होने वाला ईस्वी सन् 1753 से 1 जनवरी को प्रारम्भ होने लगा। इस पर विस्तार से अलग से लेख यथासमय लिखने की भावना है।

अस्तु, श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से ही प्रत्येक आरे का प्रारम्भ होता है तथा आयु की गणना सूर्य संवत्सर (अपेक्षा से उसी में सभी का सामञ्जस्य कर) से ही होती है। लंबे समय से चली आ रही केवल ऋतु मास की धारणा का निराकरण अनिवार्य होने से उसे विस्तृत करना पड़ा।

2. दूसरी धारणा जो आपके पत्र में लिखी गई- "जब व्यवहार पंचांग में भादवा मास अधिक बताया गया है तो आगम गणित के अनुसार आषाढ़ मास अधिक होगा।"

हमें तो इस धारणा का कोई भी आगममूल या औचित्यपूर्ण समाधान ध्यान में नहीं। यदि आप स्पष्ट कर सकें तो अच्छा रहेगा। उपलब्ध तथ्यों से जो बातें सामने आती हैं, उनको जिनवाणी में दिया ही गया है, तथापि एक साथ उन्हें यहाँ पुनः प्रस्तुत कर देना उपयोगी है। (अन्य सहयोगी तथ्य भी प्रस्तुत हैं)

(अ) समर्थ समाधान भाग-2 से उद्धृत कर सम्यग्दर्शन 2 मई 2012 पृष्ठ 18 अंतिम अनुच्छेद पर स्पष्ट है- "स्थानांग, समवायांग, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति आदि शास्त्रों से गणित फलावट के अनुसार पौष और आषाढ़ ये दो मास अधिक होते हैं।"

इससे स्पष्ट है कि आगम में तो बढ़ने वाले मासों का कथन ही आया है- उसमें कहीं पर भी पौष या आषाढ़ मास के बढ़ने का उल्लेख ही नहीं हुआ। गणित फलावट से उन्हें पश्चाद्वर्ती ग्रंथों में गिनाया गया है। युगमध्य में पौष बढ़ाना और युगान्त में आषाढ़ बढ़ाना।

जिनवाणी (अप्रेल 2012) पृष्ठ 111 अंतिम अनुच्छेद- "**अधिमासगो जुगस्सगंते मज्झे वा भवति जइ अंते नियमा दो आसाढ़ा भवन्ति अह मज्झे दो पोसा.....।**" अर्थात् "भादवा बढने पर आगम गणित के अनुसार आषाढ़ अधिक होगा।" ऐसा कोई भी उल्लेख न तो किसी आगम में है और न ही किसी भी निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि या टीका में, यह किसी भी ठोस आधार का कथन नहीं।

(आ) जिनवाणी (अप्रेल 2012) पृष्ठ 96-97 पर (इ) लौकिक गणना की मास वृद्धि को आषाढ़-पौष में गिनने का श्रेष्ठ तरीका वर्णित हुआ है। यद्यपि वहाँ वह स्पष्ट ही किया हुआ है, उसे देखकर इन 50 वर्षों में पुनः देखा जा सकता है-

विक्रम संवत् 2050 से 2100 तक - 50 वर्षों की मास वृद्धि-

2050, 2069, 2088-	भाद्रपद	3
2053,2072, 2091	आषाढ़	3
2056, 2064, 2075, 2083, 2094	ज्येष्ठ	5
2058, 2077, 2096	आश्विन	3
2061, 2080, 2099	श्रावण	3
2067	वैशाख	1
2085	चैत्र व कार्तिक वृद्धि तथा मिगसर क्षय(2-1)	1
		19

19 माह बढ़े।

(1) युग का अंत आषाढ़ में हो जाता है। नवीन वर्ष के बढ़े हुए माह को पिछले वर्ष में जोड़ना कैसे उचित हो सकता है?

(2) फिर भी यदि कोई माने तो- (क) अगले दो माह सावण भादवा व पिछले तीन माह चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ को आषाढ़ वृद्धि व शेष को पौष वृद्धि मानने पर इन 50 वर्षों में 16 बार आषाढ़ वृद्धि और मात्र 3 बार पौष वृद्धि होती है। 6 बार चौमासा लौकिक से 1 माह पीछे बैठता है। वर्षा में भी विहार आदि होता है। अतः सावण या भादवा वृद्धि को आषाढ़ वृद्धि के रूप में मानना पूर्णतया अनुपयुक्त है।

(3) आगम में स्पष्ट वर्णित है- जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति वक्षस्कार 7 सूत्र 133 **"सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि सव्वब्भंतराणंतर मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ..।"** सूत्र 134- **"तया णं उत्तम कट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ.....।"**

(जिनवाणी, अप्रेल 2012, पृष्ठ-61 व 76,77 के आधार) पर स्पष्ट है 35^0 अक्षांश- काश्मीर में 14 घंटे 24 मिनिट का दिन 21 जून को होता है। उसी दिन कर्क संक्रान्ति-सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है- नव संवत्सर होता है। सायन गणना से आषाढ़ की पूर्णिमा इसी केन्द्र बिन्दु के इर्दगिर्द (15 दिन पूर्व से 15 दिन पश्चात्) प्रायः आ जाती थी। वर्तमान में निरयन से 14 जुलाई के 15 दिन आगे पीछे आ जाती है। यदि श्रावण या भादवा वृद्धि को आषाढ़ वृद्धि के रूप में स्वीकार करें तो इस वर्ष चातुर्मासी श्रावण शुक्ला चतुर्दशी बुधवार 1 अगस्त को आती है- चौमासी पूर्णिमा (लौकिक रक्षाबंधन) 2 अगस्त को प्रारम्भ होती है, श्रावण बदि प्रतिपदा (लौकिक प्रथम भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा) 3 अगस्त को आती है जो आगमीय सूर्य के नवसंवत्सर से उपयुक्त नहीं हो सकती है। अतः यह कहना कि भादवा बढ़ने पर आगम गणित से आषाढ़ अधिक होगा, यह उचित प्रतीत नहीं होता है।

(4) आचार्य भगवंत पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. का दृष्टिकोण स्पष्ट था- **"विवाद के लिए ना तो समय है ना ही शक्ति।"** अस्तु, किसी भी पुस्तक, पत्र-पत्रिकाओं के लेख के संबंध में टीकाटिप्पणी करने के भाव 'जिनवाणी (संपादक-लेखकों) के नहीं रहते हैं- विनम्रता पूर्वक क्षमायाचना सहित यहाँ तो इतना सा निवेदन है- 70 वें समवाय की व्याख्या में सुधर्म संघ के समवायांग सूत्र में ब्राह्मण समाज द्वारा रक्षाबंधन से पूर्व संवत्सरी के कथनों का जो उल्लेख किया गया है- वह यहाँ रक्षाबंधन पश्चात् चातुर्मास स्थापन करने पर नहीं घटित होगा क्या?

(5) जिनवाणी, अप्रेल अंक के दूसरे भाग में अच्छी तरह 50 वें दिन की महत्ता में

चातुर्मास का उद्देश्य जीव रक्षा वर्णित हुआ है- दो सावण या दो भादवा होने पर उन्हें आषाढ़ वृद्धि मानना- क्या चौमासे के पीछे रही मूल भावना को सार्थक कर पाता है? पौष वृद्धि मानने से 1 माह पूर्व विहार (लौकिक कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा) में जीव-विराधना की वैसी संभावना नहीं हो सकती।

(6) भगवान महावीर की छद्मस्थकालीन 12 वर्ष 13 पक्ष की गणना, अंतिम वर्ष में पौष वृद्धि को स्पष्ट दिखा रही है। जिनवाणी पृष्ठ 80, 81 के अनुमान से उस वर्ष श्रावण माह वृद्धि की संभावना है, जिसे आगमकारों ने पौषवृद्धि स्वीकार किया। यदि उसे पूर्व वर्ष की आषाढ़ वृद्धि माना जाता तो 12 वर्ष 11 पक्ष ही होते जबकि समवेत स्वर से आगम-व्याख्या साहित्य 12 वर्ष 13 पक्ष कह रहे हैं- अतः हमें भी उसी अनुरूप स्वीकार करने में क्या बाधा है?

(7) किसी ठोस आधार पर ही गणना हो सकती है- युगारम्भ से 5 माह को युगान्त में गिना जा सकता है या युगमध्य में। वर्षारम्भ के 5 माह को पिछले वर्ष में गिनना वर्षारम्भ (सावणाइया मासा) को दूषित करता है। ऐसा गिनने पर आसोज और कार्तिक बढ़ने पर भी चौमासा एक माह बाद बिठाना होगा और सभी की संवत्सरी उस वर्ष मनाए जाने वाली संवत्सरी से 1 माह पश्चात् आएगी (ऐसा वर्तमान में कोई मानने को तैयार नहीं) तब फिर केवल सावण भादवा बढ़ने पर उन्हें आषाढ़ वृद्धि मानना और आसोज कार्तिक बढ़ने पर उन्हें पौष वृद्धि मानना इसका आधार क्या? आदि से मध्य तक को युगमध्य कहने में ना तो कोई आगमीय बाधा है, ना लौकिक ही- अपितु यह आगम के अत्यन्त निकट है। ऐसा करने पर 2050 से 2100 तक 50 वर्षों में 9 बार पौष वृद्धि व 10 बार आषाढ़ वृद्धि आती है तथा संवत्सरी प्रतिवर्ष 50 वें दिन बराबर आती है। मात्र 9 बार विहार 1 माह पूर्व होता है। अस्तु गुरु कृपा से हमारे क्षयोपशमानुसार सावण-भादवा वृद्धि को आषाढ़ वृद्धि नहीं मानकर पौष वृद्धि मानना उपयुक्त है।

जिनवाणी पर अभिमत

माह मई की जिनवाणी में आपका सम्पादकीय 'वैराग्य की अर्धशती' पढ़कर अच्छा लगा। उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का गुणानुवाद बहुत ही प्रेरक व प्रभावी ढंग से किया गया है। धीर, गम्भीर एवं समत्व की प्रतिमूर्ति उपाध्यायश्री पूरे समाज के लिए प्रेरणा व ऊर्जा के स्रोत हैं। उनके मुखमंडल पर सदैव प्रसन्नता रहती है, उनकी वाणी में अमृत बरसता है। ऐसे करुणावान, सरल एवं शांत उपाध्याय श्री बार-बार वंदनीय हैं।

-श्री के.एस. गलुण्डिया (से.नि. आई.ए.एस.)
53, लेन नं.2, गोपालबाडी, जयपुर (राज.)

अध्यात्म

आत्मानुसंधान

श्री जितेन्द्र चौरडिया 'प्रेक्षक'

क्या असली नाम है मेरा, क्या है मेरी पहचान?
करनी है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।

मन और इन्द्रियाँ हैं मुझे प्राप्त, पर मैं इनमें से कोई नहीं,
देह-अंगोपांग भी नहीं हूँ मैं, पहचान मेरी है खोई कहीं।
देह-मन-इन्द्रियों के स्वामी की, करना है प्राप्त पहचान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।1।।

क्या हूँ हृदय की धड़कन मैं, या रक्त-प्रवाह हूँ नाड़ी का?
या हूँ मैं वह श्वसन-तंत्र, चालक है जो जीवन-गाड़ी का?
उपरोक्त के संचालक का ही, अब करना है मुझको ज्ञान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।2।।

क्या नर हूँ या तिर्यंच, देव मैं, या हूँ नरक का मैं वासी?
पर शुभाशुभ कर्मों से ही, पाता हूँ योनियाँ चौरासी।
विद्यमान हूँ अनंतकाल से फिर भी, हूँ स्वयं से ही अनजान,
करना है खोज स्वयं की करके स्वयं का अनुसंधान।।3।।

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख नहीं, नहीं जैन-बौद्ध या ईसाई मैं,
न ही ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र, इन वर्णों की इकाई मैं।
जाति और वर्ण-व्यवस्था से भी, होता न मेरा अनुमान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।4।।

सेठ नहीं-व्यवसायी नहीं, उद्योगपति न हूँ अधिकारी,
बाल नहीं मैं वृद्ध नहीं, न ही युवा हूँ मैं न नर-नारी।
पद-प्रतिष्ठा-वय-वेद, मेरा न कोई उपमान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।5।।

न राजा न ही चक्रवर्ती, न ही श्रावक हूँ ना संत-सती,
ये तो सम्यक् पुरुषार्थ रूपी, सत्कार्यों की है परिणति।

व्याप्त है जो इन सबमें उस, चेतन का है करना भान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।6।।

कोई यंत्र भी दुनिया का, कर सके न मुझको ज्ञात,
क्योंकि रूप अरूपी मेरा, और आकृति है अज्ञात।
मेरे अस्तित्व को इसीलिए न खोज सका विज्ञान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।7।।

अनन्तकाल से कर्म-रूपी, शक्ति ने है मुझको जकड़ रखा,
विविध गति-जाति-दण्डक के, कारागृह में है पकड़ रखा।
कर सके पराजित कर्मों को, मैं ही तो हूँ वो बलवान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।8।।

खुले हुए चक्षु से मेरा, हो सकता नहीं है अवलोकन,
सम्यक्त्व ज्योतिर्मय सूक्ष्म नेत्र ही, पा सकते मेरा दर्शन।
साक्षात्कार करूँ निज क्षण में, यदि ऐसा लूँ ठान,
करना है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।9।।

असली नाम आत्मा है मेरा, है उपयोग मेरी पहचान।
करनी है खोज स्वयं की, करके स्वयं का अनुसंधान।।

-11/5, गौतम मार्ग, नयापुरा, उज्जैन-456006 (म.प्र.)

सत्संगति का महत्त्व

सौ. कमला सिंघवी

सत्संग का प्रभाव अचिन्त्य है। ज्ञानी, ध्यानी, त्यागी, योगी आदि ऐसे गुणियों का सत्समागम महान् पुण्य से होता है। एक क्षण का सत्संग पापी से पापी का भी उद्धार कर देता है। कभी क्षणमात्र की सज्जन की संगति, संसार-सागर को पार करने की नाव बन जाती है। महात्माओं को किया हुआ नमस्कार, उनकी सेवा एवं उपदेश-श्रवण द्वारा सकषायी मानव भी शीघ्र शान्त बन जाते हैं। भवचक्र में भ्रमण करते जीवरूपी मुसाफिर को यह सत्समागम अति दुर्लभ है। अतः जिनको ये संयोग मिलते हैं, उनको इनका लाभ अवश्य उठाना चाहिये। सत्संगति में महती आत्मिक शान्ति मिलती है। सत्संग से अल्पज्ञ भी महान् बन जाता है। शास्त्रों का वाचन, स्वाध्याय, चिन्तन-मनन भी सत्संग है। एकाग्रता के साथ स्वाध्याय करने से शान्ति अनुभव होती है। सत्संग के सान्निध्य से साधक कर्मों की महान् निर्जरा करता है। सत्संगति चिन्तामणि रत्न से श्रेष्ठ होती है। *-अध्यापिका, जैन पाठशाला, ज्ञान मंदिर, भडगाँव (महा.)*

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (16)

आचार्य श्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-सम्पादक

महाराज साहब,

आपका गत पत्र पढ़कर एक ओर जहाँ मन का बोझ कम हो गया है
वहीं दूसरी ओर वह ग्लानिमय भी हो गया है।
मन हलका इसलिए है कि
साधक की कक्षा में स्थित आत्मा के लिए पूर्णतया दोषरहित जीवन की
अपेक्षा नहीं रखी जा सकती यह सम्यक् समझ मुझे प्राप्त हो गई,
जबकि ग्लानि का अनुभव इसलिए है कि
भूतकाल में जब भी साधकों के जीवन में मुझे गलतियाँ दिखी हैं
उनकी मैंने भरपूर निंदा की है।
खैर, मैं आपको वचन देता हूँ कि
आज के बाद मैं जीवन में यह गलती कभी नहीं करूँगा।
पर इसके बावजूद मैं यह जानना चाहता हूँ कि
ऐसी गलतियाँ जीवन में न हों इसलिए मुझे कौन सा स्वर्णिम सूत्र याद रखना चाहिए?

यश,

यह रहा वह स्वर्णिम सूत्र-
"यदि आप युद्ध जीतना चाहते हैं तो लड़ाई हार जाने के लिए तैयार रहिए।"
तुम्हें ज्ञात होगा ही कि अंग्रेजी में युद्ध को War कहा जाता है
और लड़ाई Battle।
हमारे बीच जो पत्र व्यवहार चल रहा है उसके संदर्भ में

तुम्हें समझाऊँ तो पारमार्थिक सत्य है युद्ध के स्थान पर,
जबकि व्यावहारिक सत्य है लड़ाई के स्थान पर!
हित है युद्ध के स्थान पर, जबकि प्रेय है लड़ाई के स्थान पर!
सहकारिता की भावना है युद्ध के स्थान पर,
जबकि स्वार्थीपन है लड़ाई के स्थान पर!
बड़े भैया के साथ तुम्हारे संबंध खोखले हो गए थे,
क्योंकि तुम लड़ाइयाँ जीतने में मशगूल थे।
आज बड़े भैया के साथ तुम्हारे संबंध मधुर बन चुके हैं,
क्योंकि तुम लड़ाई को हार जाने की हिम्मत दिखा सके हो।
क्या लिखूँ तुम्हें?
दुःख तो मुझे इस बात का हो रहा है कि
आज के बहुजनवर्ग को युद्ध और लड़ाई के बीच का
अंतर ही पता नहीं है अथवा यह वर्ग लड़ाई को ही युद्ध मान बैठा है।
जेठानी का बेटे को ज्यादा दूध पीने को मिलता है,
देवरानी पूरा घर सर पर उठा लेती है।
देवरानी को सोने की दो चुड़ियाँ ज्यादा मिलती हैं,
जेठानी घर में महाभारत का निर्माण कर देती है।
भाभी की अलमारी में नयी चार साड़ियाँ दिखती हैं,
देवरानी अपने पति को शिकायत करने लगती है।
देवरानी दोपहर में दो घण्टे सो जाती है,
भाभी अपने पति के पास "मुझ पर अन्याय हो रहा है" ऐसी
शिकायत करने लगती है।
बड़े भैया सप्ताह में दो दिन ऑफिस नहीं आते
"मुझ अकेले को ही काम करना पड़ता है।" ऐसा छोटा भाई सोचने लगता है।
छोटा भाई ऑफिस में मित्रों के साथ गप्पे लगाता है,
"यह तो धंधे में दिवाला निकाल देगा।" ऐसा बड़ा भाई सोचने लगता है।
यश,
अधिकांशतः हर घर में आज यही चल रहा है या कुछ और?

इसका परिणाम यह आया है कि
संयुक्त परिवार प्रायः टूट चुके हैं।
कहीं सभी इकट्ठे रहते हुए दिखाई देते भी हैं तो वहाँ भी
प्रसन्नता, आनंद, उत्साह नहीं है।
हैं केवल शिकायतें।
उन शिकायतों का हो रहा है स्पष्टीकरण!
घर का वातावरण कोर्ट से भी बदतर
बन गया है क्योंकि वहाँ सिर्फ फरियादी और
वकील ही हैं, परंतु फैसला करके वातावरण को स्पष्ट कर दे ऐसा
कोई न्यायाधीश नहीं है। और न्यायाधीश बनने की जिनमें पात्रता थी
उन माता-पिता को बेटों की मेहरबानियों से वृद्धाश्रम में
'अतिथि' का दर्जा मिल गया है।

महाराज साहब,

आपका पत्र पढ़कर मैं सुबक-सुबककर रो पड़ा।
आपने मानो मेरी दुःखती नस पर हाथ रख दिया है।
मेरे अपने भूतकाल पर दृष्टिपात करके देखता हूँ तो वहाँ मुझे
वही दिखता है जो आपने गत पत्र में लिखा है।
मैं घर में नहीं मकान में रहता था।
बड़े भैया मुझे स्वजन नहीं दुश्मन ही लगते थे।
मैं सोता था वातानुकूलित कमरे में,
परन्तु मेरा दिल सदा संतप्त रहता था और बिलकुल सच कहूँ तो
मन भीतर ही भीतर बड़े भैया की मौत की प्रतीक्षा कर रहा था!
वैसे आज तो परिस्थिति पूर्णतया बदल चुकी है।
युद्ध और लड़ाई किसे कहते हैं?
यह मुझे स्पष्ट रूप से समझ में आ चुका है।
क्रोध के द्वारा मिलने वाली विजय के सामने
क्षमा के मार्ग पर मिलने वाली पराजय लाख गुना अच्छी है

यह बात बहुत अच्छी तरह मेरे मस्तिष्क में बैठ गई है।
'छोड़ देने' की हिम्मत को आत्मसात् किए बिना
संबंधों की आत्मीयता को चिरस्थायी नहीं बनाया जा सकता।
दुःख तो आज मुझे इस बात का हो रहा है कि
जिन्दगी के इतने वर्षों में ये सत्य मुझे कभी
सुलभ हुए ही नहीं।
निंदा, स्पर्धा और ईर्ष्या,
इन तीनों वृत्तियों से चित्त सदैव ही घिरा रहा।
भूल-भ्रमणा और पलायनवृत्ति-
इन तीनों ने ही जीवन पर संपूर्ण अधिकार जमा लिया।
उद्विग्नता-उदासी और उत्तेजना
इन तीन अनुभवों से ही जीवन व्याप्त बना रहा।
खैर, मेरे परम सद्भाग्य से आज जब मैं उस कीचड़ से बाहर निकल ही गया हूँ तब आज के बाद जीवन में भूतकाल में की हुई गलतियों की पुनरावृत्ति न करने के मेरे निष्ठायुक्त प्रयासों को सफलता मिलती ही रहे ऐसे आशीर्वाद आप मुझे दीजियेगा।
यश,
'सत्यनिष्ठ' और 'सावधान' इन दो सोपानों के बाद
जीवन को स्वस्थ रखने वाला एवं संबंधों में मधुरता बनाए रखने वाला
तीसरा सोपान है-
'सारग्राही बनिए।'
गेहूँ के साथ कंकर होते ही हैं, परंतु
गृहिणी कंकर को दूर करके गेहूँ को सम्हाल लेती है
यह है सारग्राहिता।
पौधे पर काँटे गुलाब के आस-पास होते ही हैं, परन्तु
माली काँटों को पौधे पर ही छोड़कर
गुलाब को चुन लेता है यह है सारग्राहिता।
कच्चे रास्ते पर शक्कर के कणों के आसपास चाहे

धूल फैली रहती है,
चींटियाँ धूल को ऐसे ही रहने देकर शक्कर को
अपने मुँह में ले लेती हैं, यह है सारग्राहिता।
बस, यही रवैया तुम्हें संबंधों के विषय में
अपनाते रहना है।
बातचीत करते-करते कभी बड़े भैया आवेश में आ गए हों,
किसी बात में भाभी की ओर से तुम्हारी पत्नी के साथ अन्याय हुआ हो,
बड़े भैया के बच्चे कभी तुम्हारे बच्चों के साथ लड़ पड़े हों,
तुम्हारी सच्ची बात को कभी बड़े भैया ने काट दिया हो,
भाभी की गलती होने पर भी कभी उन्होंने तुम्हारी पत्नी पर
आक्षेप किया हो-
ये और ऐसे अनगिनत प्रसंग तुम्हारे घर,
ऑफिस, व्यापार और जीवन में उपस्थित हों ऐसी पूर्ण संभावना है।
उस वक्त तुम्हें 'सारग्राही' ही बनना है।
सकारात्मक दृष्टिकोण, सर्जनात्मक मानसिकता,
सुमधुर वचन प्रयोग। बस! संबंधों की मधुरता
अवश्य टिक जायेगी।

(क्रमशः)

साहित्य-सम्पादक की आवश्यकता

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को एक निष्णात साहित्य-सम्पादक एवं प्रूफ संशोधक की आवश्यकता है। सम्पादक हिन्दी के साथ संस्कृत, प्राकृत एवं अंग्रेजी भाषा का जानकार हो तो, उसको प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक विद्वान् अपना आवेदन पूर्ण पते, योग्यता एवं अभिलषित मानदेय के साथ निम्नांकित पते पर प्रेषित करें।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003,
फोन-0141-2575997, फैक्स-2570753

युवा-स्तम्भ

श्रावकाचार में विद्यमान विकृतियाँ

श्री पारसमल चण्डालिया

एक समय था जब श्रावक श्रमणों का भी मार्गदर्शन करते थे। पूणिया श्रावक को कौन नहीं जानता? कितना साहस, तेज और आत्मबल होगा उस पूणिया श्रावक में। उसकी दृढ़ता के आगे सम्राट् श्रेणिक को भी नतमस्तक होना पड़ा। सुदर्शन श्रमणोपासक की दृढ़ता के सम्मुख मुद्‌गरपाणियक्ष को हार माननी पड़ी तो अहन्नक श्रावक की धर्मदृढ़ता और सत्यवादिता के आगे देव को झुकना पड़ा। आनंद और कामदेव इतिहास के पृष्ठों में बोल रहे हैं। धर्ममय जीवन व्यतीत करने वाले ऐसे आदर्श श्रावकों का जीवन हमारे लिए प्रकाश स्तंभ के समान है। किन्तु आज हमारे में इतना आत्मबल और साहस नहीं है कि हम किसी को कुछ कह सकें, जबकि श्रावक की आवाज में बल और तेज होना चाहिये। उसकी जबान नहीं, आचरण बोलना चाहिये। क्योंकि व्यक्ति का बाह्य व्यवहार एवं आचरण उतना ही महत्त्व रखता है जितना उसका आंतरिक और आध्यात्मिक जीवन। आज अधिकांश श्रावकों का जीवन तनावग्रस्त एवं अशांत है, क्योंकि-

हिंसा चोरी और कुशील लोगों के मन को भाया।
सिद्धान्तों को ताक में रखकर जीवन अशांत बनाया।।

आज अणुव्रतों का पालन नहीं हो रहा है और अपरिग्रह जैसे मूल्यवान सिद्धान्त को ताक पर रख दिया गया है। इससे समाज में सहिष्णुता और सरसता की भावना समाप्त हो कर संग्रह की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। अहिंसा के सिद्धान्त को मानकर छोटे से छोटे जीव की हिंसा न हो, इस बात का तो हम बराबर ध्यान रखते हैं, परन्तु मानव का शोषण, आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का संग्रह और संचय करना त्याज्य है, यह हम भूल गये। व्यापार में, घर में या व्यवहार में, दहेज के लेन-देन में सब ओर धन संग्रह की प्रवृत्ति प्रमुख होने से वाणी और कार्यों से मनुष्यों की हिंसा कर रहे हैं। ऐसे दृष्टान्त आज सामने हैं जहाँ जैन परिवारों के घरों में दहेज के लिए बहुओं को सताया ही नहीं जा रहा है, उन्हें मार भी डाला गया है। आज व्यापार में नैतिकता को प्रमुखता न देकर धन-संग्रह को प्रमुखता दी

* आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के सान्निध्य में 5-6 नवम्बर 2012 को जोधपुर में आयोजित 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी में प्रेषित आलेख।

जा रही है। इसके लिए चोरी, कपट, मिलावट सब किये जा रहे हैं और इसका निषेध होते हुए भी इन कार्यों को करने में जरा भी हिचहिचाहट नहीं हो रही है।

आज समाज में जहाँ मुट्ठीभर सदस्य वैभव-प्रदर्शन को अपना अधिकार समझ बैठे हैं वहाँ अधिसंख्य सदस्य उनके देखादेखी अनैतिक तरीकों से अर्थोपार्जन करने की ओर प्रवृत्त होने की चेष्टा करते हैं। श्रावक जीवन के आदर्शों से उनके क्रियाकलाप मेल नहीं खाते। वे अपने स्वधर्म से विमुख हो रहे हैं। मिलावट, कालाबाजारी, हिसाब में हेरफेर, संग्रह की मनोवृत्ति अपना शिकंजा कसती जा रही है और श्रावक अपने लक्ष्यों से पथ भ्रष्ट होता जा रहा है। श्रावक धर्म के क्या कर्त्तव्य हैं, उन्हें वह भूल बैठा है। वह धर्माचरण, व्रत-उपवास, आत्मचिंतन, स्वाध्याय आदि से उन्मुख हो चुका है। उसका सारा समय भौतिक लक्ष्यों की प्राप्ति में लगा रहता है। आज उसके पास इतना समय नहीं कि वह दो घंटे धर्मस्थानक में जाकर धर्म-चर्चा सुन सके। एक घण्टा सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय एवं आत्म-चिंतन कर सके। साधर्मी के दुःख-दर्द में हिस्सा बंटा सके। किसी सामाजिक कार्य में अपनी सेवा दे सके एवं परोपकारी कार्यों में अपने को लगा सके। निश्चित ही ये प्रवृत्तियाँ श्रावकाचार के लिए घातक हैं।

श्रावकाचार का स्वरूप- जैन धर्म के अनुसार साधकों को दो भागों में विभक्त किया गया है- श्रमण और श्रावक। श्रावक शब्द 'श्रु' धातु से बना है जिसका अर्थ सुनना होता है अतः जो श्रद्धापूर्वक गुरुजनों से निर्ग्रन्थ प्रवचन सुनकर एवं गृहस्थाश्रम में रह कर साधना करे, वह श्रावक है।[1] श्रमणवर्ग की उपासना में लीन रहने से उसे 'श्रमणोपासक' भी कहा जाता है।[2] श्रावक शब्द की व्याख्या इस प्रकार भी की जाती है 'श्रा' अर्थात् श्रद्धा पूर्वक शास्त्र श्रवण करना 'व' अर्थात् विवेक पूर्वक उस पर चिंतन-मनन करना एवं 'क' अर्थात् श्रुतज्ञान को क्रियात्मक रूप देना यानी उसको आचरण में लाना। फलितार्थ यह है कि शास्त्र के वचनों को सुनकर एवं समझकर उनको विवेकपूर्वक आचरण में लाने वाला साधक 'श्रावक' कहलाता है। संक्षेप में निर्ग्रन्थ गुरुओं से श्रद्धा-भक्ति-पूर्वक धर्म के यथार्थ स्वरूप को सुनना एवं यथाशक्ति उसे जीवन में उतारना श्रावक का कार्य है। जैन धर्म में साधु के लिए पाँच महाव्रतों का उपदेश है, जबकि श्रावक के लिए बारहव्रतों (5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत और 4 शिक्षाव्रत) का उपदेश है जिनका धीरे-धीरे निरतिचार पालन करने वाला श्रावक, श्रमण दशा को पहुँचता है।

---

1. शृणोति जिनवचनमिति श्रावकः।

2. श्रमणानुपास्ते सेवते इति श्रमणोपासकः।

निश्चय में श्रावक वही है जिसने अनंतानुबंधी चतुष्क, मिथ्यात्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय, सम्यक्त्व मोहनीय और अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क इन कुल 11 प्रकृतियों का क्षय, उपशम या क्षयोपशम कर दिया है तथा विरति के पथ पर बढ़ रहा है।

श्रावक दो प्रकार के कहे गये हैं- 1. दर्शन श्रावक और 2. व्रती श्रावक। जो देव-अरिहन्त, गुरु निर्ग्रन्थ और वीतराग प्ररूपित तत्त्व-धर्म के प्रति पूर्ण आस्थावान् होते हैं वे दर्शन श्रावक हैं। दर्शन-श्रावकों की श्रद्धा इतनी दृढ़ होती है कि वे देवताओं के द्वारा प्रदत्त उपसर्गों से भी विचलित नहीं होते, किन्तु वे व्रत-प्रत्याख्यान धारण नहीं करते। दूसरे प्रकार के व्रती श्रावक बारहव्रत, ग्यारह प्रतिमा, दस प्रत्याख्यान, तीन मनोरथ, चौदह नियम एवं संलेखना की यथाशक्ति आराधना करते हैं। क्षमता की दृष्टि से श्रावक के तीन भेद किये गये हैं- जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट। जघन्य व्रती श्रावक सम्यक्त्व सहित कुछ व्रतों का ही धारक होता है। मध्यम व्रती श्रावक बारहव्रतों का पालन करता है एवं उत्कृष्ट व्रती श्रावक सम्यक्त्व सहित बारहव्रतों एवं ग्यारह उपासक प्रतिमाओं का भी आराधक होता है।

श्रावक धर्म को अन्य शब्दों में 'गृहस्थ धर्म' भी कहा गया है। आचार्य श्री हरिभद्रसूरि द्वारा रचित 'धर्मबिन्दु' एवं श्री रत्नशेखरसूरि द्वारा रचित 'श्राद्ध धर्म' में गृहस्थ धर्म दो प्रकार का बतलाया है- 1. सामान्य और 2. विशेष। कुल परम्परा से आया हुआ निंदा रहित वैभव आदि की अपेक्षा से जो न्याय युक्त अनुष्ठान है वह गृहस्थ का सामान्य धर्म है। इन ग्रन्थों के अनुसार सामान्य गृहस्थ के गुण हैं- न्याय-आचरण, योग्य विवाह, पाप कर्मों से सावधान व उनसे भयभीत होना, गुणानुराग एवं षड्रिपुविजय अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, राग व द्वेष इन छह शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की भावना रखना। विशेष गृहस्थ धर्म में श्रावक के बारहव्रतों को सम्मिलित किया गया है।

जैन दर्शन में सामान्य गृहस्थ धर्म का विवेचन मार्गानुसारी के 35 गुणों में सविस्तार किया गया है। आगमों में श्रावक के वचन-व्यवहार एवं श्रावक के 21 गुणों का वर्णन प्राप्त है जो एक सामान्य श्रावक के गुणधर्म को अभिव्यक्त करता है। जिसका निष्कर्ष यह है कि सामान्य श्रावक एक आदर्श व्यक्ति होता है, जिसका जीवन पूर्णतया नैतिक होता है। वह समाज में सबकी सहायता करने वाला होता है। उसका जीवन इतना उच्च, आदर्श एवं पवित्र होता है कि स्वाभाविक रूप से ही समाज के अन्य लोग उसका सम्मान करते हैं।

आदर्श श्रावक कैसा हो?- आदर्श श्रावक ऐसा होना चाहिये जो आज के जीवन में निरन्तर ज्ञान-दर्शन-चारित्र की ओर बढ़े, साधनारत रहे। व्यापार में सरकारी टेक्स की चोरी न करे। लेन-देन में सत्य का अधिकाधिक उपयोग करे। जहाँ तक हो सके, पाप और हिंसा से बचे। पुत्र के विवाह में मांग कर दहेज न ले। किसी का अपमान न करे। पैसे से कोई पद

नहीं खरीदे। झूठे मुकदमे न लड़े। परिवार, समाज, धर्म और देश की मर्यादा का ध्यान रखे। तपस्वी कहलाने के लिए तपस्या न करे। तप के नाम पर आडम्बर, प्रदर्शन, भोज नहीं करे। चोरी का माल न दे और न ले। वासनापूर्ण साहित्य न खरीदे। अश्लील पत्रिकाएँ घर में न रखे। अधिक रात तक जगे नहीं। सार्वजनिक-स्थलों, धर्म-स्थानों की एक पाई भी अपने उपयोग में न ले। अधिक कपड़ा व उपभोग-परिभोग की सामग्री न रखे। पर-निंदा एवं आत्म-प्रशंसा न करे। कथनी और करणी में अंतर न रखे। निर्ग्रन्थ गुरु-भगवंतों के चारित्र-पालन में सहयोगी बने। देव-गुरु-धर्म पर अटल श्रद्धा रखे। कहा भी है-

श्रावक वही जिसके जीवन में, त्याग तपस्या संयम का बल।
समता, शुचिता दया भाव हो, अंतर मन हो निर्मल निश्छल।।

सच्चे श्रावक, निर्ग्रन्थ-प्रवचन (जिनधर्म) में दृढ़ होते हैं। ''अट्ठिमिंज पेमाणुरागत्ता'' इस आगम वाक्य के अनुसार उनका हृदय ही नहीं, हड्डी और नसों में भी धर्म-प्रेम समाया हुआ रहता है। उनका धर्म प्रेम इतना गहरा और पक्का होता है कि संसार की कोई भी शक्ति उन्हें धर्म से विचलित नहीं कर सकती। आगम साक्षी है कि कामदेव, अर्हन्नक आदि श्रावक धर्म में इतने दृढ़ थे कि देव भी उन्हें चलित नहीं कर सके। पूर्वकाल के श्रावक जब परस्पर मिलते तो कहते कि-''**अयं आउसो! णिग्गंथं पावयणं अट्ठे, अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे**'' - हे आयुष्मन्! निर्ग्रंथ प्रवचन अर्थ है, यही परम अर्थ है, बाकी सब अनर्थ है। इस लोक में अगर कोई सारभूत सर्वोत्कृष्ट वस्तु है तो यह निर्ग्रन्थ प्रवचन है। तीन लोक की ऋद्धि, चक्रवर्ती पद और इन्द्र पद भी निर्ग्रंथ प्रवचन के सामने तुच्छ हैं।

उववाई सूत्र में तत्कालीन श्रावक का जीवन का वर्णन करते हुए आगमकार फरमाते हैं- **'उस्सियफलिहा, अवंगुयदुवारा, चियत्तंतेउर-परघर पवेसा.....।'** अर्थात् जिसका हृदय स्फटिक रत्न के समान निर्मल, दानादि लोक सेवा के लिए उदार चित्त वाला है और जिसके घर का द्वार सदा खुला रहता है तथा राजभवन से लेकर साधारण घरों तक जो निःशंक होकर प्रवेश कर सकता है, ऐसा प्रतीतिमय (विश्वास योग्य) श्रावक का जीवन होता है।

श्रावक की दिनचर्या में षट्कर्म कहे गए हैं-

देवाऽर्चा गुरूपास्तिः, स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट् कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् सिद्ध और अरिहंत देव की विशुद्ध एवं निरवद्य पद्धति से स्तुति करना, वंदन करना देव अर्चना है। परमोपकारी निर्ग्रन्थ साधु-साध्वियों की भाव-भक्ति से मर्यादा के अनुरूप सेवा करना, उनका प्रवचन सुनना गुरूपास्ति है। आगमों एवं उत्तम ग्रंथों का

स्वाध्याय करना, सामायिक संवर आदि से जीवन को संयमित करना, नवकारसी आदि तपों की आराधना करना एवं उत्तम दान देना ये छह कर्म श्रावक द्वारा प्रतिदिन करणीय हैं।

किन्तु आज की बढ़ती भौतिक चकाचौंध एवं फैशन से प्रभावित श्रावक गण इन्हें भुलाकर दूसरे षट्कर्म करने लगे हैं जो इस प्रकार हैं-

चायपूजा धूम्रपानं बूटपालिश चित्त रंजनम्।
भंगघोटन ताशखेलन, षट्कर्माणि दिने दिने।।

अब प्रातः उठते ही हम श्रावक गण पंचपरमेष्ठी के स्मरण के स्थान पर 'बेड टी' याद करते हैं। फिर गुरु के स्थान पर निज देह की उपासना सिगरेट की अगरबती सुलगा कर करते हैं, अन्यथा शौच ही नहीं होती। बाद में जो हाथ आगम पृष्ठों पर चलने चाहिये वे ही बूटों पर उन्हें चमकाने को चलते हैं। सामायिक का समय टी.वी. देखने में लगाते हैं। भंगादि घोटने, चाय नाश्ते में समय लगा कर कायक्लेश तप की पूर्ति करते हैं और जो पैसा जुआ खेल कर हार जाते हैं उसे दान में दिया मान बैठते हैं।

आज हम नामधारी श्रावक बने हुए हैं। स्वाध्याय के अभाव में हमारी ज्ञान की स्थिति भी दयनीय हो गई है। हमने मात्र ज्ञान और आचरण ही नहीं खोया, वरन् कुछ ने दुर्व्यसनी तथा दुराचरी होकर, जैन श्रावक की प्रतिष्ठा भी गिरायी है। भूतकाल में कभी कोर्ट में किसी जैन को जाना पड़ता तो न्यायाधीश भी उसकी बात को प्रामाणिक मानते थे। पर आज जैन का अर्थ जन साधारण में क्या है? जन साधारण के अनुसार जैन समुदाय एक पैसे वाला वर्ग है जो ब्लेकमैल व नंबर दो का धंधा करने वाला तस्कर है तथा ऊँचा ब्याज लेकर गरीबों का खून चूसता है।

श्रावकाचार और बढ़ती विकृतियाँ- कहने को तो हम अपने आपको जैनी, श्रावक और श्रमणोपासक बतलाते हैं, किन्तु हमारा आचरण दिनोंदिन गया-बीता होता जा रहा है। धर्म दृढ़ता के अभाव में श्रावक श्राविकाओं में आने वाली विकृतियाँ इस प्रकार हैं-

1. **जैनत्व से विचलन-** जिस प्रकार अजैन लोग लौकिक त्यौहारों को मनाते हैं, उसी प्रकार कई जैनी नाम धराने वाले भी इन त्यौहारों को मनाने लग गये हैं। इन त्यौहारों के निमित्त से गणेशपूजन, लक्ष्मीपूजन, नवरात्रिव्रत, शीतला पूजन, गणगौर व्रत आदि रखे जाते हैं। जो धर्म, कर्म और अपने आप पर श्रद्धा रखता है उसे इस प्रकार लौकिक देवों के आराधन की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार रोग के निमित्त से, विवाह आदि प्रसंगों पर, मृत्यु प्रसंगों पर भी कई प्रकार की रूढ़ियों को अपना कर एवं भैरव, भवानी, पीर-पैगम्बर को पूज कर आजकल के श्रावक-श्राविकाएँ धर्म से डिगते जा रहे हैं। जैनत्व को छोड़कर अजैनत्व का आचरण कर रहे हैं।

2. **जड़पूजा के प्रति झुकाव–** स्थानकवासी समाज गुणपूजक है। हमारे यहाँ जड़पूजा को कोई स्थान नहीं है। यह आश्चर्य है कि स्थानकवासी जैन कहलाने वाले पूज्य संत-सतियों के अग्नि-संस्कार स्थलों को पावनधाम कहकर उसे पूजनीय मानने लगे हैं। कई अनभिज्ञ एवं अंध श्रद्धालु ऐसे स्थानों में जाकर तिक्खुत्तो के पाठ से वंदन नमस्कार कर अपनी भाव-भक्ति का प्रदर्शन करते हैं, मान मिन्नते लेते हैं। यह सब जैन संस्कृति के विरुद्ध है। इसी प्रकार विवेकहीन अधिकांश श्रावक-श्राविकाएँ अंध-भक्ति के कारण आजकल अपने मान्य धर्म गुरुओं के फोटो अपने घरों एवं दुकानों पर लगाकर फोटो को वंदन करते हैं, अगरबती लगाते हैं। यह सब सिद्धान्त विपरीत कार्य हैं।

3. **दूषित तप–** आजकल अधिकांश श्रावक-श्राविकाएँ भौतिक स्वार्थ-साधना के उद्देश्य से तपस्या करने लग गये हैं, जैसे- चूंदड़ी का उपवास, संकट्या तेला, मैना सुन्दरी का आदर्श सामने रख कर व्याधिहरण और सुख संपत्तिकरण, ओली आदि तप, यहाँ तक कि एकान्तर तप (वर्षीतप) अठाई, मासखमण आदि की तपस्याएँ भी भौतिक लाभ-प्राप्ति के उद्देश्य से की जाने लगी हैं जो कि तपस्या के मूल उद्देश्य को ही नष्ट करने वाली हैं।

जैन धर्म में केवल देह-दमन का ही विधान नहीं है, वरन् उसके साथ संवर-निर्जरा के भाव होना भी आवश्यक बताया है। यही कारण है कि प्राचीन काल में श्रावक महीने के 6-6 पौषध करते थे। वे उस पौषधयुक्त उपवास को प्राथमिकता देते थे जो संवर-निर्जरा की क्रिया से संयुक्त होता था। आजकल कई श्रावक तपस्या तो कर लेते हैं, पर पौषध का लक्ष्य नहीं रखते, जबकि संवर-क्रिया आवश्यक है।

आजकल तपस्या भी यशकीर्ति, लोभ एवं लौकिक इच्छाओं की पूर्ति हेतु की जाने लगी है। तपस्वी चाहता है कि उसकी जयजयकार हो। गाजे-बाजे एवं खूब प्रदर्शन के साथ जुलूस निकलें। सगे-संबंधी खूब भेंट लाकर दें तथा उसकी मनोकामनाएँ तप के प्रभाव से पूर्ण हों। ये सब विकृतियाँ हैं, जिन्हें समाप्त किया जाना चाहिये।

श्रावक का आठवाँ व्रत अनर्थदण्ड-विरमण बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसको अपना कर अनावश्यक पाप-प्रवृत्ति को छोड़ना चाहिए। तप के नाम पर प्रीतिभोज न करें, तपोत्सव का आयोजन न हो। धूम्रपान, गुटखा, चाय, तम्बाकू-सेवन और रात्रि-भोजन की बढ़ती दुष्प्रवृत्तियाँ साधक के लिए हेय हैं। अतः इनके त्याग पर बल दिया जाना आवश्यक है।

4. **असंयतियों की पूजा–** "जिसने संसार का त्याग कर दिया और साधु वेश पहन

लिया वह हमारे लिए वंदनीय है''- इस गलत धारणा के शिकार होकर कई श्रावक-श्राविका मात्र वेशधारियों एवं शिथिलाचारियों को सम्मान देते हैं। उनसे अपना स्वार्थ सिद्ध करने की भावना रखते हैं। इस लोक और परलोक को बिगाड़ने वाले, जिनशासन की कीर्ति को नष्ट करने वाले ऐसे धर्मघातकों का समर्थन करना पाप है। श्रावकों द्वारा साधुओं को शिथिलाचारी बनने में योग देना, उनके कार्यों के लिए धन संग्रह करना आदि विकृतियाँ पनप रही हैं जो श्रावकाचार को कलंकित करने वाली हैं।

5. **आडम्बर में धर्म मानना-** आजकल के अनभिज्ञ श्रावक-श्राविकाएँ आडम्बर में ही धर्म मानने लग गये हैं। धर्म तो संवर निर्जरा में है, अन्य प्रवृत्तियों में नहीं।

6. **दर्शन यात्राएँ-** आजकल चातुर्मास के दिनों में बसें, ट्रेनों और हवाईजहाजों के द्वारा सामूहिक रूप से संत-दर्शन यात्राएँ अथवा संघ निकालने की परम्परा बढ़ती जा रही है, जिसका उद्देश्य संत सान्निध्य-सत्संगति का लाभ प्राप्त करने का कम, अपितु शोपिंग, पर्यटन, परिभ्रमण, सैर सपाटों का ज्यादा रहता है। इस पर भी अंकुश आवश्यक है। संत-दर्शन को जाते समय संवर-निर्जरा के कार्यक्रम को प्राथमिकता दी जानी चाहिये, तभी संतदर्शन की सार्थकता है। कहा भी है-

जाना है अगर संत दर्शन, मन में हो अगर विचार।
पूरा लाभ लेकर ही आना, यही है श्रावक का आचार।।

7. **पुरुषार्थहीनता-** जैन धर्म पुरुषार्थ प्रधान है। आज पंचम आरे के नाम से एवं संहनन-विच्छेद के बहाने बनाकर धर्म में पुरुषार्थ को गौण किया जा रहा है। श्रावक धर्म बड़ा विशाल, उदार एवं सुखपूर्वक मोक्ष जाने का मार्ग है। संवर, दया, ऊणोदरी आदि कितने ही सरल विधान हैं जिनमें खाते-पीते मोक्ष जाना बताया है, किन्तु आजकल के नामधारी श्रावकों से संवर, दया की बात तो दूर एक नवकारसी भी नहीं होती, छोटे-छोटे व्रत-नियम-प्रत्याख्यान का भी वे पालन नहीं कर पाते, यह सब प्रमाद और अकर्मण्यता है।

8. **धार्मिक क्रियाओं में असजगता-** श्रावकाचार में विशुद्ध सामायिक का बड़ा महत्त्व है। आजकल जो भाई-बहिन सामायिक करते हैं वे अधिकांशतः रुढ़िवत् नियम की पालना हेतु करते हैं। सामायिक तभी निर्दोष हो सकती है जब बत्तीस दोषों की जानकारी हो, अतः सामायिक का स्वरूप एवं बत्तीस दोषों को ध्यान में लेकर निर्दोष शुद्ध सामायिक करने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सामायिक की तरह संवर, दया, पौषध प्रतिक्रमण और अन्य धार्मिक क्रियाएँ भी रूढ़िवत् नहीं

होकर भगवान् की आज्ञानुसार निर्दोष की जानी चाहिये।

9. **कर्मादान सेवन-** श्रावकव्रतों में पन्द्रह प्रकार के कर्मादानों का उल्लेख है और स्पष्ट निर्देश है कि आजीविका के ऐसे साधन नहीं अपनाये जाने चाहिये, जिनसे पाप कर्म बंधता हो। आज ऐसे साधनों की संख्या पन्द्रह से कहीं अधिक हो गयी है। भगवान् ने स्पष्ट उद्घोषित किया कि महाआरंभ महापरिग्रह के कार्य नरक के कारण हैं अतः वे श्रावकाचार नहीं हो सकते। श्रावक के लिए कर्मादान **'जाणियव्वा ण समायरियव्वा'**- जानने योग्य हैं, किन्तु आचरण करने योग्य नहीं हैं। विडम्बना यह है कि कई हिंसावर्धक और हिंसात्मक धंधे जैनियों द्वारा बेधड़क चलाये जा रहे हैं। श्रावकों को उनसे बचना चाहिये। क्योंकि सूत्रकृतांग सूत्र 2/3/39 में प्रभु फरमाते हैं- **'धम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति'**- सद्गृहस्थ सदा धर्मानुकूल ही अपनी आजीविका करते हैं।

10. **अप्रामाणिकता-** आजकल हमारे आजीविका के साधनों में जो प्रामाणिकता और अहिंसा का व्यवहार होना चाहिये, वह बहुत कम देखने को मिलता है। धर्मस्थानों में भी पैसे वाले लोग ऊँचे स्थानों पर विराजमान दिखाई देते हैं, भले ही उनका पैसा पाप से ही कमाया हुआ क्यों न हो। अनेक अप्रामाणिक नेता लोग भी आजकल धर्मस्थानों में बड़े-बड़े धार्मिक समारोहों की अध्यक्षता करते हैं तो धर्म-स्थानों की पवित्रता को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है? जब बड़े लोग ही सदाचारी नहीं होंगे तो अन्य से सदाचार की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

11. **बदलते जीवन-मूल्य-** एक समय था जब आदमी की मुख्य आवश्यकता थी पेट भर रोटी, तन ढकने को वस्त्र और सिर के ऊपर छत, बस इतना ही उसके लिए पर्याप्त था। सीमित साधनों से उसका जीवन-निर्वाह हो जाता था। अब जीवन-निर्वाह के साधनों के नाम तो छोड़ें आज सौन्दर्य प्रसाधनों की ही इतनी किस्में हो गई कि उनके नाम सहजता से नहीं गिनाए जा सकते। अतः आज 'सादा जीवन उच्च विचार' केवल कहने मात्र को है। जीवन मूल्य बदल रहे हैं। लोग दिखावे में ज्यादा विश्वास करने लगे हैं। सादगी अब उनके लिए मूल्यवान् नहीं रह गई है। वे आडम्बरपूर्ण जीवन जीते हैं और धन का बेमानी प्रदर्शन कर अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं। शादी, ब्याह अथवा अन्य अवसरों पर किये गये प्रदर्शन इसके उदाहरण हैं। कवि के शब्दों में-

झूठे अहं प्रदर्शन से अब बाज नहीं हम आते।
शादी ब्याह जन्म दिन मानो आडम्बर बन जाते।।

रोज नये-नये कपड़े, नयी-नयी गाड़ियाँ, साबुन, शैम्पू, क्रीम, तेल और इस तरह उपभोग के अन्य ढेर सारे सामानों को विज्ञापनों में देखकर उनकी खरीददारी के लिए लालायित होना आम बात हो गई है। आज की यह उपभोक्तावादी संस्कृति अनावश्यक वस्तुओं के संग्रह और उपभोग पर बल देती है, किन्तु अधिक संग्रह और अधिक उपभोग की मनोवृत्ति जनहित में नहीं है।

12. **शव को रोक रखना-** साधु-साध्वी के देहान्त के बाद शव को श्रावकों को सौंप दिया जाता है। शव को बाहर लोगों के दर्शनार्थ बहुत लम्बे समय तक रखा जाता है और बड़े ठाठ-बाट एवं समारोह पूर्वक अंतिम क्रिया होती है। साधु-साध्वी के शव की तरह श्रावक-श्राविकाओं के शव को भी परिवारजनों के आने के बहाने घंटों रखा जाने लगा है। देह-दर्शन के लिए शव को लम्बे समय तक रोक रखना भी हिंसा है, क्योंकि शव में अंतर्मुहूर्त्त में ही सम्मूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति होने लगती है। अतः इस विकृति पर भी रोक आवश्यक है।

13. **धन की अंधी दौड़-** आजकल समाज में व्यक्ति की हैसियत और उसका महत्त्व उसकी आर्थिक समृद्धि के आधार पर तय किए जाते हैं। जिस व्यक्ति के पास जितनी अधिक संपत्ति होती है वह उतना ही बड़ा माना जाता है। इस मान्यता के कारण धन अर्जित करना सामाजिक जीवन का हिस्सा बन गया है, चाहे वह धन किसी भी तरीके से प्राप्त किया जाये। उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक, संवैधानिक-असंवैधानिक, सही-गलत कोई भी तरीका हो, इससे आज मतलब नहीं रह गया है। मतलब रह गया है सिर्फ धन कमाने से। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि-

दो नम्बर का काला धन, बुद्धि को हरता है।
जो जैसा यहाँ करता है, वैसा ही भरता है।।

आज की आधुनिक अवधारणा यह मानती है कि वह व्यक्ति विकसित है जो अधिक भौतिक समृद्धि में जीता है। अतः इस अवधारणा के मुताबिक जिस व्यक्ति के पास जितना ज्यादा धन है जो जितना ज्यादा सुख सुविधाओं के साथ रहता है, वह व्यक्ति उतना ही ज्यादा विकसित है। चूंकि व्यक्ति का मन चंचल होता है, अतः वह जितना मिलता है उससे संतुष्ट नहीं होता, बल्कि उसकी लालसा बढ़ती जाती है। विकास की अवधारणा इस लालसा को हवा देती है, जिसके कारण व्यक्ति अकूत संपत्ति जमा करने की पागल दौड़ में पड़ जाता है और वह भ्रष्टाचार में संलग्न हो जाता है।

धन की अंधी दौड़ में आज का श्रावक सदाचार, नैतिकता, ईमानदारी,

कर्त्तव्यपरायणता, सामाजिक दृष्टिकोण जैसे मूल्यवान शब्दों की पहचान खो चुका है। जुगाड़बाजी, आपराधिक गिरोहबंदी, निजी स्वार्थों की पूर्ति, अनैतिक कार्यों से कोई परहेज न रखने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

श्रावकाचार में विकृतियाँ बढ़ने के निम्नलिखित कारण हैं- 1. श्रावक श्राविकाओं में सम्यग्ज्ञान एवं क्रिया की कमी, 2. जैन धर्म में दृढ़ श्रद्धा नहीं होना, 3. विवेक का अभाव, 4. स्वाध्याय की रुचि घटना, 5. त्यागी संत-सतियों के सत्संग का नहीं मिलना, 6. श्रावकों का पक्ष मोह, संप्रदाय मोह, 7. प्रसिद्धि की भूख, 8. नैतिक पतन, 9. बढ़ती आवश्यकताएँ, 10. पाश्चात्त्य एवं भौतिकवादी संस्कृति का प्रभाव, 11. धनी बनने की लालसा, 12. आडम्बर और प्रदर्शन में धन व्यय करने की सामाजिक कुरीतियाँ एवं कुप्रथाएँ आदि।

-7/14, उत्तरी नेहरू नगर, विट्ठलबस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)

नसीहत गिलहरी से

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

एक दिन सुबह बालकॉनी में आया तो देखा कि सामने वाले घर के गोखड़े पर कटोरा भर रात के बासी चावल रखे हुए थे। मैंने देखा एक कागा चोंच भर-भर कर चावल खा रहा था। थोड़ी दूर पर बैठी एक गिलहरी चावल के कटोरे को एकटक देख रही थी। इतने में दरवाजे के खुलने की आवाज से कागा अपने भाग्य का हिस्सा लेकर ऊपर आकाश में उड़ गया। फिर गिलहरी धीरे-धीरे इधर-उधर चौकन्नी होकर झांकती हुई सावधानी से चावल के कटोरे तक पहुँची। दो-चार चावल मुँह में दबाकर पीछे अपनी जगह लौट आई।

थोड़ी देर बाद फिर कटोरे के पास गई और दो-चार चावल उठाकर अपनी जगह आ गई। अपने दोनों आगे के पैरों को समेटे, बैठ कर भोजन का आनन्द लेने लगी। जैसे हम लोग किसी दावत में अपना मन पसंद खाना प्लेट में लेकर आते हैं। फिर जरूरत पड़ने पर खाना लेने के लिए काउंटर पर जाते हैं और लौट आते हैं। इसी तरह गिलहरी अब दूसरी तरफ जाती है वहाँ से दो-चार चावल के दाने उठाती है और पीछे लौट आती है। लेकिन चावल का एक दाना भी नहीं बिखेरती है। जिन्दगी में पहली बार गिलहरी जैसे छोटे से प्राणी को साफ-सफाई व चतुराई से खाना लाते हुए और खाना खाते हुए देखा। कहीं पर बिखेरा नहीं, जूठा भी नहीं डाला। शायद उसको यह सद्बुद्धि है, समझ है कि अन्न जो हमारा प्राण है, जीवन चलाता है, उसको बेकार करना, खराब करना शोभाजनक नहीं होता है।

एक छोटी सी गिलहरी हमें नसीहत दे गई कि आहार को सलीके से लेना, सलीके से खाना चाहिए। एक दाना भी बेकार जाने देना, बिखेर देना अच्छा नहीं होता।

-52, कालाथीपिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079

कविता

क्रोध को तज दे रे मनवा

श्री मगनचन्द जैन

क्रोध को तज दे रे मनवा क्रोध को तज दे रे मनवा।
तन तेरा हो जायेगा खाक, क्रोध को तज दे रे मनवा।।
क्रोध शीघ्र ही तन को तपाए,
स्वस्थ मनुज रोगी बन जाए,
रक्त-कणों को शीघ्र जलाए,
नशा जैसा असर दिखाए,
इस पर काबू कर मनवा, क्रोध को तज दे रे मनवा।। तन तेरा....।।
चेहरे को बदरंग बनाता,
मन में कटुता-भाव जगाता,
प्रेम-भाव को दूर हटाता,
फिर भारी उत्पात मचाता,
अब तू कर विचार मनवा, क्रोध को तज दे रे मनवा।। तन तेरा....।।
क्रोध दैत्य-सम रूप दिखाता,
पर के प्राण हरण कर लेता,
समता शान्ति दूर भगाता,
मन में ये भूचाल मचाता,
दुष्ट को दूर हटा मनवा, क्रोध को तज दे रे मनवा।। तन तेरा....।।
चार प्रकार क्रोध के होते,
शास्त्र हमें यह बात बताते,
क्रोधी को ये खूब रूलाते,
तरह-तरह से नाच नचाते,
क्षमा से जीत इसे मनवा, क्रोध को तज दे रे मनवा।। तन तेरा....।।
जिसने मन में क्रोध किया है,
नीच गति में जन्म लिया है,
जीवन उसका पतित हुआ है,
संयम से उद्धार हुआ है,
'मगन' कर जोड़ कहे मनवा, क्रोध को तज दे रे मनवा।।
तन तेरा हो जाएगा खाक, क्रोध को तज दे रे मनवा।।

-सेवानिवृत्त अध्यापक, फाजिलाबाद (हिण्डौन), जिला-करौली (राज.)

नारी-स्तम्भ

ढोंगी एवं पाखंडी बाबाओं से रहें सजग

श्री राजेन्द्र पितलीया

प्राचीन काल से हमारे देश में जनता अज्ञान व अंधश्रद्धा के चलते पाखंडी व ढोंगी बाबाओं के हाथों लूट की शिकार हो रही है। जनता अपने दुःख व समस्याओं के समाधान की आशा में इनके चक्कर में आकर धोखाधड़ी की शिकार होती रहती है। देश में अनेक बाबा अपने आपको सिद्ध पुरुष व ईश्वरीय शक्ति से परिपूर्ण होने का दावा कर लोगों की मजबूरी का लाभ उठाते हुए उन्हें गुमराह करते आ रहे हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि जो पढ़े-लिखे हैं, उच्च पदों पर आसीन हैं वे भी बाबाओं की शरण में जाते हैं। जहाँ भी बाबाओं के, माताओं के दरबार भरते हैं, वहाँ जनता की आर्थिक लूट के साथ शारीरिक-मानसिक प्रताड़ना भी होती है। कई ढ़ोंगी एवं पाखंडी बाबाओं के वचनों से भ्रमित होकर अनेक महिलाएँ व युवतियाँ अपने शील तक दांव पर लगा देती हैं। दिन-ब-दिन जिस प्रकार से ढोंगी व पाखंडी बाबाओं की पोल खुल रही है उसे देखते हुए जनता को जागरूक हो जाना चाहिये।

एक बात शाश्वत, अटल सत्य है कि इस ब्रह्माण्ड में किसी भी व्यक्ति के पास चमत्कार नहीं है। हम अपनी अज्ञानता व जानकारी न होने के कारण कई प्रसंगों पर घटित घटनाओं को चमत्कार का रूप दे देते हैं। ऐसी घटनाओं के पीछे वैज्ञानिक कारण होते हैं, आधार होता है। अपने जीवन में सदा वैज्ञानिक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर सजग रहना चाहिये। जीवन में सदा सुख-दुःख आते-जाते रहते हैं। हर बार परिस्थितियाँ भी अनुकूल नहीं रहती। अगर जीवन में कोई विकट समस्या हो, गंभीर प्रश्न हो तो पाखंड़ी बाबाओं के संपर्क में न आकर परिवार एवं समाज के सात्त्विक सकारात्मक व्यक्तियों के अनुभव व मार्गदर्शन लेकर तथा शारीरिक एवं मानसिक निवारण हेतु डॉक्टर व वैद्य की सलाह से उनका समाधान करने का प्रयास करना चाहिये। अनेक शारीरिक व मानसिक समस्याओं के कारण हम खुद ही होते हैं। हमारे जैन भाई-बहिन भी ढ़ोंगी-पांखड़ी बाबाओं के चक्कर लगाते रहते हैं, जबकि जैन दर्शन किसी चमत्कार को नहीं मानता है तथा न चमत्कारिक होने का दावा करने वाले व्यक्ति का कभी समर्थन करता है। हमारे साधु-संत भी इन दावों से दूर रहते हैं।

-मुख्य योग शिक्षक, पांढरकवडा केलापुर तह पतंजलि योग समिति, (महा.)-445302

भावाभिव्यक्ति

रे मन!

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

वीतरागध्यान शिविर की साधिका श्रीमती अभिलाषा हीरावत की प्रस्तुत भावाभिव्यक्ति उनकी ध्यान-साधना की प्रतिश्रुति है।**-सम्पादक**

अन्तर्मन के चक्षु खोल, ज्ञान प्रकाश को आने दे।
चेतन की बगिया में, समता को चहचहाने दे।
रे मन! अनित्य को देख, अब तो नित्य बोध जग जाने दे.....।
बँजर हो रही धरा पर, निर्मल फुहार को आने दे।
उत्तंग गगन में ऊँचा उड़ कर, शुभ्र आसमान छू आने दे।
रे मन! खोल बँधन पिंजरे का, मुक्त अवस्था पाने दे.........।
दृश्य अदृश्य बँधन ने मुझ को, अब तक है भरमाया।
अनन्त बार मनुष्य भव यूँ ही है गँवाया,
भव-भव में जा कर अब ये क्षण है आया।
रे मन! अब तो, चिर शान्ति को पाने दे...............।
संयोग वियोग में तड़पा रोया, आसक्ति ने खूब भिगोया,
व्यर्थ किया जीवंन, सोया और खोया।
अब ध्यान में मुझ को खोने दे,
रे मन! अब तो लक्ष्य मुझे पा लेने दे.........।
क्या खोया, क्या पाया, हिसाब मुझे कर लेने दे,
पाया कहाँ? खोया ही खोया, अवसर ये मत खोने दे।
रे मन! अब तो गणित बदलने दे..........।
रागों के झूले को छोड़ूँ, द्वेष के धागों को मैं तोड़ूँ।
जीवन की धारा को मोड़ूँ, स्व से अब तो नाता जोड़ूँ।
रे मन! अब तो समतामय हो लेने दे.........।
खुद की खुद से पहचान मुझे कर लेने दे,
तन कुम्लाया, मन भी है मुरझाया।
मीठी सी धूप को छन कर आने दे,
नूतन आनन्द में मुझको रम जाने दे,

द्वार सजाकर भक्ति का कोई भजन गुनगुनाने दे।
रे मन! अब तो प्रभु से प्रीत निभाने दे........।
मिथ्यात्व की घटाओं को छट जाने दे,
बदलियों से दिवाकर को निकल आने दे,
पतझड़ को मधुमास में बदल जाने दे,
अशुचि देखकर शुचिता मुझ को पाने दे,
रे मन! अब तो पावन मुझको हो जाने दे........।
प्रमाद घटा कर, मोह हटा कर,
दर्प का दर्पण गिरा कर, मुदित प्रतिबिम्ब बन लेने दे,
नित जागृत रह कर, जीवन समतामय होने दे,
मनुज जनम सार्थक करने को, साधना में गहरे उतर लेने दे,
रे मन! चंचल, चल चल को छोड़, अचल मुझे हो लेने दे...।
तरंग तरंग से तरंगित है, आकुल व्याकुल रंजित है,
चिर शान्ति अभिलषित है, अब तो अन्वेषण कर लेने दे।
रे मन! अब तो मुदित सम हो लेने दे..........।

-मुम्बई

ओ वीतराग भगवंत!

श्री जशकरण डागा

ओ वीतराग भगवंत, यह प्रार्थना है मेरी।
मेरी साधना ना छूटे, आराधना ना छूटे।।ओ वीतराग........।। टेर।।
कैसे भी कर्म आवे, नियमी अडिग रहूँ मैं।
चाहे प्राण तन से छूटें, नियम मेरे न टूटें।। ओ वीतराग.........।।1।।
संसार में रहूँ मैं, जल में कमल की भाँति।
कैसा ही संकट आवे, प्रण कभी ना छूटे।।ओ वीतराग........।।2।।
अप्रमत्त रहूँ सजग बन, नहीं तुमको मैं विसारूँ।
मारणांतिक कष्ट झेलूँ, समाधि नहीं छूटे।। ओ वीतराग.......।।3।।
अंतिम समय रहूँ मैं, भक्ति में लीन तेरी।
दृढ़ भावों में रहूँ मैं, नियम मेरे न टूटें।।ओ वीतराग............।।4।।

-संघपुरा मौहल्ला, टोंक (राज.)

बाल-स्तम्भ

धार्मिक शिविर का महत्त्व*

श्री मनन डांगी

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस भाषण को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 अगस्त 2012 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

"छोटा सा मैं बालक हूँ, मनन है मेरा नाम।
आप सभी को बताना चाहता हूँ, धार्मिक शिविर की उपयोगिता आज।"

शिविर में शिशु सुमन खिलते हैं।
शिविर में ज्ञान के दीप जलते हैं।
हम तो लाभ ही लाभ कमा रहे हैं शिविर में।
शिविर में आने से तो जन्म-जन्म के संस्कार बदलते हैं।

आज के टी.वी., मोबाइल और कम्प्यूटर के युग में बच्चों को अच्छे-अच्छे संस्कार देना, बड़ों का आदर करना सिखाना बहुत ही मुश्किल कार्य है। आज बच्चा जब स्कूल से घर आता है तो कोई कार्टून चैनल में जा रहा है, तो कोई Pogo में, कोई फेसबुक पर बैठा है तो कोई हंगामा देख रहा है। इससे हमें मिलता क्या है? सिर्फ और सिर्फ कुसंस्कार। अगर हमने अपने बच्चों को अच्छे-अच्छे संस्कार नहीं दिये तो ये कुसंस्कार हम बच्चों पर लादेन से भी बड़ा हमला कर देंगे।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो,
देवावि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।

-दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 1, गाथा 4

अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म ही उत्कृष्ट मंगल है। जिसका मन धर्म में रमण

---

* 24 मई से 10 जून 2012 तक मदनगंज-किशनगढ़ में आयोजित धार्मिक-शिक्षण शिविर में सम्पन्न भाषण-प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त भाषण।

करता है। उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

शिविर का अर्थ–

शि– शिक्षा

वि– विनय और विवेक

र– रमण करना

अर्थात् शिक्षा का विनय और विवेक में रमण करना शिविर है। बच्चों के जीवन का नव निर्माण करने के लिए अच्छा माध्यम है शिविर।

1. हम बच्चों के जीवन का सर्वांगीण विकास करने का नाम है शिविर।
2. गर्मी की छुट्टियों का सदुपयोग है शिविर।
3. संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला है शिविर।
4. टी.वी., इण्टरनेट जैसे खतरनाक खेलों से बचने का नाम है शिविर।
5. सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल और जैन धर्म के गूढ रहस्य सीखने की कला है शिविर।
6. विनय, विवेक और अनुशासन से रहना है शिविर।

शिविर में हमने माता-पिता और बड़ों को प्रणाम करना सीखा।

''माता-पिता को करो प्रणाम, जग में पाओ ऊँचा नाम,
रोज सवेरे उठना सीखो, माता-पिता को झुकना सीखो।
माता-पिता है देव हमारे, इनका नहीं कोई मोल,
इनका एक आशीर्वाद ही, है बड़ा अनमोल।।''

मर्यादित जीवन जीने के लिए गुरुजन हमें छोटे-छोटे त्याग-प्रत्याख्यान कराते हैं। उनका महत्त्व बहुत ही सुंदर ढंग से समझाया जाता है।

अरे शिविर के बारे में क्या-क्या कहूँ-

यह तो मानसिक समस्याओं का समाधान करने वाला कम्प्यूटर है।
जन्म-मरण रूपी रोगों को मिटाने वाली रामबाण औषधि है।
तो मोक्ष मंजिल तक पहुँचाने वाली लिफ्ट है।
शिविर तो आत्मा के मौलिक अस्तित्व को दिलाने वाली गिफ्ट है।

अरे सांसारिक मोह में फंसे हुए व्यक्तियों की ओर संकेत करते हुए मैं यह कहना चाहता हूँ कि संसार का काम तो कोई भी कर लेगा, पर अपने कल्याण का काम तो हमें खुद को वैसे ही करना होगा, जैसे भोजन और दवा खुद को ही लेनी पड़ती है। अरे, हम बच्चों का जीवन तो कोरा कागज होता है। जिस पृष्ठ पर इस समय जो भी लिख दिया

जायेगा वह हमेशा के लिए अंकित हो जायेगा। धार्मिक शिविर हम बच्चों के विकास के लिए यही कार्य करता है।

अरे, मैं तो सभी माता-पिता से यही कहना चाहता हूँ-
क्या आप चाहते हैं आपकी आँखों का तारा, बने जगत का दुलारा।
आपकी घर की बेटी, बने जग की रोशनी।
तो रुकिये........अपनी संतान को दीजिए.....परन्तु क्या?
टी.वी. देने से पहले अपना टाइम दीजिए।
स्कूल भेजने से पहले, जैन पाठशाला में भेजिए।
संपत्ति देने से पहले, अपनी सन्मति दीजिए।
स्वतंत्रता देने से पहले, अपने संस्कार दीजिए।
दोस्त देने से पहले, अपने दादा-दादी का प्यार दीजिए।
मोबाइल देने से पहले, मर्यादा का ज्ञान दीजिए।
कॉलेज भेजने से पहले, कर्म फिलोसफी समझाइए
पैसे देने से पहले, 18 पापों की जानकारी दीजिए।

आप सभी अपने बच्चों को जैन पाठशाला में और शिविरों में अवश्य भेजिए तथा जिनशासन की नींव मजबूत कीजिए।

ज्ञान का खजाना है शिविर।
संस्कारों को संवारना है शिविर।
समता की आराधना है शिविर।
अरे, और तो और नाश्ते का ठिकाना है शिविर।

अंत में आप सभी से यही कहना चाहूँगा-

शिविर आता है खुशी लेकर,
शिविर जाता है संस्कार देकर।
शिविर में हम सीखते हैं ज्ञान को
दूर भगाते हैं अज्ञान को।।

-सुपुत्र श्री मनीष डांगी, ओसवाली मौहल्ला, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

प्रश्न-

1. धर्म क्या है?
2. बच्चों को धार्मिक शिविरों में क्यों जाना चाहिए?

3. मर्यादित जीवन क्यों जीना चाहिए?
4. माता-पिता के लिए इस भाषण में क्या संदेश दिए गए हैं?
5. शिविर की पाँच विशेषताएँ बताइये। आप अपने अनुभव के आधार पर भी विशेषताओं का उल्लेख कर सकते हैं।

बाल-स्तम्भ [मई-2012] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2012 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'भीख और भिक्षा में भेद' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 55 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 35 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	भव्यता जैन, सांधीपुरम, जिला-कच्छ	33
द्वितीय पुरस्कार-200/-	शिवांशु छाजेड़, जोधपुर	33
तृतीय पुरस्कार- 150/-	राजेन्द्र मोहनलाल जैन, आगाशी, जिला-ठाणे	33
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	विमलचन्द सुराणा, सेवली कल्ला, जोधपुर	32
	संयम जैन, जयपुर	31.5
	मैत्री श्रेणीक छाजेड़, भुसावल	31
	मोनिका जैन, सवाईमाधोपुर	31
	आशु शर्मा, सवाईमाधोपुर	30

लेखकों से निवेदन

- 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका के लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी मौलिक रचनाएँ ही जिनवाणी को प्रेषित करें। यदि अपनी रचना में किसी आचार्य, विद्वान्, कवि आदि की कृति से उद्धरण देते हैं तो उनका नामोल्लेख अवश्य करें। लेखन के क्षेत्र में यह प्रामाणिकता आवश्यक है।
- यदि कोई संकलित रचना प्रेषित करते हैं तो उसके मूल स्रोत एवं रचनाकार का नामोल्लेख अवश्य करें।

समाचार प्रकाशन

- जिनवाणी मासिक पत्रिका के प्रत्येक प्रकाश्यमान अंक में वे ही समाचार प्रकाशित हो सकेंगे जो उस माह के पूर्व 25 तारीख तक 'जिनवाणी' के जोधपुर स्थित कार्यालय को प्राप्त हो सकेंगे। विलम्ब से प्राप्त समाचारों को प्रकाश्यमान अंक में सम्मिलित करना सम्भव नहीं हो सकेगा।

-सम्पादक, जिनवाणी, द्वारा स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (28)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग तीन-सामान्य श्रुतधर खण्ड-प्रथम)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह पहली किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 अगस्त 2012 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-3)

(प्रारम्भ से पृष्ठ 50 तक से प्रश्न)

एक शब्द में उत्तर लिखिए:-

1. भगवान महावीर ने धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करते समय किस पर बल दिया?
2. साधारण जन के लिए किसका परित्याग करना अति दुष्कर होता है?
3. जो निवृत्ति का जनक मोक्षदायक नहीं है, उसे क्या कहते हैं?
4. सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सामग्री कहाँ के भंडार से प्राप्त हुई?
5. विश्व का महान् वैज्ञानिक धर्म कौनसा है?
6. भगवान महावीर के पंच महाव्रतपरक धर्म पथ पर कौन आरूढ़ हुए?
7. किन आचार्य की निश्रा में निशीथ लिखा गया?
8. मोक्ष प्राप्ति के लिए किसी भी जीव निकाय की हिंसा होती हो, उसे कहते हैं?
9. जैन धर्म के स्वरूप में परिवर्तन कब हुआ?
10. अनन्तानन्त उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी काल व्यतीत हो जाने पर कौनसा काल आता है?

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये:-

11. त्याग करना श्रमणों का ....का नित्य नियत बहुत बड़ा तप है।
12. वाचनाचार्य, युगप्रधानाचार्य आदि .... पदों का सृजन किया।
13. साधु के पास संयमोपकरण है, फिर भी वे वायु की उनसे .... नहीं करते।
14. .... के अनन्तर वीर नि. की बीसवीं शताब्दी के एक विशाखामुनि का उल्लेख है।
15. .... अणगार ने तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म उपार्जन कर लिया।
16. जैन धर्म का भव्य भवन अहिंसा की .... पर अवस्थित है।
17. जन्म-जरा-मरण के भव रूपी जल से .... हो संसार सागर में गिर पड़ता है।
18. अहिंसामूलक धर्म सत्य है...........है।
19. स्वयं तीर्थंकर भी .... करे तो वह गच्छ मूल गुण रहित है।
20. जैन मुनि को ..... के बरतन में .... भोजन नहीं करना चाहिए।

किसने कहा?

21. ये निर्युक्तियाँ चतुर्दश पूर्वधर आचार्य भद्रबाहु की कृतियाँ नहीं हैं।
22. मैं सावद्यकार्य में किंचित् मात्र भी भागीदार नहीं बनूँगा।
23. मैंने सवापाव सेर मोतियों का चूरा करवा के फेंक दिया है।
24. हे पद्मवर पुण्डरीक! ऊपर उठो और इधर आ जाओ।
25. मैं कबूल करता हूँ कि मुझ पर गीता का गहरा असर है।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (26) का परिणाम

जिनवाणी मई, 2012 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 207 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- पारस जैन-बल्लारी

द्वितीय पुरस्कार- प्रथम जैन-पीलूखेड़ा मण्डी (हरियाणा)

तृतीय पुरस्कार- शान्ता महेन्द्र जी बाफना-नाशिक (महा.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. एच. विनोद जैन-शिमोगा
2. जगदीश प्रसाद जैन-कोटा (राज.)
3. मधु लुणावत-वाराणसी
4. प्रमीला विनोदकुमार बोहरा-जैतारण-पाली (राज.)
5. रतनचन्द मेहता-जोधपुर (राज.)

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता-Anil kumar jain-Kota, Ankush Jain-Pillu khera mandi (Haryana), Babita Rajendraji Pitaliya-Pandhaekawada, Bharti Sunilji Surpure-Ichalkaranji, Chandraka Dilipji Ranka-Jalgoan, Devendranath Modi-Jodhpur, H.Vinod jain-Shimoga, Hemalata jain-Beawar, Indu Kamleshji jain-Malad, Jagadish Prasad Jain-Kota, Kusum pareshji ponmia-Ichalkaranji, Kusum Singhvi-Jodhpur, Madhu Lunawat-Varanasi, Madhuji pipda-Bhilwara, Natmal Kothri-Balod, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Padam Chand Munot-Jaipur, Paras jain-Bellary, Parasmal Daulat Rajji Baghmar-Barmer, Poonam jain-Farid kot, Pramila Vinod Kumar Bohara-Pali, Pratam jain-Pillu khera mandi (Haryana), Pratibha jain-Chittorgarh, Preeti Gugliya-Bhilwara, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, R.R.Kothari-Dhule, Rajendra Tejmal Chhajed-Jalgoan, Rajshree Dhamawat-Varanasi, Ratan Chand Mehta-Jodhpur, Reema jain-Ludhiana, Sarita Manoj Babel-Ichalkaranji, Shanta Mahendraji Bafna-Nasik, Sunitha Doshi-Beawar, Surekha A.Bhandari-Nasik, Uma Devi jain-Chittorgarh, Upma Choudhary-Ajmer, Vidhya Singhvi-Badnawar, Vimla Bohra-Jaipur.

24 अंक प्राप्तकर्ता- Abhilasha Hirawat-Mumbai, Akhilesh Jain-Jodhpur, Anita munot-Ichalkaranji, Anjana katkani-Devas (M.P), Anurag Surana-Ajmer, Archana kothari-Balod, Aruna jain-Hoshiarpur, B.P.Kankariya-Raichur, Balwant singh choradia-Jhalar Patan (Raj), Basanti Chapalal-Dhulia, Bhagvanraj Singhvi-Pali, Bhavika M. Shah-Belgaum, Chandni jain-Indore, Chandnmal Palrecha-Jodhpur, Chandrakala Mehta-Bangalore, Chen Roop Chand Bhandari-Jodhpur, Chetana B. Botra-Malad, Chirag Jain-Sawai Madhopur, Dal Chand jain-Jaipur, Deepmala Singhvi-Pali, Devi Lal Bhanawat-Udaipur, Dharm chandra dhammani-Ahmedamad, Dharmesh Punamia-Pali, Falak Jain-Kota, Gajendragad Bagmar-Gangavati, Ghewarchand chhajed-Bellary, Gyan chand kothari-Ajmer, Harshit Gupta-Baran (Raj), Javer Narendra shah-Belgaum, Jaya Bhandari-Beawar, Johari mal Chajed-Jodhpur, Jyoti Bhansal-Bangalore, Jyoti jain-Baran (Raj), K.Hema jain-Secundrabad, Kamal Chordia-Jaipur, Kamal kothari-Baroda, Kamala Modi-Jodhpur, Kamala surana-Jodhpur, Kamalesh Galada-Ajmer, Kamla Singhvi-Jaipur, Kanak Badmer-Delhi, Kanchan Parasmalji lodha-Nasik, Kanhaiya lal jain-Bhilwara, Kanwal Raj Mehta-Jodhpur, Khimji R.Shah-Mumbai, Kiran Jain-Hoshiarpur, Kiran kothari-Jaipur, Kuntal kumari Jain-Jaipur, Kusum lata jain-Chennai, Lalita Ganeshchandji Surana-Solapur, Lalitha Ajit Bafna-Nagpur, Latha satish anchaliya-Dhulia, Laxmi kawad-Pali, Madhu Bala Jain-Bundi, Madhubala Jivanlalji Ostwal-Nasik, Madhubala Pramodkumari Bora-Ichalkaranji, Mahaveer Kothari-Secundrabad, Mala Mehta-Jodhpur, Mamta Jain-Sawai Madhopur, Manila Parakh-Jaipur, Manju Bhandari-Beawar, Manju Dilip jain-Mumbai, Manju Jain-Karauli, Manju Kanstiya-Kolkata, Mannalal Bhandari-Jodhpur, Maya alijar-Secundrabad, Meena Bora-Mald, Meenu Mehta-Jaipur, Meera jain lohiya-Sawai Madhopur, Mohan Lodha-Ajmer, Mona Pipada-Ichalkaranji, Mukesh Bothra-Jodhpur, Mukesh Bothra-Jodhpur, Neelam jain-Gurgoan, Neetu gulecha-Hyderabad, Nilima yogeshji chopra-Ichalkaranji, Nirmala H. Surana-Bikaner, Nirmala Lunawat-Poona, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, P.M.Lunawat-Ahmedamad, Padam jain-Sawai Madhopur, Padma Bohra-Raichur, Pinki jain-Jaipur, Pista Guleccha-Jaipur, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prabha Gukechha-Bangalore, Prameela Mehta-Ajmer, Pramila B.Pokhrana-Dhulia, Pramila kailash kothari-Jodhpur, Pramila Mehta-Jaipur, Pramila sajjan raj sa mehta-Bangalore, Prasanna-Bombay, Preeti jain-Sawai Madhopur, Preeti khincha-Jaipur, Prem jain-Alwer, Premlata Lodha-Jaipur, Premlata saand-Pali, Priyadarshana jain-Jaipur, Priyanka mukesh chopda-Ichalkaranji, Pukh Raj jain-Ajmer, Pushpa Jain-Jaipur, Pushpa Navlakha-Jaipur, Rajani jain-Sawai Madhopur, Rajendra kumar Chopra-Jabalpur, Rajkumari Jain-Delhi, Rajkumari Lodha-Jaipur, Rajni Bhandari-Gurgoan, Ratan karnawet-Jaipur, Rekha Kothari-Ajmer, Rikhab Raj Bohra-Delhi, Rinku kawad-Pali, Rishabh Jain-Bundi, Rohit Oswal-Jaipur, Sadhana Dilipji Gugale-Ichalkaranji, Sagar malji Nahar-Chittorgarh, Sangeeta Nainsukhji-

Jalgoan, Sangeeta Ranka-Faridabad, Saroj Nahar-Delhi, Sarojji Parasmalji Runwal-Dhule, Seema Dhing-Udaipur, Seema Katharia-Udaipur, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shashi kataria-Bhilwara, Shashikala-Bangalore, Shashikala P. Lunavat-Nasik, Shilpa Surana-Ajmer, Shiromani jain-Shajapur (M.P), Shobha nahar-Secundrabad, Shobha nandlalji munot-Ichalkaranji, Shobha Sagar Malji Kothari-Dhulia, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita nileshji muthiyan-Ichalkaranji, Subhash M. Dhadiwal-Thane, Sudha Bhansali-Jodhpur, Sudha Daga-Bikaner, Sunita Bordia-Udaipur, Sunita Oswal-Jaipur, Sunitha singhvi-Chennai, Suraj sa kankaria-Jalgoan, Surekha Nahar-Jaipur, Suresh chand jain-Alwer(Raj), Suresh chand jain-Karuli, Suresh kumar saand-Pali, Susheela jain-Sawai Madhopur, Sushila .V.Ranka-Jalgoan, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Bhandari-Bangalore, Sushila Tater-Bhilwara, Sushilaji Runwal-Poona, Suvarna Nitinji Bora-Ichalkaranji, Tara Bafna-Chennai, Tilak Manjari-Bellary, Trupti pritamji bora-Ichalkaranji, Ugam doshi-Secundrabad, Ugama Devi Dugar-Bangalore, Usha Bardia-Dhulia, Usha G.Surana-Jaipur, Usha Lunawat-Ajmer, Vandana Punamia-Pali, Varsha dosi-Merta city (Raj), Vibha jain-Kota, Vijayadevi Rikabchandji Bagmar-Gajendragad, Vijayalaxmi-Ajmer, Vimal Ranulalji Kochar-Nasik, Vimla N. Mehta-Jodhpur, Vimlabai khivsara-Dhulia, Yashoda Gundecha-Nagpur, Yugal Nemichand Ranka-Ahmedamad.

भारतीय जैन संघटना : समाज हित के प्रयास

भारतीय जैन संघटना, पुणे ने देश में जगह-जगह युवति-प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये हैं। आज के वक्त में युवतियों को घर के बाहर की जिम्मेदारियाँ भी संभालनी पड़ती है। उच्च शिक्षा में भी हमारी बहिनें आगे बढ़ रही है। कर्तव्य की डगर पर चलते हुए कहीं वे भटक नहीं जाएँ, इसके लिए भारतीय जैन संघटना ने 'फायर फाइट' कार्यक्रमों के माध्यम से हजारों अविवाहित युवतियों को प्रशिक्षण प्रदान किया है। हमारा प्रशिक्षण कोर्स करने वाली युवतियों के भटकने की संभावना शून्य हो जाती है।

यदि जैन समाज की आपसी जातियों और सम्प्रदायों में वैवाहिक सम्बन्ध होते हैं तो जैन एकता की दृष्टि से यह अच्छा है। इस प्रकार के विवाह होने से वर्तमान में युवक-युवतियों के शैक्षणिक स्तर की दृष्टि से भी चयन में अधिक विकल्प उपलब्ध हो जाते हैं।

इसी प्रकार समाज में बढ़ती तलाक की घटनाओं को रोकने में भी हमने पहल की है। 'कपल गाइडेंस प्रोगाम' के माध्यम से अनेक टूटते परिवारों को हमने बचाया है। हमारे दक्ष प्रशिक्षकों की टीम यह कार्य बहुत ही सफलतापूर्वक आगे बढ़ा रही है। मोटे तौर पर जैन समाज सम्पन्न समाज माना जाता है। लेकिन स्पर्धा और आरक्षण के दौर में जैन युवा के समक्ष अपने कैरियर को लेकर चिन्ता है। उनकी इस चिन्ता को हमने हमारी चिन्ता समझा और युवाओं के लिए कैरियर प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की है, जो सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है।

-निर्मल सिंघवी 'सी.ए', अध्यक्ष, भारतीय जैन संगठना (आं.प्र.)

सम्पर्क : श्रीपाल देशलहरा-9391100974

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित
'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (28) का परिणाम

आँकना नहीं हैं अंकों से, होना नहीं निराश है,
करना है स्वाध्याय निरन्तर, खोना नहीं विश्वास है।
जितना भी है अच्छा है, पाया है जो भी अच्छा है,
आगे से और आगे बढ़ेंगे, पिरोना नव प्रयास है।।

प्रतिभागियों को अपने प्राप्तांकों से निराश नहीं होकर अपनी विशेषता को निम्नांकित प्रकार से समझना है-

46 से वरीयता सूची-	सर्वश्रेष्ठ
44 से 46-	श्रेष्ठ
44 से कम-	प्रयास अच्छा है। सुधार कर सकते हैं।

जिनवाणी के मई-2012 अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (28) में 75 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के फरवरी-मार्च-अप्रेल-2012 के अंकों पर आधारित थी। परिणाम प्राप्तांकों के आधार पर निकाला गया है। परिणाम इस प्रकार है-

प्रथम पुरस्कार- 1100/- रुपये पारस जैन-बल्लारी (49.75)

द्वितीय पुरस्कार- 750/- रुपये अतिका मेहता-जोधपुर (49)

तृतीय पुरस्कार- 250/- रुपये (प्रत्येक)

किरण कुम्भट-जोधपुर (48.5) पूनम जैन-फरीदकोट (48.5)

सान्त्वना पुरस्कार- 100/- रुपये (प्रत्येक)

डॉ. पदमचन्द मुणोत-जयपुर (48.25) गीता जैन-जालन्धर (48.25)

प्रवीणचन्द जैन-हिण्डौनसिटी (48) अल्का जैन-दिल्ली (47.5)

47 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी:- विद्या संघवी, बबीता जैन, मोनिका जैन, कमलेश गेलड़ा, सोनु जैन–होशियारपुर, सरोज नाहर–दिल्ली, सुनीता नवलखा–कोटा, जयमाला कांकरिया–पाली, कमलादेवी सेठिया–मसूदा, अरुणा जैन–होशियारपुर, अनिल जैन–कोटा, रेखा जैन–अलीगढ़, रजनी जैन–सवाईमाधोपुर।

46 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- अंकुर जैन–आगरा, देवीलाल भणावत–कानोड़, मयंक लुंकड़–कोटा, निशा लुंकड़–कोटा, मधुबाला ओस्तवाल–नासिक, ऋषभ जैन–सुमेरगंजमण्डी, बाबूलाल कटारिया–पंजागुटा, रतनचन्द मेहता–जोधपुर, शशिकला लुणावत–नासिक, पवन खटोड़–भदेसर।

45 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:- मोहन लोढ़ा–अजमेर, विजयलक्ष्मी जैन–अजमेर, निर्मला सुराणा–बीकानेर, मंजुला जैन–भायंदर, चंदनमल पालरेचा–जोधपुर, मीनाक्षी जैन–मकराना, सुधा डागा–बीकानेर, ईशिता जैन–होशियारपुर, महेन्द्र खटोड़–भदेसर, जया भण्डारी–ब्यावर, ज्ञानचन्द कोठारी–अजमेर, सुनीलचन्द डागा–जयपुर, पुष्पा

गोलेछा–ब्यावर, प्रमिला बोहरा–जैतारण, पारसमल बाघमार–पाटोदी, नेणचन्द बाफणा–जोधपुर, कंवलराज मेहता–जोधपुर, शान्ता बाफणा–नासिक, कांचन लोढ़ा–नासिक, बेनाम–होशियारपुर।

44 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–रेखा कोठारी–अजमेर, रीमा जैन–लुधियाना, सागरमल नाहर–बैंगू, प्रतिभा जैन–बैंगू, भरतसिंह जैन–सांगानेर, हेमलता जैन–ब्यावर, विजयमल मेहता–जोधपुर, देवेन्द्रनाथ मोदी–जोधपुर, सुगनचन्द छाजेड़–जोधपुर।

43 या इससे कम अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी:–विद्या संचेती–जोधपुर, वर्षा डोसी–मेड़तासिटी, कमला मोदी–जोधपुर, अमीता जैन–इन्दौर, जौहरीमल छाजेड़–जोधपुर, रेणु बोहरा–दिल्ली, हेमा कोठारी–जयपुर, बाबूलाल जैन–गोपालगढ़, संगीता खाबिया–मैसूर, सरोज खाबिया–मैसूर, सुनील जैन–मैसूर, मंजु कांस्टिया–कोलकाता, सुशीला बैगाणी–बीकानेर, रजनी भण्डारी–गुड़गाँव, प्रतिमा जैन–जोधपुर।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (28) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं –

प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	प्र.	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
	अशुद्धि–शुद्धि				
1.	अमृत–ज़हर	फरवरी/11	2.	संयमित–असंयमित	मार्च/86
3.	अधम्मे–धम्मे	मार्च/19	4.	आलस्य–पुरुषार्थ	फरवरी/22
5.	ज्यादा,ज्यादा–कम,कम				मार्च/11
6.	आत्म–अशुद्धि–आत्म–विशुद्धि				मार्च/35
7.	अनार्य–आर्य				फरवरी/34
8.	यह वाक्य पूर्णतः शुद्ध था। अथवा सबकी सोच अलग है। सबकी रुचि अलग है। सबके संस्कार अलग हैं।				मार्च/61
9.	क्षमता–समता				अप्रेल/172
10.	यह वाक्य पूर्णतः शुद्ध था।				अप्रेल/179
11.	नहीं की जाए–की जाए	फरवरी/45	12.	जी–मर	मार्च/14
13.	बेशकीमत–कोई कीमत नहीं				फरवरी/60
14.	से पहले– के बाद	मार्च/27			
15.	यह वाक्य पूर्णतः शुद्ध था।				अप्रेल/187
16.	स्थानांग सूत्र	फरवरी/9	17.	दशवैकालिक सूत्र	फरवरी/16
18.	सूत्रकृतांग सूत्र	मार्च/9	19.	उत्तराध्ययन सूत्र	फरवरी/16
20.	बृहदारण्यकोपनिषद्	फरवरी/33	21.	दशवैकालिक सूत्र	मार्च/19
22.	सूत्रकृतांग सूत्र	फरवरी/18	23.	आचारांग सूत्र	मार्च/29
24.	उत्तराध्ययन सूत्र	मार्च/18-19			
25.	उत्तराध्ययन सूत्र (प्रभु की अंतिम वाणी)				मार्च/93

26. महाभारत फरवरी/25
27. नन्दी सूत्र अप्रेल/11
28. अथर्ववेद फरवरी/34,36
29. सूत्रकृतांग सूत्र मार्च/9
30. व्यवहार सूत्र मार्च/24
31. अविद्या/अज्ञान/स्वाध्याय की प्रवृत्ति न होना फरवरी/10
32. पर्यावरण प्रदूषण/ मानव (मूल में) मार्च/65
33. प्रवृत्ति मार्च/85
34. ज्ञान फरवरी/15
35. माइक्रोवेव ओवन मार्च/79
36. नकली धर्मगुरु फरवरी/25
37. आज की भटकती युवापीढ़ी मार्च/68
38. अंतर्मुहूर्त फरवरी/54
39. संगठन समर्पण फरवरी/66
40. सत्कार्य का आचरण फरवरी/62
41. चरित्र और अध्यात्म मार्च/38
42. पूज्य श्री उमेशमुनि जी म.सा. 'अणु' अप्रेल/188
43. रात्रि-भोजन फरवरी/64
44. वैवाहिक स्वतंत्रता का अधिकार फरवरी/7
45. सावधान बनना/ बनिए मार्च/63
46. अप्रेल/188-189-तीव्र मेधा, कठोर पुरुषार्थ, उग्र तपश्चरण व गुरु आज्ञा में समर्पित वह साधक अपने अहं को परमाणु बनाने के लिए सदैव सजग, आत्मलीन, क्योंकि आत्मरमण से बढ़कर कोई उत्सव नहीं, अंत में साधना के शिखर के रूप में तीसरे मनोरथ को साधकर अंतिम श्वास तक जागरुक रहकर जागृति का संदेश दे गया।
47. अप्रेल/185-187- समता जी की वेदना पर समता संबंधित पंक्तियाँ:-
    1. उनके चेहरे पर कभी वेदना की अभिव्यक्ति नहीं देखी गई।
    2. वेदना के क्षणों को भी प्रभु वन्दना में व्यतीत किया।
    3. वेदना के क्षणों में स्वयं नहीं हिली।
    4. विषम वेदना होते हुए भी तपस्या की एवं साधनारत रही।
    5. वेदना के क्षणों में भी सहनशीलता में सेवा करती रही।
48. मार्च/5-6- धर्मनिष्ठ नगर जलगांव की विशेषताएँ निम्न हैं-
    1. सभी जैन सम्प्रदाएँ मिलकर सबकी भागीदारी के साथ महावीर जयन्ती का आयोजन करती हैं।
    2. पुरुषों के साथ महिलाएँ भी धर्मकार्य में पूर्णतः सहयोग करती हैं।
    3. संत अथवा सतियों का एक ही प्रमुख चातुर्मास होता है।
    4. युवकों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संघ का पूर्णतः सहयोग व मार्गदर्शन रहता है।
49. अप्रेल/118- गणित की जटिल प्रक्रिया : 'गुरुकृपा' का है 'शुक्रिया'।
50. मार्च/72- "क्षण-क्षण का उपयोग" करें।

-नमन सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

श्रमण आवश्यक सूत्र- प्रकाशक- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोनः 0141-2575997, 2571163,फैक्स-0141-2570753, ***पृष्ठ***-6+152, ***मूल्य***-10 रुपये, ***सन्***- 2012

पंच महाव्रतधारी, पंच समिति-त्रिगुप्ति के पालक साधु-साध्वियों को नियमित रूप से प्रातः एवं सायंकाल प्रतिक्रमण करना होता है। प्रतिक्रमण का षड् आवश्यकों में चतुर्थ किन्तु प्रमुख स्थान है। प्रस्तुत पुस्तक में सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव आदि षडावश्यकों के मूल पाठ, उनका अर्थ एवं श्रमण-प्रतिक्रमण की विधि दी गई है। पुस्तक के अन्त में नौ परिशिष्ट हैं, जिनमें श्रमण समाचारी, पच्चक्खाण सूत्र, महाव्रतों की भावनाएँ, आवश्यक सम्बन्धी जानकारी, 25 मिथ्यात्व, श्रमण-श्रमणी के आवश्यक सूत्र में अन्तर, 33 बोल के भेद-प्रभेद, संस्तार-पौरुषी सूत्र तथा पाठों के विवेचन आदि को समाहित किया गया है। श्रमण-श्रमणियों एवं विशिष्ट श्रावकों के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

क्रियोद्धारक संत आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व- डॉ. इन्द्रा जैन, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003, दूरभाष-0141-2575997, 2571163, फैक्स- 0141-2570753, ***पृष्ठ***-16+136, ***मूल्य***- 20 रुपये, ***सन्***-2012

स्थानकवासी जैन परम्परा में 'रत्नसंघ' का विशिष्ट स्थान है। 'रत्नसंघ' नाम का प्रयोग क्रियोद्धारक सन्त आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए हुआ है। पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की शिष्य परम्परा में पूज्य श्री धन्ना जी प्रभावी आचार्य हुए। उनके प्रमुख शिष्य भूधर जी हुए जो महान् प्रतापी सन्त थे। उन्हीं की शिष्य परम्परा में पूज्य कुशलो जी, पूज्य गुमानचन्द्र जी एवं फिर आचार्य रत्नचन्द्र जी हुए। पूज्य रत्नचन्द्र जी (विक्रम संवत् 1834-1902) महाराज श्रेष्ठ कवि होने के साथ अच्छे प्रवचनकार एवं प्रभावशाली आचारनिष्ठ सन्त थे। उनके द्वारा रचित पदों/पद्यों का संकलन 'रत्नचन्द्र-पद-मुक्तावली' पुस्तक में सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित है। कुछ रचनाएँ अप्रकाशित थीं, जिनका प्रकाशन प्रस्तुत पुस्तक के परिशिष्ट में किया गया है। वे रचनाएँ हैं- श्रीमती की ढाल, उपदेश छत्तीसी एवं समझ छत्तीसी। पूज्य श्री हमीरमल जी द्वारा श्री रत्नचन्द्र जी महाराज पर रचित 'रत्नमुनि गुणगान' भी इसमें संकलित है।

डॉ. इन्द्रा जैन ने दो दशक पूर्व जिनवाणी के यशस्वी पूर्व सम्पादक डॉ. नरेन्द्र भानावत के मार्गदर्शन में एक लघुशोध प्रबन्ध लिखा था, वही संशोधित रूप में प्रस्तुत पुस्तक का

आकार ग्रहण कर सका है। इस पुस्तक में पाँच अध्याय एवं एक परिशिष्ट है। प्रथम अध्याय में आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की युगीन परिस्थितियों का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में उनके जीवन एवं व्यक्तित्व का परिचय है। तृतीय अध्याय उनके कृतित्व को समर्पित है, जिसमें उनके धार्मिक एवं साहित्यिक कृतित्व की चर्चा की गई है। चतुर्थ अध्याय में आचार्यश्री के पदों का विविध दृष्टियों से अनुशीलन किया गया है। आचार्य श्री ने भोग-विलास में उलझे मानव-समाज को सदाचरण-सम्बन्धी जो प्रतिबोध दिया उसे अग्रांकित शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया है- 1. सुमति की सीख, 2. परस्त्री-निषेध, 3. कर्मफल, 4. मानव-जन्म की दुर्लभता, 5. संसार की नश्वरता, 6. निन्दक-उपकार, 7. परिग्रह एवं अभिमान-त्याग, 8. इन्द्रिय-निग्रह, 9. संतों का आचरण, 10. गृहस्थों का आचरण, 11. सप्त-व्यसन-त्याग। लेखिका द्वारा पूज्य श्री द्वारा रचित चरित काव्यों की भी चर्चा की गई है, जिनमें धन्ना अणगार, गजसुकुमाल, धर्मरुचि अणगार, चन्दनबाला, विजयसेठ-विजयासेठानी के चरित्र प्रमुख हैं। आचार्य श्री के साहित्य का भाषा एवं साहित्यिक विशेषता के आधार पर मूल्यांकन किया गया है। पुस्तक का सम्पादन श्री धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर ने किया है।

कवयित्री महासती श्री जड़ावकँवर जी म.सा. की काव्य-साधना- डॉ. इन्द्रा जैन, ***प्रकाशक***- सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003, दूरभाष-0141-2575997, 2571163, फैक्स- 0141-2570753, ***पृष्ठ***-16+140, ***मूल्य***-15 रुपये, ***सन्***-2012

जैन परम्परा में कवयित्री साध्वियों की संख्या नगण्य रही है, किन्तु रत्नसंघ की साध्वी जड़ावकँवर जी (विक्रम संवत् 1898-1972) का नाम श्रेष्ठ कवयित्रियों में लिया जा सकता है। रत्नसंघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्यश्री कजोड़ीमल जी म.सा. के समय महासती रम्भाजी म.सा. की शिष्या के रूप में जड़ाव जी ने संवत् 1922 में 24 वर्ष की वय में प्रव्रज्या अंगीकार की। आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. का भी आपको सान्निध्य प्राप्त हुआ।

महासती जड़ावकँवर जी की रचनाएँ स्तुतिपरक, कथा-आश्रित एवं उपदेश प्रधान हैं। उनकी रचनाओं का संग्रह महिला-मण्डल, जयपुर के द्वारा 'स्तवनावली' नाम से प्रकाशित किया गया था, जो अभी दुष्प्राप्य/अप्राप्य है। उस कृति को आधार बनाकर डॉ. इन्द्रा जैन ने साहित्यकार, जैन मनीषी विद्वान् डॉ. नरेन्द्र भानावत के मार्गदर्शन में लघुशोध प्रबन्ध लिखते हुए जो अनुशीलन किया था, उसी का परिष्कृत रूप प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत कृति में उन्होंने जड़ावजी महाराज की चार अप्रकाशित कृतियाँ प्रकाशित की हैं, वे हैं- 1. आलोयणा, 2. मन की गति-लावणी, 3. श्री पारसनाथ स्तवन, 4. श्री भावरेल की ढाल।

स्तुतिपरक रचनाओं में नवकार मंत्र, चार शरण, तीर्थंकर, विहरमान, गणधर एवं सन्त-

सतियों को विषय बनाया है। सन्त-सतियों में उन्होंने श्री बालचन्द जी म.सा., श्री सुजानमल जी म.सा., श्री चन्दनमल जी म.सा., श्री कजोड़ीमल जी म.सा., श्री विनयचन्द जी म.सा., श्री देवीलाल जी म.सा. एवं महासती श्री रम्भा जी की स्तुति की है। उपदेशपरक रचनाओं में कषाय-त्याग, सप्त-व्यसन-त्याग, विनयभाव, व्रत-पालन, अनित्य बोध आदि विषय चुने हैं। क्रोध के सम्बन्ध में वे लिखते हैं-

क्रोध-मान चाण्डाल सरीखो, भाख्यो केवल नाणी।
आगे पाछौ कोइय न सोचतो, तोड़े प्रीत पुराणी रे।।
नेह घटावे बेर बंधावे, अपजस पेड़ो बजावे।
तप, जप, संजम, मूल गमावे, तो नरक निगोद भमावे।।

सांसारिक त्यौहारों को उन्होंने आध्यात्मिक रंग में रंगने का प्रयत्न किया है। उनकी रचनाओं में परीषह-जय, पौषधव्रत, 33 आशातना, इन्द्रियनिग्रह, सामायिक के 32 दोष, समकित आदि पर भी प्रकाश प्राप्त हुआ है।

लेखिका ने जड़ाव जी की काव्य-साधना का साहित्यिक दृष्टि से मूल्यांकन किया है। उल्लेखनीय है कि ये रचनाएँ विभिन्न रागों में निबद्ध हैं।

धर्म और प्रेम

संकलन : श्री अरविन्द लोढ़ा

1. जिसमें आलोचना नहीं, अनुमोदना की जाती है, जिसमें सृष्टि को नहीं दृष्टि को महत्त्व दिया जाता है, जिसमें पर्याप्ति को नहीं, प्रगति को प्राथमिकता प्रदान की जाती है, जिसमें व्यक्ति के आकार को नहीं, व्यक्ति के भीतर रहे हुए सत् संस्कारों को महत्त्व दिया जाता है, जिसमें लक्ष्मी को नहीं लक्ष्य को महत्त्व दिया जाता है उसे धर्म कहते हैं।
2. प्रेम वह शक्तिशाली तत्त्व है जो गति को प्रगति में और प्रगति को पूर्णता में बदल देता है। प्रेम-भाव के अभाव में गति दुर्गति में परिवर्तित हो जाती है। यह दुर्गति भावों की होती है, और जहाँ भावों की दुर्गति होती है वहाँ भवों की दुर्गति निश्चित है।
   प्रेम का आदान-प्रदान करने से व्यक्ति का जीवन उसका नहीं रहकर सबका हो जाता है, और प्रेम नहीं देने से व्यक्ति का जीवन सबका नहीं होकर उसका ही रह जाता है।
3. प्रेम मृत्यु में जीवन की तरह, दुःख में सुख की तरह , व्याधि में समाधि की तरह, बंजर में बारिश की तरह, हार में जीत के जश्न की तरह, निराशा में आशा की तरह, नरक में स्वर्ग की तरह, अंधेरे में प्रकाश की तरह, दुश्मन में दोस्त की तरह, एक में ग्यारह की तरह, चिंतन में चिन्मयता की तरह, वन में उपवन की तरह, असाता में साता की तरह, थकावट में ताकत की तरह, सपनों में अपनों की तरह कार्य करता है।

-L-I-22, मण्डोर मण्डी, जोधपुर (राज.)

समाचार-विविधा

आचार्यप्रवर का महावीर नगर, जयपुर में चातुर्मासार्थ सोत्साह मंगल-प्रवेश

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा का 2 जून 2012 को झोटवाड़ा से जयपुर के लालभवन हेतु विहार हुआ। विहार में जयपुर के श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह छलक रहा था। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने गुरुदेव की जय-जयकार के साथ पदयात्रा करते हुए वर्षों पश्चात् गुरुदेव के पदार्पण पर हर्ष प्रकट किया। पूज्य आचार्य भगवंत 2 से 19 जून तक लाल भवन विराजे। 3 जून को क्रियोद्धारक आचार्यप्रवर पूज्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. का 167वाँ पुण्य स्मृति-दिवस यहाँ तप-त्याग के साथ मनाया गया। उस दिन की उपस्थिति इतनी अधिक रही कि लाल भवन का विशाल परिसर छोटा पड़ गया। यहाँ के अनुभवी श्रावक बता रहे थे कि पर्युषण पर्व जैसा उस दिन का परिदृश्य था। 150 से अधिक एकाशन, दया, आयम्बिल एवं उपवास की आराधना हुई। पूज्यवर्य श्री यहाँ से विहार कर संत-मण्डली के साथ 20 जून को तख्तेशाही रोड स्थित रत्न स्वाध्याय भवन, 21 जून को बजाज नगर स्थित आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पधारे। संस्थान में अध्ययनरत छात्रों को यथोचित प्रेरणा की। 22 जून को मालवीय नगर पधारे। आचार्यप्रवर के पदार्पण से सभी स्थानों पर अच्छी धर्माराधना हुई।

पूज्य आचार्यप्रवर विगत 8 वर्षों से बिना किसी पूर्व घोषणा के चातुर्मास स्थल पर प्रवेश का क्रम बनाए हुए हैं। उसी क्रम में 23 जून को प्रातः लगभग 7.15 बजे पूज्य श्री संत-मण्डली के साथ महावीर नगर की ओर विहार के लिए ज्यों ही तत्पर हुए, श्रद्धालु गुरुभक्तों का आना प्रारम्भ हो गया। पूर्ण जोश, उत्साह व भक्ति से जयघोष का निनाद समूचे मार्ग में रहा। अधिकतर भाई धवल कुर्ता-पायजामा पहने एवं बहिनें चूनड़ी ओढ़कर विहार-यात्रा में आई। एक जैसी वेशभूषा दूर तक आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी। महावीर नगर पहुँचते-पहुँचते भक्तों का सैलाब उमड़ता गया। सभी के मन प्रमोद भावना से ओतप्रोत थे। पूज्य आचार्यप्रवर सजगतापूर्वक आगे-आगे चरण बढ़ा रहे थे। सन्त-मण्डली आपका अनुकरण कर रही थी। लगभग 8.05 बजे आचार्यप्रवर के श्रीचरणों ने महावीर नगर स्थित स्वाध्याय भवन को पावन किया। मंगल-प्रवेश के समय जोधपुर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, अलवर, हिण्डौन, बैंगलोर,

चेन्नई, मुम्बई, दूदू, माधवनगर, आलनपुर आदि विभिन्न स्थानों से भी श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

आचार्यप्रवर के इस चातुर्मास से सम्पूर्ण जयपुर में खुशी की लहर है। इसलिए प्रवेश के अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं की इतनी उपस्थिति हुई कि वहाँ का विशाल सभा भवन भी छोटा पड़ गया। धर्म सभा में पूज्य गुरुदेव ने विराजकर श्रीमुख से सुमधुर शब्दों में 'अरिहंत जय जय, सिद्ध प्रभु जय-जय' प्रार्थना का शुभारम्भ किया। समवेत स्वर से धर्मस्थल गूँज उठा।

मंत्री श्री विमलचंद जी डागा ने कहा कि पूज्य गुरुदेव का मंगल-प्रवेश आज एक नया संकेत लेकर आया है। हमारे अन्दर भी सद्गुणों का, साधना की भावना का, ज्ञान-दर्शन-चारित्र का प्रवेश हो, इस गुलाबी नगरी में बहुश्रुत श्री विनयचंद जी म.सा. का 14 वर्ष तक विराजना हुआ। उस समय श्रद्धा-भक्ति की भावना के भाव प्रस्फुटित एवं पल्लवित हुए। आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. ने भी सेवा का इस धरा पर आदर्श उपस्थित किया था। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की इस महानगरी पर सदैव कृपा रही है। आपका चातुर्मास पूर्व की भांति यशस्वी रहेगा, इसमें संदेह नहीं। हम श्रावक भी अनवरत धर्म-साधना में आगे बढ़ते हुए इस चातुर्मास को सफल बनाने का प्रयत्न करेंगे। पूज्य श्री सामायिक-स्वाध्याय, संवर-साधना से प्रमुदित रहते हैं। व्यसन-मुक्ति, रात्रि-भोजन त्याग एवं संस्कार-निर्माण आपका मिशन है। हम इन सभी लक्ष्यों की पूर्ति में सजग रहें, व्रती श्रावक बनें, ब्रह्मचर्य का पालन करें एवं पाँच माह रात्रि-भोजन त्याग रखें। हम कोई न कोई नियम लेकर आचार्य भगवंत के संकेत को शिरोधार्य करें।

लोढ़ा परिवार द्वारा समवेत स्वर में भावना प्रकट की गई-

गुरुदेव मेरे हीरा, भव पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा लेना।
गुरु हस्ती को निशदिन, है वन्दन मेरा।
परम उपकारी हैं, गुणगान करें उनका।।

श्री राजेन्द्र जी पटवा ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि हम सामायिक, संवर, पौषध रूपी साधना करेंगे एवं संसार से विरक्त होंगे तो हमारा जीवन सफल होगा।

महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने फरमाया- आठ सम्पदाओं की शुद्ध सम्पदा से सम्पन्न पूज्य आचार्य भगवंत का पदार्पण हुआ है। गुरुदेव की महर से हमें सन्निधि का सुयोग पाँच माह तक मिलेगा। आज जो अवसर मिला है, इससे यहाँ के अमीरों को अमर बनने का योग मिला है। संत-सती वृन्द 23 हैं। आज प्रवेश भी 23 तारीख को हुआ है। 23 का योग पाँच

होता है। हमारी पाँच महाव्रतों की साधना तो निराबाध रूप से पले ही, आप चातुर्मास सिद्धि का सिक्सर भी लगायें तथा धर्म-साधना का स्कोर बनायें। प्रत्येक शुभ प्रवृत्ति में शतक लगायें, ऐसी भावना है, विनति है।

महासती श्री सुयशप्रभा जी म.सा. ने अपनी वाणी व्यक्त करते हुए कहा कि आज का प्रवेश जन-जन के लिये सुखदायी है। सन्तों का शुभागमन तप से निर्जरा करने वाला, जागृत करने वाला एवं आनन्ददायी है। आप राग-द्वेष को मिटाकर हृदय का परिवर्तन करें। हमारी भी ज्ञान-दर्शन-चारित्र में अभिवृद्धि हो।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपनी अमृतमयी वाणी मे फरमाया कि चातुर्मास के प्रति आपका उत्साह सराहनीय है। इस चातुर्मास का लाभ लेने के लिए दृढ़ संकल्पी बनें। भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने का लक्ष्य बनायें। अपनी प्रवृत्ति द्वारा स्वभाव में आने का प्रयास करें। संतों के चातुर्मास में धर्मस्थान पर आकर साधना का लक्ष्य रखें। जो जिस तरीके से पुरुषार्थ कर सकें, वह अवश्य करें। प्रार्थना के माध्यम से, स्वाध्याय से, संवर से, ध्यान के अनूठे उपक्रम से, जिसको जो अच्छा लगे, उस मार्ग से भीतर के आनन्द को प्राप्त करें। धर्म की राह पकड़ कर अपने आपका, संघ समाज का उत्थान करने में सहभागिता होगी तो सभी का कल्याण होगा। कल दुकान से छुट्टी का दिन है। यहाँ आकर आस्रव से छुट्टी करने के लिये संवराराधना करें। इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ।

विशेष- बाहर से पधारने वाले श्रावक-श्राविकाओं को निवेदन है कि चेन्नई, मुम्बई से आने वाली गाड़ियों का ठहराव दुर्गापुरा स्टेशन पर रहता है। यहाँ से महावीर नगर स्थानक 2 कि.मी. की दूरी पर है।

संयोजक-चातुर्मास समिति- श्री कैलाशचन्द जी हीरावत-0141-260809, 98281-63380

कार्यालय व्यवस्था समिति- श्री नरपतचंद जी सिंघवी-9829793416, श्री एन.एल. जैन-0141-2711518

आवास व्यवस्था समिति- श्री अनिलकुमार जी सिंघवी-9829198293, श्री पुखराज जी जैन-9414042498, श्री सुनील जी हीरावत-9828602030, श्री सुभाष जी चोरडिया-9829854854

यातायात व्यवस्था समिति- श्री संजयकुमार जी कोठारी (संजय)-9829755265, श्री वीरेन्द्रजी चोरडिया (वीरूजी)-9828406869

-कैलाशचंद हीरावत, संयोजक-चातुर्मास समिति, जयपुर (राज.

उपाध्यायप्रवर का मेड़ता में मंगल-प्रवेश

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 का मीरानगरी-मेड़ता स्थित वीर भवन में दिनांक 23 जून 2012 को प्रातः 8.15 बजे चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश हुआ। इस अवसर पर जोधपुर,पाली, पीपाड़शहर, भोपालगढ़, गोटन, अजमेर, आचीणा, कुचेरा, जसनगर, नागौर, बीकानेर आदि अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु भाई-बहिनों का प्रातःकाल से पब्लिक पार्क के पास स्थित भवन में जहाँ उपाध्यायप्रवर विराजमान थे, पधारना प्रारम्भ हो गया। प्रातः 7.45 बजे के लगभग उपाध्यायप्रवर ने विहार किया। सैंकड़ों की संख्या में भाई-बहिन विहार में जय-जयकार के नारों के उद्घोष के साथ विहार की शोभा बढ़ा रहे थे। आगे-आगे उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों के साथ पीछे भाई-बहिन अनुशासन के साथ चल रहे थे। मार्ग में भजन-प्रार्थना का कार्यक्रम अनवरत रूप से चल रहा था। बाजार के दोनों ओर स्थानीय भाई-बहिनों की भीड़ विहार के नज़ारे का अवलोकन कर रही थी। उपाध्यायप्रवर के वर्षो बाद मेड़ता चातुर्मासार्थ पधारने पर स्थानीय भाई-बहिनों में अपूर्व उत्साह था। मेड़ता के प्रमुख मार्गो से विहार करते हुए उपाध्यायप्रवर अपनी सन्तमण्डली सहित लगभग 8.15 बजे वीर भवन पधारे। उसी समय प्रवचन सभा का आयोजन रखा गया। सर्वप्रथम संघमंत्री श्री हस्तीमलजी डोसी ने मेड़ता में हुए चातुर्मासों के इतिहास को प्रस्तुत करते हुए आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के प्रति मेड़ता श्रीसंघ को चातुर्मास प्रदान करने हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। इस अवसर पर श्री सुरेशजी ओस्तवाल-गोटन, बालिका मण्डल-मेड़ता, श्री सुमतिचन्दजी मेहता-पीपाड़शहर, भूधर जैन ज्ञानशाला-मेड़ता, श्री हंसराजजी चौपड़ा-गोटन, श्राविका मण्डल मेड़तासिटी, श्री दिलरूपचन्दजी भण्डारी, श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर, श्री कपिलजी दुधेड़िया-मेड़ता, श्री दिनेशजी सुराना-चेन्नई, श्री गौतमचन्दजी सुराना-मेड़ता, श्री नौरतनजी मेहता-जोधपुर, ब्यावर महिला मण्डल, श्री गणपतराजजी जामड़, श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा, डॉ. धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर आदि महानुभावों ने गीतिका एवं वक्तव्यों के माध्यम से उपाध्यायप्रवर के पदार्पण पर हर्ष व्यक्त किया तथा गुणगान करते हुए चातुर्मास के महत्त्व को प्रतिपादित किया। बालिका मण्डल ने 'श्री संघ का मन हर्षाया' भूधर जैन ज्ञानशाला की छात्राओं ने "छायी छायी खुशियाँ अपार" मेड़ता नगरी में श्राविका मण्डल ने 'मिल जुलकर मंगल गाओ आयी तारण तिरण जहाज जी' के माध्यम से भाव स्वागत किया।

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. ने चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के अवसर पर सुन्दर गीतिका प्रस्तुत करते हुए चातुर्मास में अधिक से

अधिक धर्म-ध्यान करने की प्रभावी प्रेरणा की। **श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने मीरानगरी-मेड़ता की पुण्यवानी का उल्लेख करते हुए पूर्व में साधना करने वाले कतिपय विशिष्ट श्रावकों के बारे में जनसभा को जानकारी करवाई एवं चातुर्मास का पूरा लाभ लेने हेतु प्रेरणा की।

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर ने पुण्यधरा मेड़ता की पुरानी यादों को तरो-ताजा करते हुए बताया कि न मेड़ता हमारे लिए नया है, न हम मेड़ता के लिए नये हैं। पहले भी यहाँ अनेक महापुरूषों के चातुर्मास हुए हैं। इस बार भी आप लोगों को धर्माराधना करने का सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ है। अधिक से अधिक भाई-बहिन साधना-आराधना में भाग लेने का लक्ष्य रखें यही भावना है। संघमंत्री श्री हस्तीमलजी डोसी की उद्घोषणा पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, एकाशन आदि के पच्चक्खाण किए। बाहर गाँव से पधारने वाले सभी भाई-बहिनों की भोजन व्यवस्था ओसवाल पंचायत भवन में रखी गई। मेड़ता श्रीसंघ ने उत्साह के साथ आतिथ्य-सत्कार का लाभ लिया। सम्पर्क सूत्र हेतु जिनवाणी का जून अंक द्रष्टव्य है।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री

महासती-मण्डलों का विभिन्न चातुर्मास स्थलों पर मंगल-पदार्पण

साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 7 का 26 जून 2012 को घोड़ों का चौक स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में मंगल-प्रवेश सोत्साह सम्पन्न हुआ। सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का महावीर कॉलोनी-बांदनवाड़ा के स्थानक भवन में 24 जून को मंगल प्रवेश हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का सुभाष नगर-उज्जैन के स्थानक में 24 जून को मंगल-प्रवेश हुआ। तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का अरिहन्त नगर-अजमेर में, विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का कंवलियास (जिला-भीलवाड़ा) में, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा का रामपुरा बाजार-कोटा में, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का धनोप (जिला-भीलवाड़ा) में, व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का महावीर नगर, जयपुर में, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा का कोयम्बटूर में, व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा का तिरुवन्नामल्लै में, व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा का लासूर स्टेशन, व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का हिण्डौन सिटी में, सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का अलीगढ़-रामपुरा में तथा व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा का

विज्ञान नगर-कोटा में दिनांक 23 जून से 26 जून के मध्य चातुर्मास स्थलों पर मंगल-प्रवेश सम्पन्न हुआ। चातुर्मास स्थलों के सम्पर्क सूत्र जिनवाणी के जून अंक में द्रष्टव्य हैं।

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 22 जुलाई को होगी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर की कक्षा 1 से 12 तक की आगामी परीक्षा 22 जुलाई 2012, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि आवेदन-पत्र एवं पाठ्यपुस्तकों की प्राप्ति हेतु शिक्षण बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें। **सम्पर्क सूत्र-** सुशीला बोहरा-संयोजक-94141-33879, धर्मचन्द जैन-रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय-0291-2630490, Email-info@jainratnaboard.com, Website- www.jainratnaboard.com

स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर जयपुर में 15 जुलाई से

स्वाध्यायियों के ज्ञान में उत्तरोत्तर विकास हो, इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर दिनांक 15.07.2012 से 20.07.2012 तक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन सान्निध्य में जयपुर में आयोजित किया जा रहा है। उक्त शिविर में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा पर्युषण के अष्टदिवसों के विषय-अन्तगडसूत्र-वाचन, वक्तृत्वकला, गायनकला आदि का विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। स्वाध्यायी इस शिविर में पर्युषण पर्व में सम्पन्न कार्यक्रमों एवं विषयों की तैयारी के साथ पधारें ताकि शिविर में उन विषयों का विशेष ज्ञान प्राप्त हो सके। शिविर में अनुशासित होकर पूरे समय तक भाग लेने वाले शिविरार्थियों को आने व जाने का द्वितीय श्रेणी का वास्तविक मार्गव्यय प्रदान किया जाएगा। शिविर में पधारने पर आपको परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा। शिविर में सभी स्वाध्यायी अवश्य पधारें तथा जिन्होंने प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लिया है एवं स्वाध्यायी सेवा देने हेतु कटिबद्ध हैं, वे भी शिविर में भाग ले सकते हैं। अपने पधारने की स्वीकृति से आप टेलीफोन के माध्यम से इस कार्यालय को अवगत करावें। शिविर में भाग लेने हेतु आप 14.07.2012 को सायंकाल तक जयपुर पहुँचें। स्वीकृति निम्न टेलीफोन नम्बर पर देंवे- 0291-2624891 (प्रात: 10बजे से सायं 5 बजे तक), 9414267824

शिविर स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर नगर, जयपुर हॉस्पिटल के पीछे, टोंक रोड, जयपुर (राज.), फोन नं. 9829198293, 9829755265

रिपोर्ताज

श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन 48 शिविरों की उपलब्धियाँ

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में 48 स्थानों (जयपुर एवं जोधपुर के शिविर पृथक्) पर ग्रीष्मकालीन धार्मिक शिक्षण शिविरों का आयोजन 24 मई से 10 जून 2012 तक हुआ। धार्मिक शिक्षण-प्रभारी समर्पित कर्त्तव्यनिष्ठ युवारत्न श्री जितेन्द्र जी डागा ने अपने सहयोगियों के साथ सभी शिविर-स्थानों की यात्रा की एवं वहाँ जो पाया उसी की रिपोर्ट यहाँ प्रस्तुत है)

प्रभु महावीर की आदेय अनुपम वाणी स्थानांग सूत्र (तृतीय स्थान सूत्र 3) की टीका करते हुए पूज्य आचार्यश्री आत्मारामजी म.सा. ने लिखा है कि यदि कहा जाए कि प्रव्रज्या ही मोक्ष है तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी, क्योंकि कभी-कभी कारण को भी कार्य मान लिया जाता है, जैसे बरसते बादल को देखकर कृषक वर्ग कह उठता है-आज तो बादलों से सोना ही सोना बरस रहा है, ये पानी की बूंदे नहीं अन्न के दाने बरस रहे हैं। इसी कारण प्रव्रज्या ग्रहण करने वाले साधक को देखकर विचारशील गुणग्राही व्यक्ति कहने लगते हैं कि-यह साधक प्रव्रज्या के रूप में मोक्ष को ग्रहण कर रहा है-क्योंकि प्रव्रज्या ही मोक्ष का निश्चयात्मक कारण है। प्रव्रज्या छः काय के जीवों को अभयदान देने की एक उद्घोषणा है। अर्द्धशती पूर्व ऐसी उद्घोषणा करने वाले आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं उपाध्याय भगवन्त श्री मानचन्द्रजी म.सा. के पचासवें दीक्षा-दिवस इस वर्ष हम सभी के सन्मुख हैं। अतः सूर्य-चन्द्र सम जिनशासन को आलोकित करने वाले इन दोनों महापुरुषों को भावपूर्ण श्रद्धा की अभिव्यक्ति करने हेतु जनमानस सभी ओर उत्सुक था, पूर्ण रूप से तैयार था। उनके हृदय भक्ति के निर्झर थे। श्रद्धा का वेग उन हृदयों में उमड़ रहा था। ऐसे उर्वर समय में ग्रीष्मकालीन अवकाश में 50वें जन्म-दिवस पर जयपुर-जोधपुर के अतिरिक्त 50 शिविरों का लक्ष्य रखा गया तो सहज ही रूपरेखाएँ बनी और 48 शिविरों में 4700 (लगभग) शिविरार्थियों ने अति उत्साह के साथ भाग लिया।

24 मई 2012 प्रातः 7 बजे विभिन्न स्थलों के स्थानकों में नन्हें-नन्हें बालकों का कलरव गूँज उठा। धार्मिक उपकरण ले जब वे गर्मी के अवकाश में अपने विश्राम को तज, ज्ञानार्जन हेतु स्थानकों की ओर बढ़ रहे थे तो युवक, श्रावक, श्राविका, बुजुर्ग सभी का मन प्रसन्नता, आत्मसंतोष से ओतप्रोत था। आचार्य भगवन्त एवं मुनिमण्डल के संकेत, कृपा से प्रारम्भ इन शिविरों के प्रथम दिन के आगाज से ही शिविरों की सफलता की पृष्ठभूमि

रची जा चुकी थी और फिर शुरू हुआ इन नन्हें-नन्हें अद्भुत मेधा शक्ति के धनी निर्धारित लक्ष्य को उपलब्ध समय में रुचिपूर्वक प्राप्त करने वाले इन शिविरार्थियों के दर्शनों का दौर।

श्रद्धा भक्ति में एवं नवतत्त्वों की जानकारी में सभी के लिए आदर्श पोरवाल क्षेत्र में शिविरों का संचालन, अध्ययन सभी के लिए प्रेरणास्पद था। **अलीगढ़-रामपुरा** में 199 शिविरार्थी पूर्ण अनुशासन के साथ अध्ययन कर रहे थे, अद्भुत प्रगति थी। उनमें से 23 नये शिविरार्थियों ने सामायिक कण्ठस्थ कर ली तो 8 ने प्रतिक्रमण सम्पूर्ण याद कर लिया था। 2-4 बजे के समय में पुस्तकालय खुले थे। धार्मिक कथाओं हेतु शिविरार्थी स्थानकों में बैठकर धर्मकथानुयोग में वर्णित महापुरुषों के जीवन पर शोध कर रहे थे। शिक्षकों, विद्वानों से गजसुकुमाल, अनाथी मुनि, समुद्रपाल, जयघोष, विजय घोष, तेतली पुत्रों के बारे में जिज्ञासा कर अपनी प्रस्तुति तैयार कर रहे थे। सभा में 199 में से 103 बच्चों ने खड़े होकर अष्टमी, चतुर्दशी को रात्रि भोजन एवं हरी त्याग के पच्चक्खान समझ कर माहौल से प्रेरित होकर लिये। श्री पवनजी जैन, श्री घनश्यामजी, श्री धर्मेन्द्रजी, श्री टीकमजी ने सभी शिविरों के कुशल संयोजन में कहीं कसर नहीं छोड़ रहे थे। पचाला, चौरू, उनियारा अन्य जगह के शिविरार्थी प्रतिदिन वहाँ दूर-दूर से अपनी कोमलता तज आ रहे थे। **चौथ का बरवाड़ा** में जब नन्हीं-सी बच्ची ने गजसुकुमाल की कथा को बड़े भावपूर्ण तरीके से रखा तो सभी ने दांतों तले अंगुली दबा ली। पूछा, क्या इससे वैराग्य की अभिवृद्धि हुई, तो नन्हीं बालिका का उत्तर था- हाँ (15-20%)। उनका यह कहना भर ही सन्तुष्टि प्रदान करने वाला एवं मनोबल बढ़ाने वाला था। अध्ययन के क्षेत्र में शिविरार्थी तीव्र गति से आगे बढ़ रहे थे एवं अल्पकाल में ही अच्छी पृष्ठभूमि बना चुके थे। श्री भैरूलालजी, श्रीमती सुजाताजी, श्रीमती हर्षदेवीजी, श्री नरेन्द्रजी, श्री नरेशजी इत्यादि सभी पूर्ण जोश से लगे हुए थे। वहाँ लगभग 100 की संख्या थी। **कुशतला** में जाते ही वह दृश्य सजीव हो उठा जब आदरणीय श्री सौभाग्यमलजी जैन (सरपंच श्री सुरेशजी जैन के पिता) के आँखों में शिविरों के प्रारम्भ में खुशी के आँसू छलक उठे थे। महासती श्री ज्येष्ठाजी (आचार्यश्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती) वहाँ विराज रही थीं। महासती जी ने असीम अनुकम्पा कर शिविरार्थियों को प्रभावी प्रेरणा दी एवं अष्टमी-चतुर्दशी के त्याग पच्चक्खान कराये। 55-60 शिविरार्थी शांत सौम्य व्यवहार वाले थे। जब उनसे धर्म सम्बन्धी पृच्छा की जा रही थी तो बड़े आत्म-विश्वास के साथ उत्तर दे रहे थे। सरपंच श्री सुरेशचंदजी जैन, श्री भैरूलालजी इत्यादि सभी पूर्ण जोश से शिविरों में अपना योगदान दे रहे थे। **सुमेरगंजमंडी** में कई नये शिविरार्थी जुड़े। नये शिविरार्थियों में सीखने की लगन थी एवं साथ ही साथ वहाँ पर श्री राकेशजी जैन, श्री राजेन्द्रजी जैन, श्री ऋषभजी जैन आदि कर्मठ पदाधिकारी थे जो हृदय से

जिनशासन की अभिवृद्धि की हृदय में ज्योत जलाए हुए थे। लगातार शिविर होने से शिविरार्थियों की प्रगति एकाएक झलकने लगी थी। उनका अध्ययन एवं प्रगति दोनों ही संतोषजनक व प्रभावी थी। समुद्रपाल पर एक ही दिन में तैयार की गई कथा को जब एक शिविरार्थी ने रखा एवं संज्ञा इत्यादि के थोकड़े पर सटीक जवाब आए तो बड़ी प्रसन्नता हुई। लगभग 55 की संख्या वहाँ थी। पूर्व में **देई** के शिविरार्थियों की प्रगति देख स्वयं कृपालु आचार्य भगवन्त ने बहुत प्रमोद व्यक्त किया था। विराजित ज्ञानगच्छीय महासती श्री निर्मला जी म.सा. ने उनकी तत्त्वरुचि, अनुशासन को देख शिविरों के दौरान देई ही रुकने का निर्णय किया। शिविरार्थियों की रुचि, जयपुर सिद्धान्तशाला के छात्र योगेशजी जैन के प्रबल पुरुषार्थ एवं श्री रामपालजी, बाबूलालजी आदि की वजह से सुबह 7 से 9 बजे का शिविर आवासीय शिविर बन चुका था। बच्चे जब शाम को प्रतिक्रमण कर रहे थे, उनके संवेग को देखकर उनके साथ प्रतिक्रमण करने का सहज ही मन हो गया। उनकी रुचि को देखते हुए एवं उनकी धर्म श्रद्धा के सम्मान हेतु जिज्ञासाएँ जानने हेतु सम्पूर्ण शिष्ट मंडली वहीं बैठी रही और प्रभु महावीर के शासन की जयवन्तता को निखारती रही।

शहर सवाईमाधोपुर में 190 शिविरार्थी बहुत संयम-अनुशासित हो विराजे थे। एक तरफ सामायिक परिधान से लैस धवलसेना थी तो दूसरी ओर बालिकाएँ बड़े क्रमबद्ध तरीके से बैठी थीं। जब सभी ने एक साथ ईशान कोण की ओर वन्दना की तो वह दृश्य अद्भुत था। अध्ययन प्रारम्भ हुआ था, फिर भी कई शिविरार्थियों ने संतोषप्रद उत्तर दिये। सवाईमाधोपुर के आदर्श दम्पती श्री पदमचंदजी गोटेवाले, मंत्री श्री पारसचंदजी जैन, अध्यक्ष श्री बाबूलालजी, श्री अनिलजी, श्री मुकेशजी, कु. जयमालाजी जैन आदि सभी अध्ययन, अध्यापन शिविर व्यवस्थाओं में पूर्ण सहयोग कर रहे थे। **महावीर मंडी एवं आलनपुर** में शिविरार्थियों की संख्या क्रमशः 60 व 72 थी। कक्षाओं का विभाजन एवं शिक्षण सुचारु था। महावीरमंडी में श्री धनसुरेशजी, आशीषजी आदि के सबल प्रयासों से शिक्षण-अध्यापन में नए आयाम स्थापित हुए। पोरवाल क्षेत्र में ऐसी व्यवस्था को वहाँ की सशक्त, समर्पित, सम्भागीय संयोजकों की टोली ने सम्पन्न किया, जिसमें मुख्यतः श्री रविन्द्रजी, लल्लूलालजी, धर्मेन्द्रजी, प्रीतजी जैन एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के श्री त्रिलोकजी जैन के अद्वितीय प्रयास सराहनीय रहे। ये सभी शिविरों के पूर्व पोरवाल क्षेत्र के एक-एक गाँव जाते हैं, साथ-साथ शिविर की जानकारियों से अवगत करा शिक्षकों को तैयार करते हैं। इनके प्रयासों का जितना अनुमोदन किया जाये वह कम है।

आदर्श नगर, सवाईमाधोपुर में प्रथम बार शिविर लगा था, पर वहाँ का उत्साह देखते ही बनता था। अध्यक्ष एवं सम्पूर्ण कार्यकारिणी वहाँ शिविर को सफल बनाने हेतु

जुटी हुई थी। विरक्ता बहिनें प्रज्ञाजी, अंतिमबालाजी अपनी ज्ञानगंगा से जिनवाणी की धारा को पुष्ट कर रही थीं। सभी में उत्साह था। नया क्षेत्र होने के बावजूद आशातीत 100 के लगभग वहाँ की संख्या थी। बजरिया क्षेत्र अपने आप में विशिष्ट है। आदरणीय श्री पदमचंदजी जैन, श्री गणपतलालजी जैन, युवा उत्साही श्री राजेशजी, अंकितजी आदि सभी का सहयोग सराहनीय था। श्रीमती जूलीजी जैन जिनका पुत्र अभी बहुत छोटा था एवं हाथ में फ्रेक्चर होने के बावजूद पूर्ण मनोयोग से अध्ययन करा रही थी। मात्र यहाँ ही नहीं, अपितु सभी जगह शिविरों की यह विशेषता रही कि सभी शिक्षक कर्मों की निर्जरा हेतु उल्लास, उमंग के साथ निःस्वार्थ निष्पक्ष भाव से अध्ययन कराते हैं, यह साफ दृष्टिगोचर हो रहा था। **हाउसिंग बोर्ड** में करीब 112 की संख्या रही। अध्ययन निरन्तर चल रहा था। शिविरार्थियों में उत्साह था। सम्पूर्ण यात्रा के दौरान सुश्रावक श्री प्रमोदजी हीरावत, वीर भ्राता श्री मेघराजजी जैन साथ थे। लगातार तीन वर्ष से **कोटा** के शिविरों का कुशल संचालन करने वाले श्री प्रेमचंदजी जैन, हनुमान प्रसादजी जैन, ऋषभजी, प्रदीपजी, रविन्द्रजी आदि के प्रयासों से 150-160 की संख्या निरन्तर बनी हुई थी। बहुत उत्साह-उमंग एवं आत्मीयता पूर्ण माहौल के बीच शिविरार्थियों का यह अध्ययन उनके व्यक्तित्व निर्माण, प्रामाणिक जीवन की पृष्ठभूमि तैयार कर रहा था। श्रावक-श्राविकाओं का एक मजबूत संगठन भी सहज ही तैयार होता चला जा रहा था। परस्पर आत्मीयता का संचार निरन्तर वृद्धिशील था

पल्लीवाल क्षेत्र में पिछले वर्ष के एक आदर्श शिविर के आयोजक **गंगापुरसिटी** की युवाशक्ति श्री पवनजी, श्री मनोजजी, श्री शीतलजी, श्री धर्मेन्द्रजी, श्री शिवचरणजी पटवारी के नेतृत्व में पूरे प्रयास कर रही थी। सभी जगह पाठ्यक्रम के विभाजन एवं शिविरार्थियों के सुगम एवं सामयिक अध्ययन हेतु समय सारिणी बनाने वाले श्री पवनजी सहित सभी शिक्षक शिविरार्थियों के अध्ययन को सुदृढ़ बनाने हेतु प्रयासरत थे। 150-170 की संख्या के साथ यह शिविर निर्बाध गति से आगे बढ़ रहा था। **हिण्डौनसिटी** में श्री मूलचन्दजी जैन के अत्यधिक प्रयासों से प्रिंसिपल श्री धर्मचंदजी जैन ने शिविर की कमान सम्भाली एवं युवा श्री राकेशजी, सुमतजी, राजेशजी, अशोकजी सभी ने पूर्ण सहयोग दिया उसके फलस्वरूप संख्या एकाएक 260 पहुँच गई। गणना के साथ अनुभवी व्यक्ति के संचालन के कारण गुणात्मक परिवर्तन भी दिखा। दशवैकालिक के चार अध्ययन वहाँ की मेधावी बालिका से सुन बड़ा प्रमोद हुआ। समिति गुप्ति, उपयोग का थोकड़ा, संज्ञा थोकड़ा, सामायिक, प्रतिक्रमण सभी बच्चों को याद होते जा रहे थे। शिविरार्थियों ने धर्मकथाएँ बड़ी रोचकता के साथ सुनायी। **महुवा** में पूर्व प्राध्यापक श्री अशोकचंदजी जैन

की अध्ययन शैली एवं समर्पण अनूठा रहा। सिरस इत्यादि अनेक जगहों से आमंत्रण होने के बावजूद वो बड़ी निष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता के साथ अपने शिविर के बच्चों के अध्ययन की राह को सुगम कर रहे थे। वहाँ के बच्चों की अभिव्यक्ति में अलग ही आत्मविश्वास था, जोश था एवं उनका उच्चारण बहुत शुद्ध था। ब्राह्मण कुल में जन्मी पर कर्म से प्रभु महावीर के सिद्धान्तों को हृदयगंम करने वाली छात्रा सुश्री शर्मा ने प्रतिक्रमण बहुत शुद्ध सुनाया, साथ ही मयूरी के अण्डे की कथा भी सुनायी। शिविरार्थियों में संयोजकों एवं शिक्षकों के प्रति अटूट विश्वास एवं विनय था। **गंजखेरली** में एकाएक परिवर्तन था। पिछले वर्ष के अध्ययन से बहुत सन्तुष्टि नहीं थी। पूरे पल्लीवाल क्षेत्र में इस बार सिद्धान्तशाला के छात्रों को अध्यापन में लगाया गया था। वे भी प्रयास कर रहे थे, पर शायद तीन वर्ष की निरन्तरता के कारण बच्चों को अब पकड़ आ चुकी थी कि कैसे अध्ययन को आगे ले जाना है। छोटे-छोटे बच्चे सामायिक पूर्ण याद कर चुके थे। प्रतिक्रमण की ओर बढ़ रहे थे। पच्चीस बोल कंठस्थ थे। एक बालिका ने तो धारावाहिक नमोत्थुण का अर्थ सुनाया। शब्द, अर्थ, शब्द अर्थ की शृंखला को जिस तरीके से उसने रखा उससे ऐसा लगा कि कैसी अद्भुत प्रतिभाएँ है हमारे जिनशासन में। एक शिविरार्थी कि वैराग्यपूर्ण भजन की प्रस्तुति ने पूरे शिविर के बालकों को अभिभूत कर दिया। शिविरार्थियों को दशवैकालिक, गति-आगति, नवतत्त्व के थोकड़े याद होते चले जा रहे थे। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री धर्मचंदजी, सुरेशजी, मनीषजी, अजीतजी, प्रवीणजी जैन सभी का प्रयास सराहनीय था। मिनी कोटा **नदबई** जहाँ से आई.आई.टी. छात्र निकलते हैं वहाँ आई.आई.टी. में चयनित छात्र शिविर में आगे बढ़कर सेवा दे रहे थे। जुझारू एवं आदर्श, सम्भागीय संयोजक श्री नरेशजी जैन के सद्प्रयासों से वहाँ की संख्या 80 थी। **पहरसर** के छात्र उत्साह सहित आ रहे थे। शिविरार्थियों का अध्ययन सराहनीय था। एक बालिका रीयाजी जैन ने दशवैकालिक की गाथा, अर्थ, धारावाहिक सुनाया। गति-आगति कण्ठस्थ थी। कोई प्रश्न पूछो, तुरन्त सटीक जवाब सामने था। बच्चे शायद अध्ययन में रम चुके थे। नदबई के बच्चों की सहिष्णुता एवं अनुशासन सदैव प्रशंसनीय रहा है। **भरतपुर-मौहल्ला गोपालगढ़** स्वाध्यायियों की स्थली है। पतंगों का दिन था। फिर भी शिविरार्थी वहाँ शाम तक उपस्थित थे। अध्ययन चल रहा था। यहाँ की संगीतमय प्रस्तुति सदैव अनुकरणीय रही है। श्री प्रेमचन्दजी, बाबूलालजी, पारसचंदजी जैन जैसे वरिष्ठ व्यक्ति भी युवकों का जोश लिये हुये थे एवं पूरी तैयारी करा रहे थे। संख्या 60 की थी। **वासनगेट-भरतपुर** का दृश्य भी अद्भुत था। सिद्धान्तशाला के छात्र गजेन्द्रजी जैन ने वहाँ के शिविर को आवासीय जैसा बना दिया था। बच्चों का अध्ययन सुचारू रूप से चल रहा था। श्री धर्मेन्द्रजी, सुनीताजी,

रविन्द्रजी, अशोकजी जैन सभी सरल हृदय के व्यक्ति हैं। सरलता में धर्म टिकता है, यही वजह है कि उस क्षेत्र में एकाएक धार्मिक अभिवृद्धि होती चली जा रही थी। **खोह** में महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. स्वयं विराज रही थीं, जिससे शिविरार्थियों को जिनशासन की महत्ता का सजीव चित्रण हो रहा था। श्रद्धालु क्षेत्र में में संख्या 35 के करीब थी। मण्डावर एवं हरसाना में संख्या क्रमशः 60-60 की थी। सिद्धान्तशाला के छात्र अच्छा धर्माराधन करा रहे थे एवं मण्डावर के संयोजक भी पूरी तरह शिविरार्थियों की सेवा में जुटे थे। सम्यक्त्व के 67 बोल में पढ़ते हैं कि तीन दिन के भूखे को जैसे खीर खांड का भोजन मिल जावे तो बड़ी रुचिपूर्वक आहार करता है। वैसे ही श्रद्धावान रुचिपूर्वक धर्मध्यान करता है वैसा दृश्य **शाहगंज-मल्लपुरा** में देखने को मिला। महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. की प्रेरणा से तैयार सभी व्यक्तियों ने अध्ययन की सुचारू व्यवस्था होने का पूरा उपयोग किया। 35 की संख्या के शिविरार्थियों में से 25 ने अष्टमी-चतुर्दशी को रात्रि-भोजन त्याग एवं हरी त्याग के पच्चक्खान किए। पहली बार छात्रों ने शिविर में नवकार मंत्र जाना व सामायिक पूर्ण कंठस्थ की, चौबीस तीर्थंकरों के नाम, पाँच अभिगम इत्यादि रुचिपूर्वक सीखे। **आगरा मोती कटरा** में धनाढ्य-सम्पन्न परिवारों की महिलाओं, श्राविकाओं ने शिविर की कमान सम्भाली एवं बच्चों को अध्ययन कराने एवं संस्कार निर्माण में पूरे प्रयास किए। पल्लीवाल क्षेत्र की इस सम्पूर्ण यात्रा में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री प्रदीपजी हीरावत, श्री वीरेन्द्रजी जामड़ शिविरार्थियों का उत्साह बढ़ा रहे थे। तीन वर्ष की शिविर भूमिका एवं **अलवर** क्षेत्र के प्रभावक श्रावक-श्राविकाएँ श्रीमती मंजूजी-योगेशजी पालावत, चण्डालियाजी, संचेतीजी, अशोकजी पालावत सभी के उत्तम प्रयासों से 55 शिविरार्थियों ने गहन अध्ययन किया। शिविरार्थी, शिविर पूर्ण होने पर, परम श्रद्धेय आचार्य भगवंत एवं गंभीर प्रज्ञावान, सेवाभावी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के, गौरवशाली स्थानक लालभवन जयपुर में, दर्शन हेतु पधारे एवं युवा मनीषी श्री मनीषमुनिजी म.सा. की सेवा में अपनी प्रस्तुति दी तो मुनिश्री के चेहरे पर अविरल प्रमोद भाव थे। स्थविर संतों के मौन होने की वजह से मुनिश्री ने कृपा कर शिविरार्थियों को सम्भाला एवं अनमोल समय प्रदान किया।

अजमेर के वैशाली नगर में जुझारू परिस्थितियों में भी वहाँ की श्राविकाएँ श्रीमती नीलमजी, पीपाड़ाजी एवं युवा शीलव्रतधारी पाहना पाए का सदैव त्याग रखने वाली श्राविकाएँ, श्री प्रकाशचंदजी कुम्भट परोक्ष रूप से श्री रमेशचंदजी सिंघी शिविरार्थियों को सम्भाले हुए थे। भजन प्रतियोगिता का दिन था छोटी सी बालिकाओं ने कन्या महत्त्व एवं तीर्थंकरों की भक्ति में जो भजन प्रस्तुत किये वे अद्‌भुत थे। अजमेर के

महावीर नगर में 140 की संख्या थी। श्री नेमीचन्दजी कटारिया, श्री पारसचंदजी रांका, सुश्री ममताजी भंडारी एवं अन्य श्राविकाएँ पूरे प्रयास कर रही थीं। नन्हें-नन्हें बच्चे भी पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे थे। सामायिक सीखने वालों की संख्या अधिक थी। शिविर पूर्व मात्र 80 का अनुमान था, पर भगवन्तों की कृपा से ऐसी गंगा बही कि संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई। **किशनगढ़ शहर** में प्रथम बार लगे शिविर में बहुत उत्साह था। युवा अध्यक्ष श्री अशोकजी कोठारी, श्री विनयजी जामड़ एवं श्राविकाएँ सभी प्रयासरत थे। वहाँ के शिविरार्थियों में बहुत श्रद्धा थी। मदनगंज में शायद संतों के प्रवास एवं अद्भुत ध्यान शिविर के बाद सब धापे हुए थे। सांसारिक परिस्थितियों की वजह से भी कार्यकर्त्ता इतने नहीं थे। संख्या 80 थी। श्री महेन्द्रसिंहजी जामड़ जिनसे हम शिविर के विषय में सदैव सीखकर आते थे, उनकी कमी खल रही थी। श्री मनोजजी मेहता एवं श्री महेन्द्रसिंहजी डांगी को विशेष निवेदन करने पर एवं महासती श्री रतनकँवरजी म.सा. की प्रेरणा से शिविर में एकाएक प्रगति हुई। संख्या सवाई डेढ़ी हुई एवं अध्ययन भी सुचारू हो गया। **दूदू** में अध्यक्ष श्री विनोदजी मेहता सहित सकल संघ का आतिथ्य एवं आत्मीयता अनुकरणीय है। उनके यहाँ तो शिविर प्रारम्भ के दिन स्वयं बहुश्रुत मुनिराज श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. पधारे हुए थे। मिट्टी से माधो बनाने में सक्षम उनके स्वरों का ऐसा संचरण उस क्षेत्र पर हुआ कि शिविरार्थियों में अपूर्व उत्साह था। सुश्रावक श्री सरदारसिंहजी बोथरा, श्री मनीषजी मेहता एवं अनुज श्री जिनेन्द्रजी डागा सभी का उत्साह वर्धन कर रहे थे। **धनोप** में शुरूआती दौर में थोड़ी हिचकिचाहट रही, पर महासती श्री संतोषकँवरजी म.सा. के चातुर्मास की भोलावन वहाँ गई तो स्थिति एकाएक ही पटरी पर आ गयी। श्री भँवरलालजी, ज्ञानचंदजी मारू, पालडेचा, लोढ़ा परिवार एवं गोखरू परिवार से आने वाली दो शिक्षिकाओं से शिविर में अध्ययन का माहौल उत्तरोत्तर अच्छा हो गया। ब्यावर क्षेत्र के संयोजक श्री मनीषजी मेहता, मूलचंदजी भंडारी, शांतिलालजी सुराणा आदि धन्य हैं जो विषम परिस्थितियों में वीर प्रभु के शासन की सेवा में सदैव अग्रणी रहते हैं। उन सभी के प्रयासों से शिविर में संख्या 220 को पार कर गयी।

जलगाँव क्षेत्र में हम बड़े सहमे-सहमे गये थे। हांलाकि श्री महावीरचंदजी बोथरा, प्रशान्तजी पारख, महेन्द्रजी बाफणा सभी से निरन्तर संवाद था, वो भी जी तोड़ मेहनत कर रहे थे पर हृदय में कहीं न कहीं और अपेक्षा उनसे थी। संत भगवन्तों की मांगलिक सुनकर निकले तो सारा कार्य मंगल ही मंगल मिला। हस्ती हीरा नगर में स्थित स्थानक में किसी ने सनत्कुमार चक्रवर्ती की कथा सुनाई तो किसी ने माता-पिता के उपकार पर बहुत सटीक विवेचन किया। छः-सात साल वय के उस बालक ने बिना पढ़े प्रस्तुति देते हुए कहा कि प्रतिमा जिसे आदमी बनाता है उसे तो पूजने वाले कई होते हैं, पर

जिस आदमी को माँ-बाप सद्गुणी बनाते हैं उन्हें क्यों नहीं पूजा जाता। वहाँ के उल्लास एवं इस धार्मिक उत्सव से शिविरार्थी तो प्रगति कर ही रहे थे, उन्हें निहार कर, बुजुर्ग अत्यधिक आत्मीय आनन्द का अनुभव कर रहे थे। यह प्रसन्नता ना मात्र जलगाँव के बुजुर्गों की थी, अपितु सभी जगह पोते-पोती सीख रहे थे, दादाजी खुश हो रहे थे। अजमेर के श्री पारसमलजी रांका ने तो यहाँ तक कहा कि बच्चों ने तीर्थंकरों के नाम व कई पाटियाँ सुनाई तो सहज ही मुख से निकल गया कि भाई बच्चे तो हमसे आगे बढ़ रहे हैं। हम तो वहीं के वहीं रह गए। हम जब जलगाँव परीक्षा पत्र लेकर गये, बच्चों ने जिस उत्सुकता से परीक्षा पत्र पर नजरें टिका रखी थी, उससे लग रहा था कि तैयारियाँ अपने शिखर पर थीं। **स्वाध्याय भवन जलगाँव** में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती विजयाजी मल्हारा की अद्भुत संगठात्मक शक्ति एवं मंगलाजी सहित चोरड़िया परिवार आदि सभी के अथक प्रयासों से अध्ययन गतिशील था। प्रश्न पूछते ही उत्तर देने वालों के हाथ सहसा खड़े हो जाते थे। शिविरार्थी परीक्षा की तैयारी में पूर्णतः जुटे थे। सामायिक परिधान में सभी अनुशासित थे। वीर प्रभु के शासन की इन महकती कलियों, खिलती क्यारियों को देख किसी का भी हृदय प्रफुल्लित हुए बिना नहीं रह सकता था। संख्या करीब 80-90 के आस-पास थी। **सागर भवन** में श्री निलेशजी सिंघवी, विमलाजी सुराणा, श्रीमती डाकलियाजी सभी ने व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से आगे बढ़ाया था। उत्साह उमंग के साथ वहाँ 80 शिविरार्थी थे। परीक्षा के बीच में भी शिविरार्थियों ने आगन्तुकों की हिचकिचाहट के बावजूद भजन, भाषण, धर्मकक्षा, जोधपुर बोर्ड की तैयारी की सबल प्रस्तुति दी। **गणेश भवन** में वीरपिता श्री अशोकजी हुण्डीवाल, लोढ़ाजी, ललिताजी कटारिया आदि बहुमण्डल की अनेक सदस्याएँ पूर्णतः लगी हुई थीं। 25 वर्षों से निरन्तर स्वाध्याय में जाने वाली वरिष्ठ स्वाध्यायी श्राविका अति प्रसन्नता के साथ धर्मकथा प्रतियोगिता का अनुमोदन कर रही थी कि इससे बच्चों को महापुरुषों की न मात्र विशेष जानकारी हुई, साथ ही साथ उनके जीवन को दिशा देने वाले एक आदर्श मनःस्थल पर स्थापित हुए। इंटरनेट पर भौतिक सामग्री तलाशी जाती है, वहाँ भाषण की तैयारी हेतु शोध चालू थे। धर्मकथा हेतु बुजुर्गों एवं पुस्तकालय का सहारा लिया जा रहा था। शिविरार्थियों का अथक प्रयास उनकी गंभीर शैली से झलक रहा था। कई प्रश्न किए तो संतोषप्रद उत्तर मिले। दादाबाड़ी की सौम्य छटा के साथ वहाँ के शिविरार्थियों की मनःस्थली भी सौम्य थी। एक छोटे बालक कोठारीजी ने बहुत आत्मविश्वास के साथ दशवैकालिक सुनाया। क्षेत्र में निगाहें निरन्तर इस प्रस्तुति को ढूंढ़ रही थी जो यहाँ आकर दिखाई दी। कक्षावार पूछे गये प्रश्नों के बहुत सन्तोषजनक उत्तर मिले। 25बोल, 67बोल, संज्ञा का थोकड़ा, उपयोग द्वार, समिति-गुप्ति, नवतत्त्व, सभी

पर शिविरार्थियों ने संतोषप्रद उत्तर दिये। पाचोरा की तीनों शिक्षिकाओं के प्रति वहाँ के बालकों का विनय बहुत था। वरिष्ठ श्रावक श्री दीपचंदजी बोथरा भी शिविर को सम्भाले हुए थे। इन्हीं ग्रीष्मावकाश में दो शिविर वहाँ हो चुके थे। महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. की प्रबल प्रेरणा से वहाँ पुनः शिविर लगा। निरन्तर पाठशाला होने की वजह से करीब 15-20% शिविरार्थियों को प्रतिक्रमण कंठस्थ था। एक बालक ने पुण्डरीक-कुण्डरीक की बड़ी शोधपूर्ण कथा सुनाई। भजनों का चयन बहुत अच्छा था। संयोजक महोदय कह रही थी कि हमने शिविर तो महासतीजी म.सा. की प्रेरणा से लगाया और जब शिविर सामग्री बच्चों को दिखलाई तो सहसा ही उनमें उत्साह आ गया। सूचीबद्ध, व्यवस्थित तरीके से आई सामग्री से बच्चों को विशेष प्रोत्साहन मिला एवं दी गई प्रेरणा सहज ही प्रभावी हो गयी। **भडगाँव** में श्री मनसुखलालजी चोरड़िया, डॉ. अजीतजी रांका, लुणावत परिवार सभी के अथक प्रयासों से शिविरार्थियों की संख्या 100 से अधिक की हो गयी। **कजगाँव** में धारीवाल परिवार की श्रद्धा, बच्चों को सिखाने का तरीका दोनों अद्भुत थे। वहाँ के शिविरार्थियों में सरलता के साथ कुछ-कुछ वैराग्य के संस्कारों को भी पुष्ट किया जा रहा था। अध्ययन बहुत अच्छा था। मराठी में प्रस्तुत भजन समझ तो नहीं पाये, पर फिर भी जिस श्रद्धा के साथ गाया गया वह अनुकरणीय था। कई बच्चों ने सामायिक पूर्ण कंठस्थ कर ली थी और वे अध्ययन को प्रगाढ़ करने में गतिशील थे। क्षेत्र विशाल नहीं था, पर फिर भी अध्ययन बहुत सुचारू एवं प्रेरणास्पद था। शिविरार्थियों की प्रतिभा निखारने एवं उसे प्रस्तुत करने की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी एवं आगे-बढ़ने का अभी पर्याप्त समय भी शेष था। पूरे क्षेत्र में सुश्रावक श्री महावीरचंदजी बोथरा, पवनजी बागरेचा, देवेन्द्रजी सेठ उत्साहवर्धन कर रहे थे। **फत्तेपुर** में श्री ललवाणी जी एवं श्राविकाओं ने शिविर बहुत अच्छी तरह से सम्भाल रखा था। संख्या लगभग 60 की थी, उनमें से 18-20 ने अष्टमी, चतुर्दशी के प्रत्याख्यान किये एवं **शेन्दुर्णी** में भी अध्ययन निरन्तर गतिशील था।

पोरवाल, पल्लीवाल, जयपुर-अजमेर, महाराष्ट्र सम्भाग की भाँति ही मारवाड़ के शूरवीर वीरप्रभु के शासन की प्रभावना हेतु कटिबद्ध थे। सीमान्त क्षेत्र **बाड़मेर** जब गये तो स्वधर्मियों के प्रति जिस आत्मीयता व प्रेम की वर्षा उन्होंने की उससे हृदय अभिभूत हो गया। स्थानक में पाँव रखते ही उस सम्प्रदायातीत क्षेत्र में "गुरु हस्ती के दो फरमान-सामायिक स्वाध्याय महान्", "प्रभु महावीर की जय" की गूँज सुनाई दी, तो सहज ही उस विरल महापुरुष के प्रति मस्तक श्रद्धावनत हो गया। लगा कि कैसी अद्भुत विभूति थी कि जिनके प्रयासों से रेगिस्तान में भी धर्म की क्यारियाँ खिल रही थीं, महक रही थीं। वहाँ के

युवा रत्न श्री जितेन्द्रजी बाँठिया, दिनेशजी लूणिया, कैलाशजी बोरा, मूलचंदजी गोगड़ एवं अहमदाबाद के श्रेष्ठी सभी एक माला में पिरोए सूत्र की भाँति थे। 150 बच्चे भीषण गर्मी में 5 बजे वापस पधारे। सभी के बीच खड़े होकर जिस तरह की विश्वासपूर्ण गम्भीरता एवं तथ्यात्मक प्रस्तुति उन्होंने दी वह आशातीत नहीं, अकल्पनीय भी थी। संयोजकों के अति आग्रह से एवं उनके विश्वास के सम्मान हेतु जाने का मन सदैव रहा, पर इस बार भावना श्रावक श्री महेन्द्रजी सुराणा की वजह से फलीभूत हुई। सभी कार्यकर्त्ता दुकानें सम्भालने वाले एक-एक व्यक्ति ही थे पर फिर भी ऐसा जोश कि शिविर में तो जाना ही है। यह बात न मात्र बाड़मेर की थी, अपितु हर क्षेत्र की यही स्थिति थी। करीब 110 बच्चों ने वहाँ एक साथ, समझ कर, माहौल से प्रेरित होकर एक वर्ष के अष्टमी, चतुर्दशी को हरी त्याग एवं रात्रि-भोजन त्याग के पच्चक्खान ग्रहण किये। कार्याध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा भी साथ में थे। **पाली क्षेत्र** में प्रशासनिक एवं व्यापारी वर्ग दोनों के अद्‌भुत संयोग से शिविरों की अद्‌भुत छटा थी। कक्षाओं का क्षेत्रीय विभाजन भी पर्दों से बहुत सटीक था, जिससे व्यवधान रहित अध्ययन हो सके। शिविरों के आखिरी दिनों में वहाँ पहुँचे तो दृश्य यह था कि प्रश्न पूछते ही लगभग सभी हाथ खड़े होते। पाली की यह छटा सांकेतिक थी। हर क्षेत्र के अध्ययन की स्थिति की परिचायिका थी। तृतीय कक्षा में सुश्राविका डोसीजी के प्रयासों से ऐसी स्थिति थी कि पाठ्यक्रम तो 'इच्छामि खमासमणो' तक ही था, पर प्रायः सभी शिविरार्थियों को प्रतिक्रमण याद हो चुका था। पाँचवी-छठी के छात्रों को समिति-गुप्ति, गति-आगति क्रमशः समझपूर्वक कंठस्थ थी। दशवैकालिक के शब्द, अर्थ दोनों पर शिविरार्थियों का गजब का अधिकार था। प्रवेशिका प्रथम वालों का पुरुषार्थ भी कम नहीं था। सप्तकुव्यसन की जानकारी थी। यहाँ के उत्साही संयोजक श्री नरपत जी चौपड़ा, कल्पेशजी लोढ़ा, उगमजी गाँधी, बलोटाजी, मनोजजी गांग आदि के प्रयासों से प्रोजेक्टर पर कुव्यसन की पूरी सीडियाँ दिखाई गई। जिसमें बच्चों का मानस सप्तकुव्यसन त्याग हेतु पूर्णतः तैयार हो गया। दो शिविरार्थियों ने आजीवन चौविहार के पच्चक्खान भी किये। शिविर में संख्या 310 तक पहुँच गयी। **पीपाड़ क्षेत्र** में श्री सुमतिचंदजी मेहता, उनके पुत्र नमन जी, पुष्पाजी, परेशजी, चौधरीजी आदि के प्रबल पुरुषार्थ से शिविरार्थियों का अध्ययन निरन्तर प्रगतिशील था। संख्या 170 तक की रही। पीपाड़ महापुरुषों की जन्मस्थली है, वहाँ के हर कण में उनकी महक नज़र आती है। छोटी-सी उम्र में पूर्ण दशवैकालिक कंठस्थ करने वाले नन्हें श्रावक वहाँ मौजूद है। ऐसी पुण्यशाली धरा को जितना नमन किया जाये, उतना कम है। **गोटन** में तो जिन नहीं जिन सरीखे, केवली नहीं केवली सरीखे उपाध्याय भगवन्त विराज रहे थे। साथ में स्थविर भगवन्त, युवाओं, बुजुर्गों,

श्राविकाओं सभी में अपनी मधुर, तात्त्विक वाणी से जिनवाणी को पुष्ट करने वाले महापुरुष श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., लोकेशमुनिजी म.सा., जितेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं सरलता, आत्मीयता प्रदान करने वाले श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा. मौजूद थे। उनके आभामंडल से, असीम अनुकम्पा से, कृपा से न मात्र गोटन, अपितु सभी क्षेत्रों के शिविरार्थी आगे बढ़ रहे थे। उपाध्यायश्री एवं संतमंडल को शिविरों से प्रमोद था, उनके आशीर्वचन की धारा, कृपा का ही प्रतिफल था कि सभी स्थानों पर निर्विघ्न धर्म आराधना हुई। श्री हंसराजजी चौपड़ा, ओस्तवाल जी सभी संयोजक शिक्षकों ने अथक प्रयास किये। सिद्धान्त शाला के छात्रों ने भी पूर्ण पुरुषार्थ किया। **मेड़तासिटी** में श्री नीलेशजी मूथा, प्रकाशजी तातेड़, ओस्तवालजी, श्री अजीतराजजी कांकरिया आदि युवा वर्ग ने अथक मेहनत की। जिनशासन के सभी पुष्प जुड़ें इस हेतु प्रयास भी किये। पर संख्या में तो वृद्धि थोड़ी रही, पर गुणात्मक परिवर्तन बहुत बढ़िया था। अब वहाँ का शिविर एक गुलदस्ते जैसा था जिसमें सभी प्रकार के पुष्प अपनी महक प्रदान कर रहे थे। यही गुणात्मक परिवर्तन सदैव बना रहे, ऐसी शुभ मनोभावना है। नागौर में श्री अजीतजी भंडारी, शूरवीरजी सुराणा, कांकरिया सा एवं शिक्षकों का एक ऐसा सुन्दर संगठन है कि सभी कार्य व्यवस्थित होते हैं संख्या लगभग 80 की रही।

सभी क्षेत्रों में जो धर्माराधना हुई वह मात्र, मात्र आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के 50वें दीक्षा-दिवस पर जो भक्ति का अपार वेग था, जिसके प्रतिफल से कार्यकर्त्ताओं, शिक्षकों सभी ने अभूतपूर्व प्रयास किये, उसका परिणाम था। धन्य हैं ऐसे महापुरुष।

शिविर पूर्व तैयारी में जयपुर के सुश्रावक विशेषतः श्री सरदारसिंहजी बोथरा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के मंत्री श्री विरदराजजी सुराणा, अशोक कुमारजी सेठ, पदमचंदजी अग्रवाल ने हर पल-हर क्षण, हर कदम पर पूर्ण सम्बल दिया व मार्गदर्शन प्रदान किया। श्री राहुलजी गाँधी यूथ बिग्रेड के आल इण्डिया सैक्रेट्री पाठक ने परम्परा अनुकुल चित्र बनाए। आद्य से समापन तक शिविरों के भलीभाँति आयोजन में धारणाओं, इतिहास, संतसेवा में विशिष्टता रखने वाले, सम्यग्दर्शन की परिभाषा को भलीभाँति समझकर, जीवन्त करने वाले पिताश्री विमलचंद जी डागा का पूर्ण सम्बल मिला। विशेष उपकार रहा तत्त्वज्ञ, अनेक थोकड़ों, कर्मग्रन्थ के जानकार, शास्त्रों के निरन्तर अध्ययनशील अग्रज श्री राजेन्द्रकुमारजी डागा का, जिन्होंने शिविर में किसी भी तरह की कमी न रहे, इस पर सदैव जोर दिया। जयपुर युवक परिषद् एवं इसके अनमोल रत्न श्री नीलकंठजी भंडारी, रितुलजी पटवा, शैलेन्द्रजी कोठारी, मनोजजी जैन, मनीषजी जैन आदि सभी ने उल्लेखनीय योगदान

किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जिसके तत्त्वावधान में सभी शिविर आयोजित किये गये उसके भवभीरु, स्वधर्मी वात्सल्य से ओतप्रोत, वीरभ्राता श्री बुधमलजी बोहरा एवं महासचिव श्री मनोजजी कांकरिया को विशेष साधुवाद, जिन्होंने हर राह को सुगम बनाया। साधुवाद श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हांगकांग का, जिन्होंने मुक्त हस्त से शिविरों को अर्थ सहयोग दिया। श्री संजयजी कोठारी, हेमेशजी सेठ, महेन्द्रजी संचेती, लुणावतजी, रितेशजी हीरावत, सुनीलजी जैन, अरूणजी बम्ब (सभी हांगकांग वासी) आदि का धन्यवाद, जिन्होंने आगे बढ़कर सहयोग दिया। प्रयास शिविरार्थियों के हित में, उन सभी के सर्वाङ्गीण विकास हेतु किये गये। सभी से भरपूर आत्मीयता मिली, उसके लिए सभी को साधुवाद।

-जितेन्द्र कुमार डागा, प्रभारी-धार्मिक शिक्षण, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्

जयपुर में 10 केन्द्रों पर धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर द्वारा विगत 20 वर्षों से जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक शिविरों का संचालन एवं उत्तम धर्म संस्कारों के बीजारोपण का कार्य श्रद्धा एवं समर्पण पूर्वक किया जा रहा है। इस वर्ष ये शिविर 10 स्थानों पर लगाये गये। **सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल** पर यह शिविर 10 मई से तथा अन्य नौ केन्द्रों- **मालवीय नगर, महावीर नगर, जवाहर नगर, श्याम नगर, नित्यानन्द नगर, तिलक नगर, विद्याधर नगर, लालकोठी एवं मानसरोवर** पर 13 मई से प्रारम्भ हुए तथा 02 जून तक चले। शिविर के अंतिम दिन सभी केन्द्रों पर शिविरार्थियों की परीक्षा कराई गई। शिविर का समय सभी स्थानों पर प्रात: 7 बजे से 9 बजे तक रखा गया।

सभी शिविर केन्द्रों पर लगभग 1000 से अधिक शिविरार्थी बच्चों ने धार्मिक एवं नैतिक संस्कार की शिक्षा प्राप्त की। दूर से आने वाले बच्चों को शिविर-स्थल पर लाने एवं ले जाने के लिये परिषद् की ओर से नि:शुल्क ऑटो-रिक्शा की व्यवस्था की गई।

इन शिविरों में 3 वर्ष से लेकर 21 वर्ष तक के बच्चों ने भाग लेकर ज्ञानोपार्जन किया। नये बच्चों को शिशु कक्षा में प्रवेश दिया गया तथा जो बच्चे पूर्व में शिविरों में भाग ले चुके हैं, उन्हें पिछले वर्ष उत्तीर्ण की गई कक्षा से अगली कक्षा में प्रवेश दिया गया। सभी शिक्षकों ने प्रारम्भ के 2-3 दिन बच्चों को पिछली कक्षा का पाठ्यक्रम याद कराया। प्रथम और उससे बड़ी कक्षाओं के बच्चे प्रतिदिन सामायिक की वेशभूषा पहनकर सामायिक ग्रहण करके ही बैठते थे। शिविर का समय पूर्ण होने से बच्चों को नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित अथवा जैन धर्म से सम्बन्धित कोई एक छोटी सी कहानी सुनाकर उन्हें उसका नैतिक मूल्य समझाया जाता था। इसके पश्चात्

सभी बच्चे सामूहिक प्रार्थना करते। इसके बाद सभी केन्द्रों पर बच्चों तथा अध्यापकों के लिये अल्पाहार की व्यवस्था रखी जाती थी।

शिविर के माध्यम से बच्चों में धार्मिक रुचि जागृत होने के साथ-साथ उनमें छिपी अन्य प्रतिभाएँ भी निखारने का प्रयास किया जाता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर सभी केन्द्रों पर दिनांक 20 मई को शिविरार्थी बच्चों की भाषण प्रतियोगिता करायी गई तथा दिनांक 27 मई को सभी केन्द्र के बच्चों को आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शनार्थ जोबनेर ले जाया गया।

सभी केन्द्रों पर जिन बच्चों ने प्रतिक्रमण पूर्ण याद कर लिया है उनको प्रेरणा दी गई है कि वे कम से कम अष्टमी, चौदस, पक्खी आदि के दिन अपने निकटवर्ती धर्मस्थान में जाकर प्रतिक्रमण करें। साथ ही परिषद् ने तय किया है कि जो शिविरार्थी बच्चे पर्युषण के दौरान सामूहिक प्रतिक्रमण करवायेगें उन्हें परिषद् की ओर से विशेष रूप से पुरस्कृत किया जायेगा।

सभी केन्द्रों पर सभी कक्षा के बच्चों की मौखिक/लिखित परीक्षा 02 जून को अपने-अपने केन्द्रों पर ली गई। 10 वर्ष तक के बच्चों की मौखिक परीक्षा ली गई तथा इससे बड़े बच्चों ने लिखित परीक्षा दी।

ये शिविर बच्चों में धार्मिक संस्कार देने का प्रयास तो करते ही हैं, साथ ही इनके माध्यम से जयपुर के विभिन्न उप-नगरों के युवा बन्धु तथा वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाएँ भी धर्म तथा संघ से एकसूत्र में जुड़े रहते हैं। परिणामस्वरूप आज युवक परिषद् के सभी सदस्य अपने आपको एक परिवार की तरह मानते हैं। वे सभी परिषद् की अमूल्य निधि हैं।

शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह रविवार 17 जुलाई, 2012 को रामबाग सर्किल स्थित, सुबोध पब्लिक स्कूल के सभागार में आयोजित किया गया। समारोह में लगभग 500 बालक-बालिकाएँ एवं समाज के 1000 गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह के अध्यक्ष श्रीमान् आनन्दजी चौपडा,(भूतपूर्व कार्याध्यक्ष,सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल) समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमान मीठालाल जी मेहता, भूतपूर्व,मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार साथ ही अ.भा.श्री जैन रत्न श्रावक संघ के अध्यक्ष श्रीमान् सुमेरसिंह जी बोथरा ने मंच की शोभा बढाई।

शाखाप्रमुख श्री अनन्त जी सेठ ने मंचासीन अतिथियों, शिविरार्थी बालक-बालिकाओं , इनके माता-पिता का, शिक्षक गणों का तथा उपस्थित महानुभावों का जिन्होंने समारोह में पधारकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया, उन सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन किया। साथ ही उन्होंने युवक परिषद् की जयपुर शाखा द्वारा वर्ष भर में आयोजित किये गये विभिन्न धार्मिक एवं समाजिक सेवा के कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया। शिविर संयोजक

श्रीमान् देवेन्द्र जी सेठ द्वारा शिविर प्रतिवेदन का वाचन किया गया।

धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करने के लिये वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान प्रकाशचन्द जी डागा एवं समाज सेविका श्रीमती सरस्वती जी जैन का गुणीजन अभिनन्दन किया गया। समारोह में शिविरार्थी बालक-बालिकाओं द्वारा भजन एवं भाषण की प्रस्तुति दी गई।

मुख्य अतिथि श्री मीठालाल जी मेहता ने बालक-बालिकाओं में धार्मिक संस्कार के बीज प्रस्फुटित करने के लिये इस प्रकार के धार्मिक शिविर के आयोजन करने हेतु युवक परिषद् की सराहना की। समारोह के अध्यक्ष श्री आनन्द जी चौपडा ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बच्चे ही समाज का भविष्य हैं एवं इनको बचपन में दिये गये संस्कार निश्चित ही इनके जीवन को सही दिशा प्रदान करने में अहम भूमिका रखते हैं। कार्यक्रम में सभी अध्यापकगणों का भी अभिनन्दन किया गया। *-प्रशान्त करनावट, शाखा सचिव*

जोधपुर में 9 केन्द्रों पर धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा विगत 18 वर्षो से धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित कर बच्चों में जैन धर्म की जानकारी के साथ ही संस्कारों की शिक्षा भी अनवरत रूप से प्रदान की जा रही है।

इस वर्ष यह शिविर 24 मई से 10 जून तक जोधपुर में आयोजित किया गया। शिविर प्रारम्भ से ही बच्चों में धर्म के प्रति अपूर्व उत्साह दिखा। जोधपुर शहर के सभी क्षेत्रों के बालक-बालिकाओं को शिविर का लाभ मिल सके, अत: 9 क्षेत्रों में शिविर केन्द्र बनाए गए- **घोड़ों का चौक, सिंहपोल, नेहरू पार्क, प्रतापनगर, हाउसिंग बोर्ड, गुलाब नगर, सरस्वती नगर, पावटा और शक्तिनगर।** इन केन्द्रों पर शिविर हेतु संयोजक एवं सह संयोजक भी नियुक्त किए गए। इन संयोजको ने कार्यकर्ताओं के सहयोग से बच्चों को उनकी योग्यता के अनुरूप पहली से सातवीं कक्षा में विभाजित किया। बच्चों की संख्या लगभग 1350 तक पहुंच गई। सभी बच्चों को कक्षाओं में वर्गीकृत कर अनुभवी 120 अध्यापकों ने श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 1 से 7 तक की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम के आधार पर नियमित दो कालांशों में अध्ययन करवाया।

शिविर की नियमित दिनचर्या में प्रात: काल 7 बजे से बच्चों का आगमन शुरु होता था। 7.15 बजे प्रार्थना तथा 7.20 से 7.30 बजे तक विद्वानों द्वारा बच्चों को उद्बोधन विभिन्न केन्द्रों पर प्रदान किया गया। उद्बोधन के पश्चात् 7.30 से 08.25 तक प्रथम कालांश रखा गया। 08.25 से 08.35 तक अल्पविराम दिया गया तथा 08.35 से 09.30 बजे तक द्वितीय कालांश में अध्ययन हुआ।

इस बार शिविर में कुछ नये प्रयोग किए गए। जिसमें पहला प्रयोग था परीक्षा एक स्थान पर आयोजित करना। 8 जून को सभी बच्चों द्वारा सीखे गये ज्ञान के मूल्यांकन हेतु परीक्षा बादलचंद सुगनकंवर चौरडिया स्कूल में आयोजित हुई। सभी केन्द्रों पर शिशु शिविरार्थियों के अध्ययन की अलग से व्यवस्था की गई। उनकी संख्या 360 रही तथा उनकी मौखिक परीक्षा ली गई। शिशु शिवरार्थियों के अतिरिक्त 774 शिविरार्थियों ने लिखित परीक्षा दी तथा उनमें से 594 शिविरार्थी उत्तीर्ण हुए। शिविर का सफल संयोजन सभी केन्द्रों के शिविर संयोजकों, सह संयोजकों, अध्यापकों एवं कार्यकर्ताओं के सक्रिय सहयोग से सफलतापूर्वक हुआ। दूसरा प्रयोग किया गया शिविरार्थियों के अभिभावकों को स्थानक में लाने का। इस बार सभी शिविरार्थियों के अभिभावकों को 9 जून को शिविर केन्द्रों पर बुलाया गया, जिससे उनके बालक/बालिकाओं की प्रोग्रेस रिपोर्ट तथा परिणाम उनके सामने दिया जा सके तथा पारिवारिक संस्कारों की जानकारी हमें हो सके।

शिविर का समापन कार्यक्रम 10 जून को सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क में आयोजित हुआ। समापन समारोह में साध्वीप्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. ने महती कृपा कर महासतीवृन्द को विशेष प्रेरणा हेतु भेजा। महासतीवृन्द ने सर्वप्रथम बच्चों को प्रेरणा देते हुए सीखे हुए ज्ञान का पुनः-पुनः दोहरान करने की प्रेरणा की। प्रवचन के पश्चात् 08.30 बजे समापन समारोह कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमान् पदमचन्द जी मेहता, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् के. एल. जैन साहब, सम्माननीय अतिथि श्रीमान् पारस जी गिड़िया एवं श्रीमती रतनदेवी जी मेहता थे। संघ महामंत्री श्री पूरणराज जी अबानी, स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, मंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, मुख्य शिविर संयोजक श्री नवरतन जी डागा, अ.भा. युवक परिषद् महामंत्री श्री मनोज जी कांकरिया, युवक परिषद् शाखा अध्यक्ष श्री मनीष जी लोढ़ा ने भी मंच को सुशोभित किया।

श्री जैन रत्न बालिका मण्डल की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया।। धीरज जी डोसी ने हॉल में उपस्थित सभी महानुभावों को संकल्प करवाया। युवक परिषद् अध्यक्ष श्री मनीष जी लोढ़ा ने अपने स्वागत भाषण में सभी अतिथियों एवं महानुभावों का शाब्दिक स्वागत किया। अतिथियों के साथ ही शिविर में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान करने वाले सभी केन्द्र के शिविर संयोजकों एवं कार्यकर्ताओं का भी माल्यार्पण कर सम्मान किया गया।

स्वागत कार्यक्रम के पश्चात् 18 दिन के इस शिविर में बच्चों ने क्या ज्ञानार्जन किया, इसकी झलक प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न केन्द्रों के छोटे-बड़े बच्चों ने

सामायिक, प्रतिक्रमण के पाठ, 25 बोल में से बोल, भक्तामर की गाथाएं, भजन एवं तीन संदेशपरक नाटिकाओं के द्वारा अपनी योग्यता प्रदर्शित की। सभी आगन्तुक अतिथियों एवं महानुभावों ने बच्चों के कार्यक्रमों को सराहा। बच्चों के कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात् मुख्य शिविर संयोजक नवरतन जी डागा ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सभी कक्षाओं में वरीयता प्राप्त शिविरार्थियों का परिणाम घोषित कर उन्हें अतिथियों से पुरस्कृत करवाया।

अंत में युवक परिषद् शाखा सचिव श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

-नवरतन डागा-शिविर संयोजक

ईरोड में "Fruitful inspiration in Life" (जीवन में फलदायी प्रेरणाएँ) का आयोजन

परम पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासन प्रभाविका, साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. की सुशिष्या मधुर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा-7 के पावन सान्निध्य में श्री एस.एस. जैन संघ, ईरोड़ द्वारा 02 व 03 जून (शनिवार, रविवार) को 15 से 45 वर्ष तक के युवक एवं युवतियों को जीवन में आत्मिक प्रेरणा प्रदान करने हेतु *"Fruitful inspiration in life"* (जीवन में फलदायी प्रेरणाएँ) द्विदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में चेन्नई, सेलम, ईरोड़, कोयम्बत्तूर, चिदम्बरम, त्रिपुर, बैंगलोर एवं काटमनगर कोईल आदि विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 300 शिविरार्थियों ने ज्ञान, ध्यान-साधना व अनुशासन से अपनी आत्मा को उन्नत बनाने का प्रयास किया।

कार्यशाला के अन्तर्गत 7 विषयों पर कक्षाओं का आयोजन किया गया-

1. सम्यक् निवेश *(Proper Investment)*
2. स्व-निरीक्षण *(Self Supervision)*
3. शांत क्षेत्र *(Silence Zone)*
4. मेरी सहायता मेरे सहायकों के लिये *(My Help For My Helpers)*
5. साधना पद्धति
6. गर्व से कहो- मैं जैन हूँ।
7. मेरे हृदय सम्राट्- अरिहंत भगवान।

इन विषयों पर महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री संगीता म.सा. एवं श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई, श्री राजेन्द्र जी लुकड़-ईरोड़, श्री विशाल जी कोटड़िया-ईरोड़, श्री आशीष जी सुराणा-चेन्नई, श्री तरूण जी बोहरा-चेन्नई, श्री विनोद जी जैन-चेन्नई आदि विद्वान्

प्रशिक्षकों द्वारा सारगर्भित अध्ययन करवाया गया।

कार्यशाला के अन्तर्गत मधुर व्याख्यानी महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के प्रेरणास्पद एवं आत्मोत्थान करने वाले प्रवचनों एवं उद्बोधनों के द्वारा प्रदान की गई प्रभावी प्रेरणाओं से प्रभावित होकर शिविरार्थियों ने सामायिक, स्वाध्याय, लेदर (चमड़े) की वस्तुओं का त्याग, रात्रि-भोजन-त्याग, जमीकन्द त्याग, अष्टमी-चतुर्दशी उपवास, मासिक 4 संवर एवं अनेकानेक व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर अपने जीवन को सुन्दर व मर्यादित बनाया।

द्विदिवसीय कार्यशाला में महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में विशेष विषयों पर सामूहिक कक्षाओं का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम दिवस ''तीर्थंकरों का ज्ञान-भक्ति की तान'' में भजन-गायन आदि के माध्यम से तीर्थंकर भगवन्तों के गुणगान द्वारा आत्मा को भक्ति में सराबोर करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसी शृंखला में द्वितीय दिवस *(Live Biography of Successful Person)* कार्यक्रम में सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन का निर्वहन करते हुए धार्मिक, आध्यात्मिक एवं संघ-सेवा में निरन्तर अपना समय प्रदान करने वाले व्यक्तित्व के धनी श्री सुरेश जी चोरडिया-चेन्नई, श्री जसवंतराज जी छाजेड़-बैंगलोर, श्री कल्पेश जी कवाड़-चेन्नई, श्री निखिल जी बाघमार-चेन्नई, सुश्री निशा जी चौपड़ा-ईरोड़ के धार्मिक जीवन के सफलतामयी रहस्य को समस्त शिविरार्थियों के समक्ष प्रश्नोत्तर के माध्यम से पूछा गया, जिससे शिविरार्थियों को जीवन में धर्ममय बनकर सामाजिक एवं संघ-सेवा के कार्य करने की अद्भुत प्रेरणाएँ प्राप्त हुईं।

शिविरार्थियों द्वारा सायंकालीन कालांश में छोटी-छोटी नाटिकाओं के माध्यम से जिनशासन की रक्षा एवं सच्चे मन से धर्म को जीवन में धारण करने की प्रेरणा प्रदान की गई। द्विदिवसीय कार्यशाला के अन्तर्गत पूर्ण अनुशासन व गंभीरता पूर्वक अध्ययन एवं संकल्प धारण करने वाले शिविरार्थियों को *(1) Sun Fill (2) Moon Fill (3-7) Five Stars* के सम्मान से सम्मानित किया गया।

मधुर व्याख्यानी महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के ईरोड़ पधारने पर श्रावक-श्राविकाओं व बालक-बालिकाओं में अत्यन्त हर्षोल्लास का वातावरण बन गया। कार्यशाला के संचालन एवं सम्पूर्ण व्यवस्था में ईरोड़ संघ का अनुकरणीय एवं सुंदर सहयोग प्राप्त हुआ। ईरोड़ संघ के सभी कार्यकर्ताओं ने सेवा व भक्तिभाव का परिचय देते हुए अति उत्साह से अतिथिसेवा का लाभ लिया तथा संघ द्वारा सभी शिविरार्थियों को संवर-साधना का उपकरण सम्मान स्वरूप प्रदान किया गया। इस शिविर आयोजन में ईरोड़ के कार्यकर्ताओं एवं आने वाले सभी महानुभावों का अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अध्यक्ष श्रीमान् बुधमल जी बोहरा ने हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी बैठक व शिविर का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा पूर्व की भाँति श्राविकाओं में आध्यात्मिक-नैतिक व ज्ञानार्जन के उद्देश्य से गुलाबी नगरी-जयपुर में 31 अगस्त से 2 सितम्बर, 2012 तक त्रिदिवसीय अध्यात्म चेतना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। बाहर से पधारने वाले शिविरार्थियों को आने-जाने का द्वितीय श्रेणी का रेल/बस मार्गव्यय दिया जायेगा। जयपुर शिविर में पधारने पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा तथा व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन व प्रवचन-श्रवण का लाभ तो प्राप्त होगा ही साथ ही आपके ज्ञानार्जन में भी अभिवृद्धि होगी।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक 01 सितम्बर, 2012 को गुलाबी नगरी-जयपुर में रखी गई है। कृपया आप अपने पधारने की सूचना सम्पर्क सूत्र पर अवश्य करें। आप इस शिविर में पधारने के साथ-साथ इस शिविर की सूचना अपने क्षेत्र में अवश्य करें। **सम्पर्क सूत्रः-** श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा-कार्याध्यक्ष-98290-19396, श्रीमती उर्मिला जी बोथरा-अध्यक्ष, मो. 93145-01856, श्रीमती मीना जी गोलेच्छा-मंत्री-श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर, फोनः 0141-2622556 मो. 93144-66039

-शशि टाटिया-महासचिव

प्राकृत भाषा के पोषण से साहित्य, संस्कृति और धर्म-दर्शन का पोषण होता है

दिल्ली- भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली द्वारा 20 मई से 10 जून 2012 तक अखिल भारतीय ग्रीष्मकालीन प्राकृत भाषा एवं साहित्य की चौबीसवीं कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें प्राकृतभाषाविज्ञों ने देश के 40 प्रतिभागियों को अध्यापन कराया। 10 जून को आयोजित समापन सत्र में प्रमुख अतिथि के रूप में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह संस्थान देश का गौरव है। प्राकृत भाषा के क्षेत्र में इसका अद्वितीय योगदान है। प्राकृत एवं संस्कृत इन दोनों भाषाओं के एक हजार वर्षों तक साहचर्य ने इतिहास रचा है। संस्कृत का ज्ञान बिना प्राकृत के अधूरा है और प्राकृत का ज्ञान संस्कृत के बिना अधूरा है। प्राकृत भाषा के पोषण से भारतीय धर्म-दर्शन, संस्कृति और साहित्य का पोषण होता है।

अध्यक्षीय वक्तव्य में आकाशवाणी केन्द्र के महानिदेशक श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने

कहा कि प्रत्येक भाषा के साथ उसकी संस्कृति और जीवनमूल्य जुड़े रहते हैं। प्राकृत जब जनभाषा थी और उसका समृद्ध साहित्य है, तो वह प्रचलन से बाहर कैसे और कब हुई, इस पर चिन्तन होना चाहिए। विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के कुलसचिव प्रो. के.बी.सुब्बारायुडु ने कहा कि प्राकृत नैसर्गिक भाषा है। अतः इसे आम बोलचाल की भाषा बनाने हेतु प्रयास आवश्यक है।

समागत अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. जितेन्द्र बी. शाह ने प्राकृत भाषा और साहित्य की व्यापकता और महत्त्व बतलाते हुए कहा कि इस संस्थान से प्राकृत की इस इक्कीस दिवसीय अध्ययनशाला से अब तक सैकड़ों विद्वान् लाभान्वित हुए हैं। प्राकृत का समृद्ध साहित्य है। आज भी अनेक अप्रकाशित ग्रन्थ हैं, जिनका सम्पादन, प्रकाशन होना आवश्यक है। संस्थान के निदेशक प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' ने इस सफल कार्यशाला का अनेक उपलब्धियों से युक्त विवरण प्रस्तुत किया। संस्थान के अध्यक्ष श्री राजकुमार जैन ने विजय वल्लभ स्मारक और इस संस्थान का परिचय देते हुए प्राकृत के प्रचार-प्रसार हेतु ऐसी कार्यशालाओं का महत्त्व प्रतिपादित किया।

इस कार्यशाला में विदेश में दक्षिण कोरिया की जोंग जूही ने सस्वर प्राकृत गाथाएँ सुनायी और बैल्जियम में जैन भट्टारक परम्परा पर शोधकार्यरत श्री टिल्लो ने अपने अनुभव सुनाये। अन्य प्रतिभागियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि प्राकृत भाषा, इसके व्याकरण और साहित्य का जितना ज्ञान हमें इन इक्कीस दिनों में मिला है, उतना अन्यत्र दो-तीन वर्षों में भी सम्भव नहीं था। सभी ने प्राकृत कार्यशाला के सार्थक और सफल आयोजन पर इस संस्थान के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस कार्यशाला की एक बड़ी उपलब्धि यह भी रही कि दिनाँक 05 जून, 2012 को दिल्ली दूरदर्शन के डी.डी.भारती चैनल पर 36 देशों में प्राकृत भाषा पर आधारित 'मेरी बात' परिचर्चा का सजीव प्रसारण किया गया। एक घण्टे तक सजीव प्रसारित 'मेरी बात' के अन्तर्गत प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत भाषा, इनकी व्यापकता, सामयिक उपयोगिता विषय पर आधारित इस परिचर्चा में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. जितेन्द्र बी. शाह, प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', प्रो. गोपेश्वर सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं प्रो. जगतराम भट्टाचार्य के साथ कार्यशाला के समस्त चालीस प्रतिभागी सम्मिलित थे। अध्यापन कार्य में उपर्युक्त विद्वानों के साथ डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर, डॉ. कमलेश कुमार जैन, जयपुर, डॉ. दामोदर शास्त्री-लाडनूँ, डॉ. अनेकान्त कुमार जैन-दिल्ली का भी सहयोग रहा।

दूरदर्शन केन्द्र के इस कार्यक्रम के अधिकारी के कथनानुसार इस महत्त्वपूर्ण परिचर्चा का राष्ट्रीय स्तर पर आगे भी प्रसारण दूरदर्शन के राष्ट्रिय चैनल तथा डी.डी.भारती पर कई बार

दुहराया जाएगा। धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. धनेश जैन ने कहा कि प्राकृत भाषा और साहित्य के अध्ययन को बढ़ावा मिलना आज की प्रमुख आवश्यकता है।

अपने देश के बारह प्रान्तों एवं विदेशों से प्राकृत का अध्ययन करने आये सभी सफल चालीस प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने प्रमाणपत्र और एलीमेन्ट्री तथा एडवांस्ड प्राकृत पाठ्यक्रम के सर्वोच्च अंक प्राप्त तीन-तीन श्रेष्ठ विद्वान् प्रतिभागियों को पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किये।

राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी सफलता के साथ सम्पन्न

नई दिल्ली- राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान एवं श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 10-11-12 मई 2012 को आयोजित विशाल राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी सफलता के साथ सम्पन्न हुई। इसमें तीन दिनों में उद्घाटन एवं समापन-सत्रों के अतिरिक्त 25 शैक्षणिक-सत्र हुए, जिनमें 120 गवेषणापूर्ण शोध-आलेख प्रस्तुत किये गये और उन पर चर्चा भी हुई। इस संगोष्ठी में तीनों दिन एक साथ तीन संगोष्ठी-भवनों में तीन स्वतंत्र-विषयों पर शैक्षणिक-सत्र चले और सभी कक्ष विद्वान्-श्रोताओं से भरे रहे। इस प्रकार तीन दिनों में नौ विषयों के खण्डों में अलग-अलग शैक्षणिक-सत्र पूरे दिन आयोजित हुए और वरिष्ठ विद्वानों ने इनकी अध्यक्षता कर अपने अध्यक्षीय वक्तव्यों में विशद-समीक्षा प्रस्तुत की। वे सत्र निम्न थे-

1. प्राकृत का आगम साहित्य
2. प्राकृत का रूपकसाहित्य (नाट्य साहित्य)
3. प्राकृत का काव्य-साहित्य
4. प्राकृत का कथा-साहित्य
5. प्राकृत का व्याकरण-साहित्य
6. प्राकृत का अभिलेखीय-साहित्य
7. प्राकृत का लाक्षणिक-साहित्य
8. प्राकृत की पाण्डुलिपियाँ
9. प्राकृत का भाषिक इतिवृत्त एवं वर्गीकरण

संगोष्ठी के उद्घाटन-सत्र के **मुख्य अतिथि-** केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्री प्रदीप जी जैन 'आदित्य' तथा विशिष्ट अतिथि- उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के कुलाधिपति न्यायमूर्ति डॉ. मुकुन्दकाम शर्मा थे। कार्यक्रम के सारस्वत-अतिथि- (1) जैन विश्व भारती मानित विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. चारित्रप्रज्ञा एवं (2) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रिय कला केन्द्र (वाराणसी) के समन्वयक प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने की। वक्तव्यों से यह बात उभर कर आयी कि प्राकृत भाषा सम्पूर्ण भारतीय जनमानस की भाषा है और यह चिरकाल से भारत की लोकभाषा रही है। वैदिक

संहिताओं में भी प्राकृतभाषा के तत्त्व विद्यमान हैं। संस्कृत पण्डितों ने भी प्राकृत की गरिमा को स्वीकार किया है इसीलिए उन्होंने लक्षण शास्त्रीय ग्रन्थों में साहित्यिक सिद्धान्तों के लक्षण संस्कृत में दिए हैं तो वहीं उनके अधिकांश उदाहरण प्राकृत साहित्य से उद्धृत किए हैं। हाल की 'गाहासत्तसई' में लोक जीवन के विविध रंग प्रतिबिम्बित हैं। वे गाथाएँ आज तक सभी साहित्य शास्त्रियों के लिए मानदण्ड बनी हुई हैं।

12 मई, 2012 को सम्पन्न समापन-सत्र के मुख्य-अतिथि प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र एवं सारस्वत-अतिथि प्रो. रामजी सिंह थे। सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुलसचिव प्रो.के.बी. सुब्बारायुडु ने की। डॉ. रामजी सिंह ने प्राकृत भाषा की विकासयात्रा पर प्राकृत सेवी राजाओं (सम्राट् अशोक, सम्राट् खारवेल, राजा कक्कुक, राजा हाल, महाराज प्रवरसेन) एवं राजवंशों (मौर्यवंश, सातवाहन वंश आदि) का सुन्दर एवं मनोहारी खाका प्रस्तुत किया। संगोष्ठी की प्रमुख उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं-

1. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का महत्त्व विशाल स्तर पर स्थापित हुआ।
2. अब तक की सबसे बड़ी राष्ट्रिय प्राकृत संगोष्ठी रही।
3. 'प्राकृत' नाम से वेबसाइट बनाने का प्रस्ताव, जिसमें प्राकृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में होने वाले कार्यक्रमों का विवरण उपलब्ध हो। इसमें प्राकृत की पाण्डुलिपियों, दुर्लभ पुस्तकों आदि की भी जानकारी हो। इससे विश्वभर के विद्वान् एवं जिज्ञासु जुड़ सकें।
4. अन्तरराष्ट्रिय-प्राकृत-प्रतिभा-समवाय (International Association of Prakrit Scholars) के नाम से अन्तरराष्ट्रिय संगठन प्रारम्भ करने का प्रस्ताव।

संगोष्ठी का संयोजन लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के प्राकृत विभाग के अध्यक्ष एवं साहित्य-संस्कृति संकाय के प्रमुख प्रो. सुदीप कुमार जैन ने किया।

न्यूयॉर्क में आचार्य हस्ती के स्मृति दिवस पर आराधना

न्यूयॉर्क- अध्यात्मयोगी, युगमनीषी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी महाराज का 21 वां स्मृति दिवस 24 घण्टे के अखण्ड नवकार मंत्र के जाप के साथ मनाया गया। इसमें श्वेताम्बर, दिगम्बर, श्रीमद् राजचन्द्र, दादावाड़ी आदि सभी मान्यता वाले श्रावक-श्राविकाओं का सहयोग उत्साहपूर्ण था, जो विविधता में एकता की परिचायक था। लगभग 250 लोगों ने जाप में हिस्सा लिया जो कि सराहनीय रहा। यह जाप पिछले 6 वर्षों से प्रति वर्ष से सौहार्दपूर्ण एवं उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है। दूसरे दिन जाप के समापन पर समणी जी का प्रवचन 'परम श्रद्धेय आचार्य श्री हस्तीमल जी म. के जीवन चरित्र' पर हुआ। इसमें जयपुर निवासी श्री लाभचन्द्र जी कोठारी की उपस्थिति सराहनीय रही। इस पूरे कार्यक्रम का श्रेय श्रीमती श्वेता जी

कोठारी एवं रश्मि जी करनावट को जाता है। श्री अन्नू बाबू हीरावत, श्री सुनील जी डागा, श्री शरद जी सिंघवी, श्री संजय बाबू बैद के अथक प्रयास से यह जाप को बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। श्री अमित बाबू बिरानी ने जाप के प्रारम्भ एवं रात्रि में अपना अमूल्य समय दिया।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- साध्वी प्रमुखा, शासन-प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्म-दिवस आषाढ़ शुक्ला द्वितीया दिनाँक 21 जून, 2012 को 'सामायिक-स्वाध्याय भवन', पावटा में धर्मध्यान की विशेष आराधना हुई। प्रातःकाल प्रवचन-सभा में व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. ने अपनी गुरुणी साध्वीप्रमुखा जी के जीवन की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरुणी जी महाराज सदैव स्वाध्याय में रत रहती हैं। उनमें सरलता, सजगता, सहिष्णुता, निर्भीकता, संयम-निष्ठा आदि अनेक गुण प्रेरणाप्रद हैं। इस अवसर पर व्याख्यात्री महासती श्री शान्तिप्रभा जी, महासती श्री दर्शनलता जी, महासती श्री निरंजना जी, महासती श्री सुव्रतप्रभा जी, महासती श्री कान्ता जी ने भी श्रद्धापूर्वक विचाराभिव्यक्ति की। साध्वीप्रमुखा श्री की प्रवचन शैली की प्रभावकता एवं धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न करने की प्रवृत्ति सराहनीय है। उल्लेखनीय है कि आपके सान्निध्य में रहकर जिन साध्वियों ने दीक्षा अंगीकार की, वे आज अनेक साध्वी समुदाय की प्रमुख महासतियों के रूप में प्रतिष्ठित हैं। सभा में संघाध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना, श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार, श्री प्रकाश जी सालेचा, श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा ने भी साध्वी प्रमुखा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। साध्वीप्रमुखा जी की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं, यथा-दुर्लभ अंगचतुष्टय, पर्युषण पर्वाराधन, पथ की रुकावटें, सुजान ज्योति, अमृत की छांव, शिवपुरी की सीढ़ियाँ आदि। गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के सान्निध्य में साध्वी जी की दीक्षा अपनी बड़ी बहिन सायरकंवर जी के साथ संवत् 2003 में हुई थी। उस समय प्रायः विधवा बहिनों की दीक्षा हुआ करती थीं, किन्तु साध्वी मैना जी ने कुवांरी अवस्था में प्रबल वैराग्य भावना से पारिवारिकजनों के मनों को बदलते हुए दीक्षा अंगीकार की तथा अपनी ओजस्वी वाणी, वाक् चातुर्य एवं निर्भीकता के साथ धर्म की महती दलाली की।

इस अवसर पर प्रातःकाल जाप, लगभग 80 दयाव्रत, एकाशन, उपवास आदि की आराधना हुई। शक्तिनगर एवं पावटा के कई युवकों ने पाँच-पाँच सामायिकें कीं।

धनोप (भीलवाड़ा)- व्याख्यात्री श्री सोहनकंवर जी म.सा., सेवाभावी श्री विमलावती जी

म.सा. आदि ठाणा 7 किशनगढ़ से नसीराबाद, बांदनवाड़ा, विजयनगर होते हुए 24 जून को धनोप पधारे। मार्ग में नान्दला ग्राम में श्री दीपचन्द जी सुराणा ने, बुढाणिया में श्री चांदमल जी डोसी ने, विजयनगर में श्री प्रतापचन्द जी सांड ने, अरवड़ में श्री कन्हैयालाल जी धोबी ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत अंगीकार किए। कई श्रावक-श्राविकाओं ने एक वर्ष का शीलव्रत अंगीकार किया। महासती श्री विमलावती जी की प्रेरणा से बड़ली में शंकर जी शर्मा ने, देवलिया में श्री रामस्वरूप जी शर्मा ने, कोठिया में श्री केवल जी छीपा ने सजोड़े शीलव्रत ग्रहण किया।

जोधपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के सान्निध्य में परमश्रद्धेय परमाराध्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की सत्प्रेरणा से वर्ष 2011 के जोधपुर चातुर्मास में बालक-बालिकाओं में धार्मिक संस्कार-निर्माण हेतु 'रविवारीय संस्कार शिविर' का शुभारम्भ हुआ। चातुर्मास के पश्चात् भी नवम्बर 2011 से जोधपुर के 10 क्षेत्रों में शिविर विधिवत् गतिमान है। इन शिविरों में प्रति रविवार लगभग 850 बालक-बालिका धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों के साथ ज्ञानार्जन कर रहे हैं। इन केन्द्रों पर लगभग 80-90 अध्यापक एवं कार्यकर्ता अपनी निःशुल्क सेवाएँ दे रहे हैं। कुछ उदारमना श्रावकों ने भावी पीढ़ी के संस्कार-निर्माण कार्य में मुक्त हस्त से अर्थ सहयोग किया है, वह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है। *-राजेश भण्डारी, शिविर प्रभारी*

बेंगलुरु- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में श्रीरामपुरम् स्थानक में सप्त दिवसीय धार्मिक शिविर आयोजित हुआ, जिसमें 250 बालक-बालिकाओं , 150 श्रावक-श्राविकाओं एवं 25 नवयुवतियों ने भाग लिया। शिविर में "स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड" के पाठ्यक्रमानुसार जैन दर्शन, तत्त्वज्ञान, स्तुति-प्रार्थना, इतिहास तथा जीवन निर्माण संबंधी प्रशिक्षण दिया गया।

इन्दौर- दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप-इन्दौर द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रसेवा हेतु समर्पित देशभक्त का चयन कर उसे "शहीद लेफ्टिनेण्ट गौतम जैन स्मृति वीरता पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष योग्य प्रत्याशी चयन हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं। भेजन वाले का नाम, पता, फोन नं. के साथ देश भक्त का नाम, पिता-माता का नाम, स्थायी पता, वर्तमान पता, पद, कार्यक्षेत्र, बहादुरी की घटना का ब्यौरा, फोन नं., मो.नं., ईमेल व अन्य जानकारी भेजने का पता- श्री कमल अग्रवाल, 196, विंध्याचल नगर, एरोड्रम रोड़, इन्दौर(म.प्र.), मो. 09009004500, 09425908282

भरतपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोपालगढ़ संघ की पूर्ण सहमति से श्री रवीन्द्र कुमार जी जैन को अध्यक्ष मनोनीत कर श्री राजीव जी जैन को मंत्री और श्री वीरेश कुमार

जी जैन को कोषाध्यक्ष घोषित किया गया है।

इन्दौर- दिगम्बर जैन समाज सामाजिक संसद, इन्दौर द्वारा विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय कराने के उद्देश्य से digamberjainshaadi.com का प्रारम्भ किया गया है।

बधाई/चुनाव

मुम्बई- भारतीय परमाणु वैज्ञानिक एस.के. जैन को टोक्यो केन्द्र स्थित गवर्निंग बोर्ड ऑफ वर्ल्ड एसोशिएशन ऑफ न्यूक्लीयर ऑपरेटर्स (वानो) का अध्यक्ष चुना गया है। पुष्करवाणी ग्रुप ने बताया कि न्यूक्लियर पॉवर कोरपोरेशन ऑफ इंडिया के पूर्व अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक जैन यह ओहदा प्राप्त करने वाले पहले भारतीय हैं। वानो संयंत्रों और संचालकों का अंतरराष्ट्रीय परमाणु संगठन है जो सुरक्षा और विश्वसनीयता के क्षेत्र में कार्य करता है।

जोधपुर- श्रीमती प्रिया सिंघवी धर्मपत्नी श्री रोहित जी सिंघवी को जयनारायण व्यास

विश्वविद्यालय जोधपुर ने शोध कार्य पूर्ण करने पर पी-एच्.डी की उपाधि प्रदान की है। प्रिया ने डॉ. उषा जी कोठारी के निर्देशन में ''चाइल्ड डवलपमेन्ट एण्ड प्री स्कूल फर्नीचर डिजाइनिंग'' पर शोध किया। आप पूर्व में भी M.Sc. होमसाइंस (बड़ौदा) से गोल्ड मेडल प्राप्त कर चुकी हैं। धर्म के प्रति आपकी विशेष रुचि है। आप श्रीमान् नवरतन जी डागा (संयोजक-स्वाध्याय संघ, जोधपुर) की सुपुत्री हैं।

जोधपुर- सुश्री श्वेता मोदी सुपुत्री श्रीमती सरोज-प्रोफेसर (डॉ.) सुमनेश नाथ जी मोदी को

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर की ओर से पी-एच्.डी की उपाधि प्रदान की गई। श्वेता ने ''कारपोरेट गवर्नेंस प्रेक्टिसेज इन इण्डियन इण्डस्ट्रीज ए केस स्टडी'' विषय पर शोध कार्य पूर्ण किया। इससे पूर्व आपने बी.कॉम, एम.बी.ए. प्रथम श्रेणी से तथा पीजीडीसीएलएल में स्वर्णपदक प्राप्त किया था।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के श्रेष्ठ परिणाम

प्रज्ञा कूमट

सौरभ जैन

प्राची भण्डारी

निधी जैन

श्रेयांस करनावट

1. सुश्री प्रज्ञा कूमट सुपुत्री श्रीमती सुनीता एवं त्रिलोकचन्द जी कूमट ने सी.बी.एस.ई.

की बारहवीं कक्षा के वाणिज्य वर्ग ब्यावर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आप श्री हेमराज जी सुराणा, जयपुर की दौहित्री हैं।

2. सौरभ जैन सुपुत्र श्रीमती कौशल्या जैन एवं श्री नरेशचन्द जी जैन ने सी.बी.एस.ई.-2012 में 91.2% अंक प्राप्त किए, AIEEE में 2291 वीं रैंक एवं IIT-2012 में 5812 वीं रैंक प्राप्त की।
3. प्राची भण्डारी सुपुत्री श्रीमती ललिता एवं श्री महेश जी भण्डारी, सुपौत्री श्रीमती पारस देवी एवं श्रीमान् मुन्नालाल जी भण्डारी, जोधपुर। कक्षा 10 में A-1, CGPA-10
4. सुश्री निधि जैन सुपुत्री श्रीमती ललिता एवं श्री महेन्द्र जी जैन, सुपौत्री श्री इन्द्रमल जी रेड, जोधपुर तथा दौहित्री श्री मूलचन्द जी बाफना। कक्षा-12 वाणिज्य वर्ग, अंक 95.4%
5. श्री श्रेयांस करनावट पुत्र श्री राजकुमार जी करनावट, जयपुर सीबीएसई कक्षा 10वीं में A ग्रेड तथा सुबोध पब्लिक स्कूल में प्रथम स्थान।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- श्रमणसंघीया श्री मदनकंवर जी म.सा. का 12 मई, 2012 को रात्रि 1 बजे संथारा पूर्वक महाप्रयाण हो गया। इस अवसर पर समदड़ी, खेडपा, सिवाना, अजीत, उदयपुर आदि क्षेत्रों के श्रद्धालु उपस्थित थे। आपने 48 वर्ष तक शुद्ध संयम का पालन कर जीवन को सफल बनाया।

जोधपुर- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, समर्पित सुश्रावक श्री सोनराज जी चौपड़ा का 10

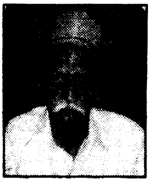

जून, 2012 को देहावसान हो गया। धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्रावक का जीवन प्रेरणादायी था। आप नियमित सामायिक आराधना करते थे। धर्म-ध्यान में आपकी गहरी रुचि थी। परम उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के आप सांसारिक बहनोई थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भी सदैव तत्पर रहते थे। रत्नसंघ के प्रति उनकी एवं चौपड़ा परिवार की समर्पित सेवाएँ रही हैं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी चौपड़ा परिवार सदैव अग्रणी रहा है।

लहसोड़ा- समर्पित सुश्राविका श्रीमती मनभरदेवी जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजमल जी जैन का 84 वर्ष की वय में 2 जून, 2012 को मुम्बई में देवलोकगमन हो गया। सामायिक आपके जीवन का अनिवार्य अंग था। विगत 35 वर्षों से आपने शीलव्रत (ब्रह्मचर्य व्रत) का पालन, चौविहार-

त्याग, 2 वर्षीतप, 2 अठाई की तपस्या, 3 पचोले, तेले-बेले, आयम्बिल, एकासन आदि तपस्या के साथ ही जमीकन्द का सम्पूर्ण त्याग कर रखा था। आपका तप-त्यागमय जीवन था तथा मिलनसारिता एवं सहकारिता आपके विशिष्ट गुण थे। आपकी रत्नसंघ के प्रति गहरी श्रद्धा थी। आपके सुपुत्र श्री राधेश्याम जी गोटेवाला एवं सुपुत्री श्री मोहिनीबाई जी संघ-सेवा एवं श्रुत सेवा में समर्पित हैं। आपके अन्य सुपुत्र श्री कमलचन्द जी लहसोड़ा तथा श्री रमेशचन्द जी जैन मुम्बई भी धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ है।

जयपुर- जैन विद्या के विद्वान् मनीषी सुश्रावक ठाकुर सा श्रीमान् गजसिंह जी राठौड़ का 23 मई, 2012 को स्वर्गवास हो गया। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के सान्निध्य में रहकर आपने साहित्य-रचना में विशिष्ट योगदान किया। 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास'' के चार भागों के आलेखन में आपने जो विद्वत्ता एवं श्रमशीलता का परिचय दिया है, वह पाठकों को अनुभूत होता है। सन्तों के शिक्षण में भी उनका सहकार रहा। राठौड़ साहब संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओं के ज्ञाता थे। आचार्य श्री हस्ती के वे कृपापात्र रहे।

सवाईमाधोपुर- श्रद्धानिष्ठ, संघ-समर्पित गुरुभक्त सुश्रावक श्री बजरंगलाल जी जैन

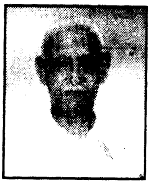

सर्राफ का परलोकगमन 86 वर्ष की उम्र में 5 जून, 2012 को हो गया। आप नियमित सामायिक करने के साथ भक्तामर स्तोत्र आदि का स्वाध्याय करते थे। आपका जीवन सादगी से परिपूर्ण था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल म.सा. के सवाईमाधोपुर में 2 चातुर्मास (1974 व 1988) आपके अध्यक्ष पद पर रहते हुए सम्पन्न हुए। अन्तिम समय में आपने जयपुर में श्रद्धेय श्री नन्दीषेण जी म.सा. द्वारा पच्चक्खाण ग्रहण किये। आप तीन पुत्र (महावीर जी, सुबाहु जी, हेमन्त जी) व तीन पुत्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

चेन्नई- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, सुश्रावक श्री रतनराज जी चौधरी (मूल निवासी-पीपाड़) का 12 मई, 2012 को देहावसान हो गया। आप सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए थे। नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे। त्याग-तप से युक्त आपका जीवन सबके लिए प्रेरणादायी है। आपने आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के पीपाड़शहर में चातुर्मास के दौरान धर्म-ध्यान का अपूर्व लाभ लिया। आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप चौधरी परिवार संघ-सेवा में सदैव अग्रणी रहता है।

खेतिया- धर्मनिष्ठ सुश्राविका संगीता धर्मपत्नी अशोक कुमार जी कोठारी का 40 वर्ष की अल्पायु में 22 मई, 2012 को परलोकगमन हो गया। आप सरल स्वभावी, मिलनसार एवं मृदुभाषी थीं। आप सदा हँसमुख रहती थीं। संत-सेवा में अग्रणी रहती थीं। आपके पति स्थानकवासी जैन नवयुवक मंडल के अध्यक्ष रहे हैं।

इन्दौर- धर्मशीला श्रीमती कुसुमलता जी जैन धर्मपत्नी श्री राजकुमारजी जैन पंजाबी का

54 वर्ष की आयु में मरण हो गया। आपका जीवन सरलता, विनम्रता और मधुरता के मानवीय गुणों से सम्पन्न था। आपके पति श्री स्थानकवासी जैन समाज के सक्रिय कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ समाजसेवी हैं। श्रीमती कुसुमलता जी जैन पंजाबी की स्मृति में परिवार की ओर से 54 हजार की धनराशि धार्मिक व पारमार्थिक संस्थाओं को प्रदान की गई।

टोंक- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गम्भीरमल जी बम्ब की 94 वर्ष वय में मृत्यु हो गई। आपका जीवन राष्ट्रसेवा और जीवदया की दृष्टि से आदर्श जीवन था। आप प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी थे। स्वतन्त्रता के दौरान आपने गिरफ्तारी दी। आप उप प्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' के दीक्षापूर्व पालक पिता थे।

जयपुर- धर्मनिष्ठ कर्त्तव्यपरायण सुश्रावक गुरुभक्त श्री दिनेश जी ललवाणी सुपुत्र (स्व.) श्री चुन्नीलाल जी ललवाणी का 50 वर्ष की उम्र में 5 जून, 2012 को अमेरिका में देहावसान हो गया। आप धर्मपरायण, हँसमुख, सेवाभावी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. व आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के अनन्य भक्त थे।

लासूर- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती कैदीबाई धर्मपत्नी स्व. श्रीमान् पानमल जी मूथा का 17 जून 2012 को हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आपकी माताश्री की गुरु हस्ती- गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति अगाध भक्ति थी। वे दृढ़धर्मी, सेवाभावी और सरलता की प्रतिमूर्ति श्राविका थीं। वे घर परिवार में, संघ-समाज में और अपने-परायों में सब जगह अपना वर्चस्व रखती थीं।

उज्जैन- सुश्राविका श्रीमती पुष्पलता जी भटेवरा धर्मपत्नी श्री कन्हैयालाल जी भटेवरा का 13 घंटे के संथारे के साथ 22 जून को समाधिमरण हो गया। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के मुखारविन्द से उन्होंने संथारा अंगीकार किया। वे धर्मपरायण थीं, सेवा में तत्पर रहती थीं तथा सामायिक-साधना उनके जीवन का अंग बन गयी थी। वे अपने

पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- श्री मुकेश कुमार जैन पुत्र स्व. श्री रूपचन्द जी जैन निवासी बगावदा

(सवाईमाधोपुर) का आकस्मिक निधन 25 जून 2012 को 30 वर्ष की आयु में जयपुर में हो गया। आप शांत स्वभावी, सादगी पसन्द एवं मितभाषी थे। आप वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री जम्बूकुमार जी जैन-जयपुर के लघु भ्राता थे। आप अपने पीछे पत्नी एवं एक पुत्र को छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. दिलीप धींग

10 जून, 2012 रविवार शाम को उदयपुर निवासी सेवानिवृत्त कर्नल डॉ. दलपतसिंह जी बया से दूरभाष पर बातचीत हो रही थी। इन दिनों वे अस्वस्थ हैं तथा अधिकांश समय स्वाध्याय में बिताते हैं। उन्होंने जब जिनवाणी की मुक्त कण्ठ से तारीफ की तो मैं प्रमुदित हो गया। जिनवाणी के संवत्सरी अंक को उन्होंने संवत्सरी विषयक सवाल को हल करने की दिशा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रयास बताया। इस अंक की विश्लेषणात्मक एवं शोधपरक सामग्री के लिए आगम-मर्मज्ञ श्री प्रमोदमुनि जी के प्रति उनका मन विशेष श्रद्धा से प्रणत हो गया।

यह प्रसन्नता की बात है कि जिनवाणी को सभी वर्गों और श्रेणियों के व्यक्ति पसन्द करते हैं तथा सहेजते हैं। प्रबुद्धजन जिनवाणी को 'रोल-मॉडल' (अनुकरणीय पत्रिका) के रूप में प्रस्तुत करते हैं। जिनवाणी की प्रतिष्ठा निरन्तर अभिवर्द्धित होती रहे। जिनवाणी के लिए समर्पित साधकों और मनीषियों को नमन!

-53, डोरे नगर, उदयपुर-313002 (राज.)

सूचना

जिनवाणी के कुछ पाठकों की जिनवाणी पत्रिका कार्यालय को लौटकर आ रही है। जिन्हें जिनवाणी का कोई अंक न मिले वे जयपुर स्थित जिनवाणी कार्यालय को सूचित करें तथा अपने सम्बद्ध पोस्ट ऑफिस में पता करें कि उनकी जिनवाणी घर तक क्यों नहीं पहुँच रही है?

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर(राज.), फोन नं. 0141-2575997

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

13677 श्री ईशानजी भंडारी, 11/471, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)
13678 Shri Mukesh Kumarji Kanuga, Surat (Gujarat)
13679 श्री गौतम कुमारजी जैन, जमनाबा स्कूल की गली, रिंग रोड़, सूरत (गुजरात)
13680 श्री नरपतराजजी लोढ़ा, चौथी बी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)
13681 श्री अनुरागजी गांग, टी नगर, पी. डब्ल्यू.डी. स्टोर के पास, बाड़मेर (राजस्थान)
13682 श्री संजीवजी पटवा, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-342008 (राजस्थान)
13683 सुश्री आशंकाजी मेहता, जैन कॉलोनी राईका बाग, जोधपुर (राजस्थान)
13684 श्री हस्तीमलजी झेलावत, सुभाषचौक, बच्चाहनुमान मंदिर के पीछे,इन्दौर (म.प्र.)
13685 Smt. Kumkumji Baid, Bhopal (MP)
13686 श्री रितेशजी जैन, बरकत नगर-विस्तार, किसान मार्ग, टोंक रोड़, जयपुर (राज)
13687 Smt. Meeraji Jain, Cinema Gali, Sawaimadhopur (Raj.)
13688 श्री लालचंदजी सुराणा, शिवजी नगर, मदनगंज, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13689 श्री प्रकाशचंदजी जैन, पत्रकार कॉलोनी, मुहाना रोड़, मानसरोवर, जयपुर (राज)
13690 श्री सुभाषजी ललवाणी, राज आंगन, प्रतापनगर, जयपुर (राजस्थान)
13691 श्रीमती मीतूजी हीरावत, परतानियों का रास्ता, जौहरीबाजार, जयपुर (राजस्थान)
13692 श्री विनोद कुमारजी कोठारी, संतोष विला, मदनगंज, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13693 श्री मनीषजी जैन, जय नगर, मुहानामंडी रोड़, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान)
13694 श्री आशीष कुमारजी नवलखा, जवाहरनगर, जयपुर (राजस्थान)
13696 श्री मूलचंदजी चोरड़िया, बी-302, गोखले पार्क, जनता कॉलोनी, जयपुर (राज.)
13695 श्री निर्मल कुमारजी जामड़, 2/175, जवाहरनगर, जयपुर (राजस्थान)
13697 श्री बनवारीजी गर्ग, मंगोड़ी वालों की बगीची, ब्रह्मपुरी, जयपुर (राजस्थान)
13698 श्री धनपतराजजी मुणोत, पत्रकार कॉलोनी, न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राज.)
13699 Smt. Swathiji Chopra, Santhepete, Mysore (Karnataka)
13700 श्री रामबाबूजी जैन, सिरसी रोड़, पाँच्यावाला, जिला-जयपुर (राजस्थान)
13701 श्री सुरेशचंदजी अग्रवाल, नागरिक नगर, टोंक रोड़, सांगानेर, जयपुर (राजस्थान)
13702 श्री पप्पारामजी सोढ़ा, पोस्ट-अरटियाकलाँ, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
13703 श्री पवनजी विश्नोई, स्कूल नं. 2 के पास, पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राज.)
13704 श्री सुभाषचंदजी दवे, मूथों का बास, पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राजस्थान)
13705 श्री रमणलालजी बोहरा, द्वारा : माणक ज्वैलर्स, घास बाजार, रतलाम (मध्यप्रदेश)
13706 Shri Tanmayji Dugar, Maruti Sethia Ka Mohalaa, Bikaner (Raj.)
13707 Shri Narendra Kumarji Surana, Bikaner (Rajasthan)
13708 श्रीमती मीनलजी भण्डारी, 35, केशव नगर, सिविल लाइन्स, जयपुर (राजस्थान)
13709 श्री शैलेशजी मेहता, श्यामनगर, देवनगर के सामने पाललिंक रोड़, जोधपुर (राज.)
13710 श्री प्रकाशचंदजी चतुर मेहता, वार्ड नं. 22, बालाघाट (मध्यप्रदेश)
13711 श्री श्रीपालजी भंडारी, 18/184, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11101/- श्री कपूरचंदजी जैन, वर्ली-मुम्बई, चि. कमलेशजी सुपुत्र श्री कपूरचंदजी जैन (बिलोपा वाले) एवं सौ.कां. नीतिकाजी सुपुत्री श्री धर्मचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले), जोधपुर के शुभविवाहोत्सव के पश्चात् पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन मुखारविंद से गुरु आम्नाय लेने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

11000/- सौ. निर्मला प्रकाशचन्द नरेशकुमार हुण्डीवाल, भोपालगढ़ हाल मुकाम जलगांव, अपने सुपुत्र नितिन सुपौत्र स्व. श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का शुभविवाह तेजल सुपुत्री श्री अनिल कुमार जी पारख, तिवरी हाल मुकाम भोकरदन (झालना) के संग 5 जून, 2012 को जलगांव में सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

11000/- श्रीमती उगमाबाई जी-श्री मोहनलाल जी बोहरा, तिरुवन्नमल्लै, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के द्वारा अनन्त कृपा कर महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास तिरुवन्नामल्लै संघ को प्रदान करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

11000/- श्रीमती मदनबाई जी-श्री पारसमल जी बोहरा, तिरुवन्नमल्लै, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के द्वारा अनन्त कृपा कर महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास तिरुवन्नामल्लै संघ को प्रदान करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

11000/- श्रीमती सरोजदेवी जी-श्री सुशील कुमार जी बोहरा, तिरुवन्नमल्लै, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के द्वारा अनन्त कृपा कर महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास तिरुवन्नामल्लै संघ को प्रदान करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

11000/- श्रीमती चन्द्रादेवी जी-श्री आनन्द कुमार जी बोहरा, तिरुवन्नमल्लै, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के द्वारा अनन्त कृपा कर महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास तिरुवन्नामल्लै संघ को प्रदान करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2101/- श्री रामदयालजी, त्रिलोकचंदजी, भागचंदजी जैन (फाजिलाबाद वाले), गंगापुरसिटी, श्रीमती सरस्वतीदेवीजी जैन धर्मपत्नी श्री रामदयालजी जैन (तहसीलदार) का दिनांक 22 मई 2012 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

2000/- श्री पुखराज जी बाफना, चेन्नई, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

2100/- श्री प्रकाशचन्द जी, श्री गणपतराज जी, श्री लखपतराज जी, श्री सुरेशचन्द जी चौपड़ा, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री सोनराज जी चौपड़ा के 10 जून, 2012 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।

1111/- श्री राधेश्यामजी, कमलचंदजी एवं रमेशचंदजी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्य मातुश्री श्रीमती मनभरदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजमलजी जैन का दिनांक 2 जून, 2012 को मुम्बई में स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1111/- श्री महावीर प्रसाद जी, सुबाहूकुमार जी, हेमन्तकुमार जी जैन (सर्राफ), सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताश्री बजरंगलाल जी जैन की पुण्य स्मृति दिनाँक 5 जून, 2012 के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री कपूरचन्द जी जैन बिलोपा वाले हाल मुकाम मुम्बई, अपने पुत्र चि. कमलेश का शुभ विवाह सौ.कां. नीतिका सुपुत्री श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर के साथ दिनाँक 12 जून, 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री धनरूपचंदजी, अमित कुमारजी मेहता, बैंगलोर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के लालभवन, चौड़ारास्ता, जयपुर में दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्रकुमारजी चोरड़िया, बैंगलोर, पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के स्वास्थ्य समाधि के साथ विचरण-विहार कर जयपुर की धरा पर पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सूरजजी-श्री हेमराजजी सुराणा, जयपुर, दोहित्री कु. प्रज्ञाजी सुपुत्री श्रीमती सुनीताजी-त्रिलोकचंदजी कुमट (ब्यावर) के सी.बी.एस.ई. की कक्षा 12 वाणिज्यवर्ग में सम्पूर्ण ब्यावर में प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती भावनाजी धर्मसहायिका श्री नवीनजी जैन, जयपुर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, बजाज नगर, जयपुर में पधारने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजकुमार जी सिंघवी, जोधपुर, अपनी पुत्रवधू श्रीमती डॉ. प्रिया सिंघवी धर्मपत्नी श्री रोहित जी सिंघवी पौत्रवधू श्रीमती अमरकंवर धर्मपत्नी स्व. श्री महावीर चन्द जी सिंघवी के पी-एच्.डी की उपाधि प्राप्त करने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री जम्बूकुमार जी, सिद्धार्थ जी, मोहित जी ओस्तवाल, जोधपुर, अपने पिताजी श्री बादलचन्द जी ओस्तवाल की 13 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती उमगकंवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री कृष्णमल जी लोढ़ा, जोधपुर, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

1100/- श्री प्रकाशचन्द, शैलेषकुमार जी चतुर मोहता, बालाघाट, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

1100/- श्रीमती चांददेवी धर्मपत्नी श्री सुरेश जी भण्डारी, जोधपुर, अपने पुत्र श्री पीयूष भण्डारी के चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, पटना एन.एल.यू. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने की खुशी में।

1100/- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, पावटा शाखा, जोधपुर, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

1100/- श्री दिलीप जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री महिपालचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

1100/- श्री कमल जी बाफना सुपुत्र श्री गौतमचन्द जी बाफना, गंगावती कर्नाटक, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

1100/- श्रीमती लाडकंवर जी कोठारी धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी कोठारी, चेन्नई, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

1100/- श्रीमती सुरज जी सुराणा धर्मपत्नी श्री हेमराज जी सुराणा, जयपुर, अपनी दोहिती प्रज्ञा कुम्भट सुपुत्री सुनीता एवं त्रिलोकचन्द जी कुम्भट, ब्यावर के सी.बी.एस.ई. कक्षा 12 (वाणिज्य वर्ग) में सम्पूर्ण ब्यावर में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर भेंट।

1001/- श्री माधोमल जी लोढ़ा, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी माणकमल जी लोढ़ा की पावन स्मृति में भेंट।

1000/- श्री प्रकाशचन्द जी भण्डारी, गुडगाँव, सहयोगार्थ।

555/- श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार, शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. निकिता का शुभ विवाह चि. कमलेश जी जैन सुपुत्र श्री कपूरचन्द जी जैन विलोपा वाले हाल मुकाम मुम्बई के साथ दिनाँक 12 जून, 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री योगेन्द्र कुमारजी जैन, मानसरोवर-जयपुर, सुपौत्र जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती कौशल्याजी-श्री नरेशचंदजी जैन, जयपुर, सुपुत्र श्री सौरभजी जैन का सी.बी.एस.ई. 2012 में 91.2% अंक प्राप्त करने तथा ए.आई.ईईई में 2291 रेंक व आईआई.टी. 2012 में 5812वीं रेंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री अमोलकचंदजी, महेशकुमारजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, चि. खेमचंदजी (राकेश) सुपुत्र श्री अमोलकचंदजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. रीनाजी सुपुत्री श्री कन्हैयालालजी जैन, इन्दौर के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

501/- श्री राजेन्द्रप्रसादजी, महेन्द्र कुमारजी जैन (कुण्डेरा वाले), बजरिया, सवाईमाधोपुर, चि. अंकुर (खेमराज) सुपुत्र श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, सौ.कां. चांदनीजी, सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन, इन्दौर के शुभविवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्रीमती मोत्याबाईजी, महावीरप्रसादजी, ऋषभकुमारजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चि. मनोजजी सुपुत्र श्री महावीरप्रसादजी, सौ.कां. समताजी सुपुत्री श्री कमलचंदजी, बजरिया-सवाईमाधोपुर के शुभविवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

501/- श्री रामप्रसाद जी, सुरेन्द्र कुमार जी जैन, जटवाड़ा खुर्द (मानटाउन), सवाईमाधोपुर, चि. जितेन्द्र जी जैन सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी जैन संग सौ. कां. नेहा सुपुत्री श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन, इन्दौर, के विवाह के उपलक्ष्य में सादर भेंट।

501/- श्री रूपनारायण जी, सुरेन्द्रकुमार जी जैन, बजरिया, सवाईमाधोपुर, चि. तरुण सुपुत्र श्री रूपनारायण जी जैन संग सौ. कां. चिंकी (स्वाति) सुपुत्री श्री बाबूलाल जी जैन कुश्तला वाले, बजरिया के विवाह के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री सुरेश कुमारजी सुपुत्र श्री जौहरीमल जी चौधरी, सिरकली, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

500/- श्री रमणीकलाल जी रूणवाल, बीजापुर, पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के महावीर नगर जयपुर में सपरिवार दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री गम्भीरमलजी, उम्मेदमलजी, रमेशचंदजी, सुजानमलजी जैन (खातौली वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर एवं इन्दौर, मातुश्री श्रीमती नाथीबाईजी का देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री गणेशमलजी चम्पालालजी रूणवाल, चेन्नई का 69 वर्ष की आयु में दिनांक 26 मार्च 2012 को निधन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में परिवारजन की ओर से भेंट।

500/- श्री सत्येन्द्रजी कुम्भट, पाली, एडवोकेट श्री मोहितजी कुम्भट (एम.बी.ए.) सुपौत्र स्व. श्री आनन्दमलजी-बदनकँवरजी एवं सुपुत्र श्री सत्येन्द्रजी-नलिनीजी कुम्भट द्वारा कोटक महिन्द्रा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर में "बेस्ट परफोर्मेन्स एवार्ड" प्राप्त कर पूरे भारत में बैंक की शाखाओं में द्वितीय स्थान प्राप्त कर सहायक प्रबन्धक का प्रमोशन पाने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री रामेश्वर प्रसादजी, राहुल कुमारजी जैन, हिण्डौनसिटी-करौली, श्री शैलेन्द्र कुमारजी के शुभविवाहोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्रीमती कान्ता जी धर्मपत्नी श्री धर्मचन्द जी कांकरिया भोपालगढ़ निवासी, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल हेतु साभार प्राप्त

11111/- श्रीमती लाड श्री बहन श्री लाभचन्द्रजी नाहर, सूरत सप्रेम भेंट।

मंडल के सत्साहित्य प्रकाशन हेतु साभार प्राप्त

67000/- श्री बसंतीलालजी रंगलालजी डांगी, जामनेर, पूज्य भाई साहब श्री पीरूलालजी डांगी, रायपुर, बोराना, (मेवाड़ वाले) की पुण्य स्मृति में पुस्तक "हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4" एवं "शास्त्र स्वाध्याय माला" के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- सौ. निर्मला प्रकाशचन्द नरेशकुमार हुण्डीवाल, भोपालगढ़ हाल मुकाम जलगांव, अपने सुपुत्र नितिन सुपौत्र स्व. श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का शुभविवाह तेजल सुपुत्री श्री अनिल कुमार जी पारख, तिवरी हाल मुकाम भोकरदन (झालना) के संग 5 जून, 2012 को जलगांव में सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री कपूरचन्द जी जैन विलोपा वाले हाल मुकाम मुम्बई, अपने पुत्र चि. कमलेश का शुभ विवाह सौ.कां. नीतिका सुपुत्री श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर के साथ दिनाँक 12 जून, 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्रीमती उमराव देवी जी धर्मपत्नी श्री पुखराज जी बाफना, चेन्नई, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

555/- श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार, शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. नीतिका का शुभ विवाह चि. कमलेश जी जैन सुपुत्र श्री कपूरचन्द जी जैन विलोपा वाले हाल मुकाम मुम्बई के साथ दिनाँक 12 जून, 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री रामलक्ष्मण जी कुम्भट-जोधपुर, सुश्राविका श्रीमती उगमकंवर जी कुम्भट धर्मपत्नी श्री मगराज जी कुंभट की द्वितीय पुण्यतिथि 4 जून, 2012 को उपलक्ष्य में कुम्भट परिवार की ओर से भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

5000/- सौ. निर्मला प्रकाशचन्द नरेशकुमार हुण्डीवाल, भोपालगढ़ हाल मुकाम जलगांव, अपने सुपुत्र नितिन सुपौत्र स्व. श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल का शुभविवाह तेजल सुपुत्री श्री अनिल कुमार जी पारख, तिवरी हाल मुकाम भोकरदन (झालना) के संग 5 जून, 2012 को जलगांव में सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1111/- श्री राधेश्यामजी, कमलचंदजी एवं रमेशचंदजी जैन, सवाईमाधोपुर, पूज्य मातुश्री श्रीमती मनभरदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री सूरजमलजी जैन का दिनांक 2 जून, 2012 को मुम्बई में स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1101/- श्री कपूरचन्द जी जैन विलोपा वाले हाल मुकाम मुम्बई, अपने पुत्र चि. कमलेश का शुभ विवाह सौ.कां. नीतिका सुपुत्री श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर के साथ दिनाँक 12 जून, 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्री पुखराज जी बाफना, चेन्नई, साध्वी प्रमुखा, शासनप्रभाविका, परमविदुषी, महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के 79 वें जन्मदिवस की खुशी में।

1000/- श्री मानेन्द्रकुमार जिनेन्द्रकुमार जी ओस्तवाल, जोधपुर, सहयोगार्थ।

555/- श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार, शिक्षण बोर्ड, जोधपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. निकिता का शुभ विवाह चि. कमलेश जी जैन सुपुत्र श्री कपूरचन्द जी जैन विलोपा वाले हाल मुकाम मुम्बई के साथ दिनाँक 12 जून, 2012 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री राजेन्द्रप्रसादजी, महेन्द्र कुमारजी जैन (कुण्डेरा वाले), बजरिया, सवाईमाधोपुर, चि. अंकुर (खेमराज) सुपुत्र श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन, सौ.कां. चांदनीजी, सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन, इन्दौर के शुभविवाहोत्सव के उपलक्ष्य में बजरिया शाखा को सप्रेम भेंट।

501/- श्री रूपनारायण जी, सुरेन्द्रकुमार जी जैन, 'अरिहंत ट्रेडर्स' बजरिया, सवाईमाधोपुर, चि. तरूण सुपुत्र श्री रूपनारायण जी जैन संग सौ. कां. चिंकी (स्वाति) सुपुत्री श्री बाबूलाल जी जैन कुशतला वाले, बजरिया के विवाह के उपलक्ष्य में बजरिया शाखा को भेंट।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

120000/- श्री गौतमराज जी सुराणा, चेन्नई।

120000/- श्री प्रेमकुमार जी कवाड एवं परिवार, पुनमल्लई, चेन्नई।

120000/- श्री हरीश जी कवाड एवं परिवार, पुनमल्लई, चेन्नई।

96000/- श्री अशोक जी कवाड़, चेन्नई।

60000/- मैसर्स पृथ्वी सोफ्टेक लिमिटेड, चेन्नई।

24000/- श्री उमरावमल जी श्रीपाल जी सुराणा, चेन्नई।

24000/- श्री सोहनलाल जी महावीरचन्द जी बोथरा भोपालगढ़ वाले, जलगांव।

24000/- श्री इन्दरचन्द जी कोठारी, कोयम्बटूर।

12000/- श्री लाभचन्द जी, राजीव जी, संदीप जी नाहर, सूरत।

12000/- श्री पारसमल जी सुशीला जी बोहरा चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर।

12000/- श्री एम.एम. जैन, दिल्ली।

12000/- श्री नरेश कुमार डूँगरचन्द जी भूरट 'सी.ए.' हॉल मुकाम दुबई, जलगांव।

12000/- श्री पी.बी. भण्डारी, जयपुर, श्री अजय भण्डारी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

12000/- हस्तीमल बसन्तीदेवी सुराना चेरिटेबल ट्रस्ट, नागौर-कोलकाता-बैंगलोर, श्रीमती बसन्तीदेवी सुराणा के चौथे वर्षी तप का पारणा नागौर में उपाध्यायश्री के सान्निध्य में पूर्ण होने की खुशी में भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तद्नुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़,* 33, *Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

श्रावण कृष्णा 8	बुधवार	11.07.2012	अष्टमी
श्रावण कृष्णा 14	बुधवार	18.07.2012	चतुर्दशी, पक्खी
श्रावण कृष्णा 30	गुरुवार	19.07.2012	आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 86 वीं पुण्य-तिथि
श्रावण शुक्ला 8	गुरुवार	26.07.2012	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14	बुधवार	01.08.2012	चतुर्दशी, पक्खी
प्रथम भाद्रपद कृष्णा8	शुक्रवार	10.08.2012	अष्टमी
प्रथम भाद्रपद कृष्णा12	मंगलवार	14.08.2012	पर्युषण पर्व प्रारम्भ
प्रथम भाद्रपद कृष्णा 14	गुरुवार	16.08.2012	चतुर्दशी, पक्खी
प्रथम भाद्रपद शुक्ला 4	मंगलवार	21.08.2012	संवत्सरी

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निवेदन को स्वीकार कर संघ द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के 50 वें दीक्षा-दिवस के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना का विस्तार किया गया है।

इस योजना के माध्यम से गत 6 वर्षों से मेधावी छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। इस वर्ष के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं । छात्र चयन समिति के पास से आवेदन-पत्र मंगवा सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

2 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

3 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

4 आंमत्रित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा ।

5 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत Scholarship Requisition Form के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	**Up to Class 10th**	**11th & 12th**	**Graduation & Post Graduation**	**Professional Etc.**
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6 चयन समिति के अनुसार Scheme 1st में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को Scheme 2nd में मान्य किया जायेगा।

7 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-B.Budhmal Bohra,No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-79 Ph & Fax No.- 044-42728476 ,Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथिः- आवेदन पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त है । आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है । आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी एवं वेबसाइट www.jainyuvaratna.org पर आवेदन-पत्र Download कर सकते हैं।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 66 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 14 से 21 अगस्त 2012** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **15 जुलाई 2012** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम........................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं..
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?....................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.......................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स- 2636763, मो.-98280-32215 (संयोजक), 94610-13878 (सचिव), 94142-67824 (का. प्रभारी) ,ईमेल-**swadhyaysanghjodhpur@gmail.com**

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, **Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079** के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

जिनवाणी पत्रिका की सदस्यता ग्रहण करने हेतु प्रारूप

(इच्छुक पाठक जो जिनवाणी की सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं निम्नांकित प्रारूप में अपनी सम्पूर्ण जानकारी भरकर नीचे लिखे पते पर प्रेषित करें।)

मैं.........................पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री.......................................

पता...

....

फोन नं. :.................................मो. :...

ई-मेल...

जिनवाणी मासिक पत्रिका की आजीवन सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ। इस हेतु मैं 500/-रुपये (अर्धमूल्य योजना के अन्तर्गत 250 रुपये) का चैक/ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। कृपया मुझे पत्रिका नियमित प्रेषित करावें।

स्तम्भ सदस्यता-21,000/- आजीवन विदेश में-12,500/-

संरक्षक सदस्यता- 11,000/- त्रैवार्षिक सदस्यता-120/-

हस्ताक्षर

मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य की सदस्यता हेतु प्रारूप

(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य की आजीवन सदस्यता के इच्छुक पाठक निम्नांकित प्रारूप में अपनी सम्पूर्ण जानकारी भरकर नीचे लिखे पते पर प्रेषित करें।)

मैं.........................पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री.......................................

पता...

....

फोन नं. :.................................मो. :...

ई-मेल...

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित साहित्य की आजीवन सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ। इस हेतु मैं 4000/- नकद/चैक/ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। कृपया मुझे साहित्य नियमित प्रेषित करावें।

हस्ताक्षर

प्रारूप भेजने का पताः-

विरदराज सुराणा,

मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182-183 के ऊपर,

बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.), फोन नं. 0141-2575997

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

- आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा 09828582391

नरेश बोथरा 09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तृप्ति ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE BARS

DRI Plant

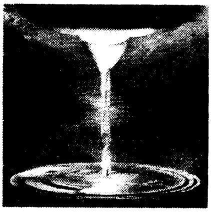
Electric Arc Furnace

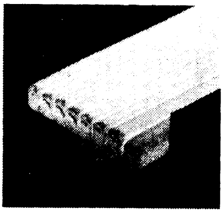
Billets

Rolling Mill

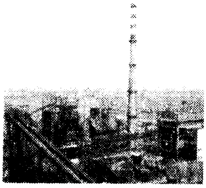
Captive Power Plant

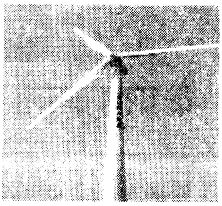
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का ।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

समस्त गुरु भाईयों को सादर जय जिनेन्द्र।

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत 1008 श्री हस्तीमल जी म. सा. एवं आचार्य हस्ती के पट्टधर सरल, निरपेक्ष, दीर्घदृष्टा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं शान्त–दान्त–गम्भीर, परम तेजस्वी उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. एवं संत–सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ, गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत छः वर्षों से युवारत्न छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर रुप से चल रही हैं।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के निवेदन को स्वीकार कर संघ द्वारा आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. के 50वें दीक्षा वर्ष के शुभ अवसर पर एक वर्ष के लिए आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना का विस्तार कर दिया गया हैं।

हमारा यह विश्वास है कि यह योजना न केवल छात्र–छात्राओं के शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से भी नींव का पत्थर साबित होगी। छात्रवृत्ति योजना के तहत् संचालित शिविरों के माध्यम से अनेक छात्र–छात्राएँ संघ के कर्मनिष्ठ स्वाध्यायी एवं ऊर्जावान कार्यकर्त्ता के रूप में उभरेगें।

आप सभी गुरुभाइयों से सनम्र निवेदन है कि इस योजना के उद्धेश्यों को सफल बनाने हेतु हम अपने गुरुभाइयों के व्यवहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु इस योजना के आवदेन पत्र भरवाकर अपना कर्त्तव्य निभाएगें एवं आप स्वयं एवं संघ समर्पित गुरुभाइयों को इस योजना में अर्थ सहयोग करावें एवं छात्र–छात्राओं का भविष्य उज्जवल बनाने में सहायक बनें।

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के प्रत्येक कार्यक्रम व आयोजन आपके स्नेह व निरन्तर सहयोग से ही गतिमान है, तथा इस योजना की सफलता में भी आपके गतिमान निरन्तर सहयोग की अपेक्षा है।

अनन्य गुरुभक्त जो भी इस योजना में अर्थ सहयोग करना चाहते है, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

Scholarship Fund Bank A/c Details
A/c Name - Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. - 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai (TN)
IFSC Code - UTIB0000168

सहयोग राशि भेजने एवं योजना संबंधित अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

1. **Ashok Kavad**, Chennai (9381041097)
2. **Sumtichand Mehta**, Pipar (9414462729)
3. **Mahendra Surana**, Jodhpur (9309087760)
4. **Budhmal Bohra**, Chennai (9444235065)
5. **Rajkumar Golecha**, Pali (9829020742)
6. **Manoj Kankaria**, Jodhpur (9414563597)
7. **Praveen Karnavat**, Mumbai (9821055932)
8. **Kushalchand Jain**, Sawai Madhopur (9460441570)
9. **Jitendra Daga**, Jaipur (9829011589)
10. **Mahendra Bafna**, Jalgaon (9422773411)
11. **Harish Kavad**, Chennai (9500114455)
12. **Manish Jain**, Chennai (9543068382)

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

B.BUDHMAL BOHRA
No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)
Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
वर्ष : 69 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
10 जुलाई, 2012 ★ श्रावण, 2069

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन